मासिकपत्रिका. } श्रीहरिः { (अगस्त) भाद्रपद शुक्ला २
पञ्चमखण्ड. } { पञ्चमसंख्या.

कला ।

श्रीहरिश्चन्द्रकला

अथवा

गोलोकवासी भारतभूषण भारतेन्दु श्रीहरिश्चन्द्र का जीवन सर्वस्व ।

जगत उजागर औ नागर त्यों नागरी को गयो कविराज सुनि कठिन हियो करो ।
भारत को प्रेमी अरु नेमी हू विलोकि ताहि ताके जस पुंजन को गानहु कियो करो ॥
ताकी कवितान को वितान एक मांहि गांथि कीनो है प्रकास यापै नजर दियो करो ।
चहकि चहुंदिस तें रसिक चकोरगन हरिचंदकला के पियूष कों पियो करो ॥ १ ॥

बुध को हिय बारिधि सो उमगै हुलसै अति प्रीतिहु की कमला ।
अति कूरन की कलुषी कविताहु चलै मति ज्यौं कुलटा अबला ॥
चुप ठानो सबै तिमि चोर चलांकहु नाहिं करें किहुं को जो भला ।
रस साने अमन्द अनन्द करो या नई उनई हरिचन्द कला ॥ २ ॥

जिसको हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिये श्री महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह क्षत्रिय-पत्रिका सम्पादक ने संग्रह किया ।

"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर.
बाबू साहब प्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया ।
श्रीहरिश्चन्द्र संवत् ६ । } १९४६ । { सन् १८८९ ईस्वी ।
मूल्य अग्रिम वार्षिक ६)] [डाक महसूल १२ आने ।

अथरागसंग्रह।

जलविहार—सारंग।

आजु हरि बिहरत जमुनातीर ॥ ध्रु० ॥ श्याभा संग रंगभरि सोहत पहिने झीने चीर ॥ १ ॥ प्रथम समागम सकुचत प्यारी जब परसत बलबीर ॥ २ ॥ उघरत अंग भीनि जल बसनन लाजि भजत तब तीर ॥ ३ ॥ धीर समीर सोहायो लागत तैसोइ धीर समीर ॥४॥ हरीचन्द संगम गुनगावत छबिलखि धरत न धीर ॥ ५ ॥ १ ॥

ठुमरी।

अठिलात सँवरिया मद्ते भगे ॥ध्रु०॥ कटि काछनि शिरमुकुट बिराजत कांधे पर सोहै पटुका लहरिया ॥१॥ पहुंची बाजू बनमाल अरु अँगुरिन अँगुरिन सोहैं मुदरिया ॥ २ ॥ हरीचन्द मेरे मन बसो सोइ हरिराधा सोहै जाकी नागरिया ॥ ३ ॥ २॥

गोवर्द्धन पूजा—बिलावल।

आजुबन उमगे फिरत अहीर ॥ हेरी देन बदत नहिं काहू देखियत जित तितभीर ॥ १ ॥ इक गावत इक ताल बजावत एक बनावत चीर ॥ इक नाचत इक गाइ खिलावत एक उड़ावत

श्रीनृसिंहचतुर्दशी की बधाई—सारंग।

आजु अपमान अतिही निरखि भक्त को वैकुंठ बन सिंह बहुत कोथौ॥ पटकिकर भूमिपै झटकि सिर केश रद चाभि ओठन तेज गगन लोथौ॥१॥ खंभ को फारि चिक्कारि केहरिनाद गर्भिनी गर्भ गरजन गिरायो॥ सटा फटकारिकै नक्षत्रगण नभहि फेंकि इतसी उतहि क्रोध छायो। २। कोटिमन बिज्जु इक साथही गिरि परीं भयो अतिघोर भुव सोरभारी॥ सिंधुजल उच्छल्यौ गिरे पर्वत शिखर वृक्ष जड़ सो सबै दिये उजारी॥३॥ देव दानव मनुज गिरे भयभागी बम्भ्र फटिगये कान सुधि तनक नाहीं॥ आजु असमय प्रलयदेखि शिव चौंकि कै शूल धरि भ्रमत इत उत लखाहीं॥४॥ सृष्टि को क्रम भंग जानि बिधिबावरो मूड़पै हाथ धरि बहुत रोयो॥ दिशा दहिवे लगी भयो उल्कापात रुदितमूरति तेज अगिनखोयो॥५॥ त्रस्तमधुकर पिवत नाहिं मधु वृक्ष को गऊनिज वत्सगण नाहिं चाटैं॥ हबिअग्नि नहिं हरत डरत तहँ पौन नहिं गौनकरि सकत नभधूर पाटैं॥६॥ चकित माया नटी भूलि निज नटकला जगत गति जीव जड़ रोकि लीनी॥ रमा शृंगार निज करतही रहि-

श्रीनृसिंहचतुर्दशी को बधाई—सारंग।

आजु अपमान अतिही निरखि भक्त को बैकुंठ बन सिंह बहुत कोथौ॥ पटकिकर भूमिपै झटकि सिर केश रद चाभि ओठन तेज गगन लोथौ॥१॥ खंभ को फारि चिक्कारि केहरिनाद गर्भिनी गर्भ गरजन गिरायो॥ सटा फटकारिकै नक्षत्रगण नभहि फेंकि इतसी उतहि क्रोध छायो।२। कोटिमन बिज्जु इक साथही गिरि परीं भयो अतिघोर भुव सोरभारी॥ सिंधुजल उच्छल्यौ गिरे पर्वत शिखर वृक्ष जड़ सो सबै दिये उजारी॥३॥ देव दानव मनुज गिरे भयभागी बज्र फटिगये कान सुधि तनक नाहीं॥ आजु असमय प्रलयदेखि शिव चौंकि कै शूल धरि भ्रमत इत उत लखाहीं॥४॥ सृष्टि को क्रम भंग जानि बिधिबावरो मूड़पै हाथ धरि बहुत रोयो॥ दिशा दहिवे लगी भयो उल्कापात रुदितमूरति तेज अगिनखोयो॥५॥ त्रस्तमधुकर पिवत नाहिं मधु वृक्ष को गऊनिज वत्सगण नाहिं चाटैं॥ हबिअग्नि नहिं हरत डरत तहँ पौन नहिं गौनकरि सकत नभधूर पाटैं॥६॥ चकित माया नटी भूलि निज नटकला जगत गति जीव जड़ रोकि लीनी॥ रमा शृंगार निज करतही रहि-

अति व्याकुल रोवत सुनीदेखि सिजरिया ॥३॥७॥

बिहार।

आजु रस कुंज महल में बतियन रैन सिरानी जात ॥ ध्रु० ॥ जाल रंधत भारित चांदनी चलत मंदकछु शीतल बात ॥ १ ॥ सनसनात निशि झिलमिल दीपक पात खरक बिचबीच सुनात ॥ रगमगे दोऊ भुज दिये सिरान्हे आलसबस मुसकात जंभात ॥२॥ मधुर बिहाग सुनात दूर सों लपटि रहे बिथकित सब गात ॥ हरीचन्द दोउ रूप लालची शिथिल तऊ जागे न अघात ॥३॥८॥

ग्रीषम ऋतुफूल के शृङ्गार को पद—राग यथारुचि।

आजुसखी फूले हरि फूल कुंजमाहीं। प्यारी को संगलिये दीन्हे गलबाहीं ॥ १ ॥ फूलन के अङ्गन सब अभरण अतिसोहैं ॥ देखि देखि ब्रजन के मनको अतिमोहैं ॥ २ ॥ बिछिया पग राईबेलि चित की गति हरती ॥ पंकज को पायजेब पायजेब करती ॥ ३ ॥ मदनबाणफूलन की कटि किंकिणी राजै ॥ कलियन की चोली मधि यौबन अतिभ्राजै ॥ ४ ॥ चंपक की कलीबनी चंपकलीभारी ॥ फूलन के हार कंठ सोहत रुचिकारी ॥५॥ झबियाकर फूलन के बाजूबंद दोऊ ॥ फूलन की पहुंची कर-

राजत अतिसोऊ ॥६॥ फूलन की चूरीइमि दोऊ-कर साजै ॥ चंदन के हार मनहु लपटि लताराजै ॥७॥ पल्लवसी अँगुरिन में मुंदरी छबि देहीं ॥ देखतही मोहनमन हाथन सों लेहीं ॥८॥ करना के करनफूल करनबीच धारे ॥ झुमका दोउ झूमत लखि मानो मतवारे ॥ ९ ॥ फूलन की झुलनी नकबेसर बिचधारी ॥ प्यारे को चित्त मनो पोहि धर्‍यो प्यारी ॥ १० ॥ मदनबाण फूलन की बंदी अनुरागै ॥ देखतही लालन हिय मदनबाण लागै ॥ ११ ॥ बेनाशिर फूलहि को देखत मन भूल्यो। रूप की लता में मनो एक फूल फूल्यो ॥ १२ ॥ बेनीशिर फूलन की सोहत छबि छाई ॥ अपने कर नन्दलाल गूंथिकै बनाई ॥ १३ ॥ नखशिख ते फूलन के अभरण भवभारी॥ फूलन के लहँगा अरु फूलन की सारी ॥ १४ ॥ फूलीछबि देखि देखि नन्दलाल फूल्यो ॥ भ्रमर होइ मेरो मन हरीचन्द भूल्यो ॥ १५ ॥ ९ ॥

आजु सखी व्रजराज लाड़िलो नव दूलह बनि-आयो ॥ फूल सेहरो सीस बिराजै फूलन साज सजायो ॥ १ ॥ फूलन के आभरण बिराजत

फूलन माल बनाई ॥ फूलन चँवर ढुरत दोऊ दिशि फूलछत्र सुखदाई ॥२॥ घोड़ी सजीफूल के गहिने फूल लगाम बनाई ॥ फूले फूले सकल बराती तनधन देत लुटाई ॥ ३ ॥ फूल देव बिमानन फूले फूलन की झरिलाई ॥ हरीचन्द ऐसी जोरीपै फूलिफूलि बलिजाई ॥ ४ ॥ १० ॥

ग्रीष्म—सारंग।

आजु नंदलाल पिय कुंजठाढ़े भये श्रवतशुभ सीसपै कलित कुसुमावली ॥ मनहुं निजनाथ-सखि देखिकै खसित अकाश ते तरल तारावली ॥ १ ॥ बहत सौरभ मिलत सुभग त्रयबिधि पवन गुंजरत महारस मत्त मधुपावली ॥ दास हरिचन्द ब्रजचन्द ठाढ़े मध्यराधिका बाम दक्षिण सुचन्द्रा-वली ॥ २ ॥ ११ ॥

मकर संक्रांति—यथा।

अहो हरि नीको मकर मनाये ॥ चित्रचमन धरि भले लाडिले पुण्य समय घरआये ॥ १ ॥ कहा परब कियो दियो दान रस तिल तन प्रगट लखाये ॥ हरीचन्द खिचरी से मिलि क्यों कित तिरबेणी न्हाये ॥ २ ॥ १२ ॥

श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई—सारंग।

आजु भयो सांचों मंगलभुव प्रगटे श्रीबल्लभ सुख धाम ॥ करुणासिंधु सकलरस पोखक पतित उधारण जाको नाम ॥ १ ॥ दैवीजीवन अभय दानदै रसिक जनन के पूरै काम। हरीचन्द प्रभु-मंगल मूरति गौरश्याम तन एक ललाम ॥२॥१३॥

प्रबोधिनी—विहाग।

आजु सुहाग की रातिरसीली ॥ गावो नाचो करौ बधाई कुंजन मांझ छबीली ॥ १ ॥ गावत-घोड़ी देवमनावत रस बरषत भरपूर ॥ हरीचन्द को टेरिटेरि कै देत सखी सब भूर ॥ २ ॥ १४ ॥

श्रीठाकुरजी की बधाई—विहाग।

आयो समय महासुखकारी ॥ सब गुणगण संयुत मनरंजित अतिशयपरम सुशोभा धारी ॥१॥ रोहिंणि नखत सात शुभग्रहसब कहकहि ये उपमा मति हारी ॥ दिशा प्रसन्न हँसत नभ निर्म्मल तारन की बाढ़ी छबि भारी ॥ २ ॥ मगलमय धरणी सब राजत पुर आकर ब्रजगांव सुखारी ॥ नदी प्रसन्न सलिल तालन की कमलन सों भइ शोभा भारी ॥ ३ ॥ द्विज अलिकुल सन्नाद करन-लगे बनराजी फूलनि फूलवारी ॥ पुण्य कंधलै

बह्यो महासुभ बायु सबिधि सुचि त्रिबिधि बयारी ॥ ४ ॥ द्विज यांचन की सांति अगिनि सब प्रगट भई कुंडन ते नारी ॥ असुरद्रोह सब साधूजन के मन सुप्रसन्न भये ता बारी ॥ ५ ॥ अजनजनम को समयजानि कै बजति लजंति सब दुन्दुभिभारी ॥ गाइ उठे गन्धर्बरु किन्नर चारण साधु तुष्टि मनधारी ॥६॥ नाचन लगी देव अप्सरा सह अतिप्यारी सब घर की नारी ॥ मुनिदेवता महाआनन्दित बरसत फुलभरि भरिथारी ॥ ७ ॥ सागर के गरजन के पीछे मन्द मन्द गरजे जलधारी ॥ आधी राति उदित भयो चन्दा आनंद करत हरत अँधियारी ॥ ८ ॥ देबि रूपिनी देबी जू ते प्रगट भये श्रीगिरिवरधारी ॥ निरखि नयन आनन्द सिथिल भे हरीचन्द बलिहारी ॥ ९ ॥ १५ ॥

बालकीला—असावरी।

आजु लख्यो आंगन में खेलत यशुदाजी को बारोरी। पीत झंगुलिया तनक चौतनी मनहरि लेत दुलारोरी ॥१॥ अति सुकुमार चन्द्र से मुख पै तनक डिठोना दीनोरी। मानहुं श्याम कमल पै इक अलि बैठो है रंग भीनोरी ॥ २ ॥ उर बघनहा

बिराजत सखिरी उपमा नहिं कहि आवैरी । मनु फूली अगस्तकी कलिका शोभा अतिहि बढ़ावैरी॥३॥ छोटी छोटी शीश लुटुरिया भ्रमरावलि जनु आईरी ॥ तैसी तनक कुल्हइया तापै देखत अति सुखदाईरी ॥ ४ ॥ क्षुद्रघंण्टिका कटि में सोहत शोभा परम रसालारी ॥ मनहुंभवन सुन्दरता को लखि बांधी बन्दनमालारी ॥ ५ ॥ पीतझंगा अति तनपै राजत उपमा यह बनि आईरी ॥ मनुघन में दामिनि लपटानी छबि कछु बरणि न जाईरी ॥ ६ ॥ कोटिकाम अभिराम रूप लखि अपनो तन मन बारैरी ॥ हरीचन्द्र ब्रजचन्द्र चरणरज लेत बलैया हारैरी ॥ ७ ॥ १६ ॥

दानलीला—टोड़ी।

ऐसी नहिं कीजै लाल देखत सब ब्रज की बाल काहे हरिगये आजबहुतहि इतराई ॥ सूधे क्यों न दानलेव अंचरा मेरो छांड़िदेव जामें मेरी लाजरहै करो सो उपाई ॥ १ ॥ जानत ब्रज प्रीति सबै औरहू हसैंगे अबै गोकुल के लोग होत बड़ेई चवाई ॥ हरीचन्द गुप्त प्रीति बरसत अतिरस की रीति नेकहू जो जानै कोउ प्रकटत रस जाई ॥२॥१७॥

मकर संक्रान्ति—टोडी।

करत दोउ यहि हित खिचरी दान॥ जामेंसदा मिलेरहैं ऐसेहि गौरश्याम सुखखान॥१॥ चित्रबस्त्र धरि परम नेह सों जोरिपान सों पान॥ हरीचंद त्योहार मनावत सखिजन बारतप्रान॥२॥१८॥

ग्रीषमऋतु—सारंग।

केशरखौर श्यामसुन्दरतन निरखत सब मन मोहै॥ मनु तमालमय चम्पक बेली लपटि रही अति सोहै॥ १ ॥ मनुघन में दामिनि लपटानी उपमा को कबि को है॥ हरीचन्द बनते बनि आवत ब्रज त्रिय मुख छबि जोहै॥२॥१९॥

प्रबोधिनी—यथा।

कुंजन मंगल चारु सखीरी॥ थापैदीने कलश बधाये तोरण बांधी द्वार॥१॥ गावत सबै सोहाग छबीली मिलि सब ब्रज की बाम॥ बन्ना बनि आयो नँदनन्दन मोहन कोटिक काम॥२॥ रंग रंगीली घोड़ी चढ़िकै सिहरो सोहत शीस॥ देत अशीश सासुरे की सब जीवो कोटि बरीस॥३॥ बन्ना बहू पास बैठारी जोरि गांठ इक साथ॥ हरीचन्द को देत बधाई दुलहिन अपने हाथ॥४॥२०॥

दीनता—यथारुचि।

गुण गन बिठ्ठल नाथ के कहँ लगि कोउ गावै॥

अमित महिम लघु बुद्धि सों कछु कहत न आवै ॥ १ ॥ दैवी जन अपने किये कलि जीव उबारे ॥ माया तिमिर मिटाइकै खल कोटि उधारे ॥ २ ॥ अंगीकृत जाको कियो ताको नहिं त्याग्यो ॥ अपराधहि मान्यो नहीं भक्तन अनुराग्यो ॥ ३ ॥ शरण पर्‍यो त्रयताप को मेट्यो क्षण माहीं ॥ हरीचन्द की गहि भुजा यामें शक नाहीं ॥४॥२१॥

बिहाग।

गावत गोपी कोकिल बानी ॥ श्री वृषभानु राज से राजा कीरतिसी जाकी पटरानी ॥ १ ॥ गावत शारद नारद शुक मुनि सनकादिक ऋषि जानी ॥ गावत चारिउ बेद शास्त्रषट कहि कहि अकथ कहानी ॥ २ ॥ गावत गुण अज ब्यासादिक शिव गीत परम रससानी ॥ मन क्रमबचन दासचरणन को गावत हरीचन्द सुखदानी ॥३॥२२॥

दानलीला—सारंग।

ग्वालिनदै किन गोरसदान ॥ करुनपुन्य यह गोबर्द्धनगिरि तीरथ सों बढ़िमान ॥ १ ॥ गंहन-चिकुर मुख पूरन बिधुपै छायासमलखु आन ॥ बड़ो परब तुव भाग मिल्यो है करुन बिलम्ब सुजान ॥ २ ॥ सिसुतापूरि प्रकट प्रति पदनव

योबन संधिसमान ॥ हरीचन्द कंचन अंगनदै हरि सुपात्र पहिंचान ॥ ३ ॥ २३ ॥

अशीष—यथारुचि।

चिरजीवो यह जोरी युग युग चिरजीवो यह जोरी ॥ श्रीयसुदानन्दन मनमोहन श्रीवृषभान-किशोरी । ध्रु० ॥ नित नित ब्याह नित्यही मंगल नित नित सुख अति होई ॥ श्रीवृन्दाबन सुख सागर को समुद्रपार न पावै कोई ॥२॥ एक रूप दोउ एक बयस दोउदोऊ चन्द्र चकोर ॥ हरीचंद जबलों शशि सूरज तबलौं जीयोजोर ॥ २ ॥ २४ ॥

ब्याहुला—यथारुचि।

चलो सखी मिलि देखनजैये दुलहिन राधा गोरीजू ॥ कोटि रमामुख छबिपै वारों मेरी नवल किशोरीजू ॥ १ ॥ घंघरीलाल जरकसीसारी सोंधे भीनीचोलीजू । मरवट मुख में शिरपै मौरी मेरी दुलहिया भोलीजू ॥ २ ॥ नकबेसर कनफूल बन्यो है छबिकापै कहिआवैजू ॥ अनवट बिछिया मुंदरी पहुंची दूलह के मन भावैजू ॥ ३ ॥ ऐसी बनाबनी पैरी सखि अपनो तनमन वारीजू ॥ सब सखियां मिलि मंगल गावत हरीचंद बलिहारीजू ॥ ४ ॥ २५ ॥

श्रीस्वामिनी जी की बधाई।

चलीं बधाई गावन के हित सुन्दर ब्रज की नारी ॥ अंचल उड़त हंसगति चंचल करलै मंगल थारी ॥ १ ॥ पीतबसन कटि कसन रसन छबि रसनि कहौं किमिगाई। दामिनि पै सन्ध्या घन तापै फिरि दामिनि लपटाई ॥ २ ॥ नूपुर रुनित झुनित कंकनकर हार चुरी मिलिबाजै। मनु अनंद भरि सब तन भूषण गाजत साजत राजै ॥ ३ ॥ चौमुख चारु दीप थालन पर मंगल साज सजाई। मनहु सनाल कमल पर कमला कनकलता चढ़िधाई ॥ ४ ॥ धावत खसत सुमन बेनीते उपमाकहँ कबि हारैं। मनु कोमल पग गोनिचुकरगन फूल पांवड़े डारैं ॥ ५ ॥ ऊंचेसुर गावत छबि छावत बरसावत रस भाई। इकसों इक बढ़ि आतिहि उतायल कीरति मंदिर आई ॥६॥ निरखत मुख सुख अतिहिय बाढ्यो बारिसुनत मनदीनों। आजु सखी नँद के घर को सुखसांच बिधाताकीनों ॥७॥ नाचत मुदित करत कौतूहल गावत दै करतारी। हरीचन्द आनँद मय आनँद युगल इकत्र निहारी ॥ ८ ॥ २६ ॥

बिहार—केदार।

चलै दोउ हिलि मिलि दै गलबाहीं। फैली घटा चहूंदिसि सुन्दर कुंजन की परछाहीं ॥ १ ॥ अपने कर पिय श्रम जल पोंछत प्यारी कहु नहि नाही। हरिचन्द बिजन डोलावत श्रम लखिं बिधि हरि आदि सिहाहीं ॥ २ ॥ २७॥

रथयात्रा—सारंग।

चारु चलचक्र चित्रित बिचित्रित परम जगत बिजयी जयति कृष्ण को जैत्र रथ। अति तरल-तर बलाहक शैब्यसुग्रीव मणि पुष्पतुरंग योजित चलतपथ सुपथ ॥ १ ॥ फरहरत ध्वज उड़तनव पताका परमकलसकल इन्द्रसम सकलचमकत अकथ। चक्रतापररह्योतासु तल बायुसुत बिनत बिनता सुअन गरजि अरिकरत हथ ॥ २ ॥ खंभकूबर छत्रचारु डांड़ीचारु बिबिधमणि जटित उघरित बेद शब्द कथ। झांझझनकत करत घोर घंटा घहटि घने घुंघरू गिरत फिरत मिलि एक जथ ॥ ३ ॥ झुखीसूरज सुखी सुखी लखिजन दुखी दैत्य दल झलमलत झालरन मुक्त तथ। बैठि दारुकतदारुक करत अश्वको चंलतमनबेग सम बेगति शब्द नथ ॥ ४ ॥ देवऋषि करत

जय शब्द मुरछल दुरत सूत बंदी बिरद कहत बहुभांति गथ। थकित हरिचन्द दृग सरससोभा निरखि हरषि सुमनन बरषि लह्यो चारो अरथ ॥ ५ ॥ ॥ २८ ॥

बाललीला—यथारुचि।

छोटो सो मोहनलाल छोटे छोटे ग्वाल बाल छोटी छोटी चौतनी शिरन पर सोहैं। छोटे छोटे भँवरा चकई छोटी छोटी लिये छोटे छोटे हाथन सों खेलैं मनमोहैं ॥ १ ॥ छोटे छोटे चरण सों चलत घुटुरुवन चढ़ीं व्रजबाल छोटी छोटी छबि जोहैं। हरीचन्द छोटे छोटे कर पै माखन लिये उपमा बरणिसकैं ऐसे कबि को हैं ॥ २ ॥ २९ ॥

आशिष—बिहाग।

युग युगजीवो मेरी प्रानप्यारी राधा। जबलौं यमुनजल रबि ससि नभथल तबलौं सुहाग लहौ सुयस अगाधा ॥ १ ॥ नित नित रूपबाढ़ो परस्पर प्रेम गाढ़ो नवल बिहारकरि हरौ जनबाधा। हरीचन्द दै आशीष कहत जिओ लखबरीस तुम्हरे प्रकटभये पूरी सबसाधा ॥ २ ॥ ३० ॥

गणेशचतुर्थी को पद—रागयथारुचि।

जय जयगोपी गणेश बृन्दाबन चिंता मणि

ऋद्धिसिद्धिदायक ब्रजनाथ प्रानप्यारे । बनिता कुच मोदक गहि बार बार केलि करन प्रिया बेनिका भुजंगहस्त कंजधारे ॥ १ ॥ मान समय पद परसत अंकुशादि चिन्ह लसंत हँसत अभय बरद परम प्रान के रखवारे ॥ शुण्डदण्ड बाहु-मेलि कर निषंग सुगजकेलि करत है हरिचन्द निरखि हरषि प्रानवारे ॥ २ ॥ ३१ ॥

निल्ल—बिहाग ।

जयश्री मोहन प्रानप्रिये ॥ ध्रु० ॥ श्रीवृषभानु नंदनीराधे ब्रजकुलतिलकत्रिये ॥ १ ॥ जा पदरज सिव अज बंदतानित ललचत रहताहिये ॥२॥ तिनहरिसँग बिहरत निसंक निसिदिन गलबाँहदिये ॥ ३ ॥ जा मुखचन्द मरीच देखि सबब्रज नरनारि जिये ॥ ४ ॥ तिन की जीवनमूरि होइकै सहजेहि स्वबसकिये ॥ ५ ॥ इन्द्रादिक दिगपति जाके डर बरतत रुखहिलिये ॥ ६ ॥ हरीचन्द सो मान जासुलखि सहजहि बहुतभिये ॥७॥३२॥

स्फुट—यथारुचि ।

जुरेहैं झूठेही सबलोग । जैसे स्वामी परिकर तैसे तैसोही संयोग ॥ ध्रु० ॥ वे तो दीनानाथ कहाये करि इत उत कछुकाज । एक एक की लाख

इन्होंने गाईतजि कै लाज ॥ १ ॥ जुरेसिद्ध साधक ठगिया से बड़ो जालफैलायो । मूड्यो जिन्हैं मिटायो तिनको जग सो नाम धरायो ॥ २ ॥ आजु नाहिं तो कल या आशाही में दीनहिं राख्यो । हरीचंद मनलै निरमोहित श्वेत कृष्ण नहिं भाष्यो ॥ ३ ॥ ३३ ॥

दीनता—देवगन्धार ।

जोपै श्रीबल्लभसुत नहिं जान्यो । कहा भयो साधन अनेक मैं करिकै वृथा भुलान्यो ॥ १ ॥ बादरसिकता अरु चतुराई जो यह जीवन जान्यो । मन्यो वृथा बिषयारस लम्पट कठिन कर्म में सान्यो ॥ २ ॥ सोइ पुनीत प्रीति जेहि इनसों वृथा बेद मथि छान्यो । हरीचन्द श्रीबिठ्ठल बिन-सब जगत झूठ करि मान्यो ॥ ३ ॥ ३४ ॥

तथा—आसावरी ।

जेजन अन्य आसरो तजि श्रीबिठ्ठल नाथहि गावैं । तेबिन श्रम थोरेहि साधन में भव सागर तरि जावैं ॥ १॥ जिन के मात पिता गुरु बिठ्ठल और कहूं कोउ नाहीं । ते जन यह संसार समुद्रहि बत्स खुरन करि जाहीं ॥ २ ॥ जिनके श्रवन कीरतन सुमिरन बिठ्ठलही को भावै । ते जन

जीवन मुक्त कहावहिं मुख देख अघ जावै ॥ ३ ॥ जिनकें इष्ट सखा श्रीबिठ्ठल और बात नहिं प्यारी। तिनके बश में सदा सर्बदा रहत गोबर्द्धनधारी ॥ ४ ॥ जिनमन काय करम बच सब बिधि श्रीबिठ्ठल पद पूजों। तेकृत कृत्य धन्यते कलि में तिनसम और न दूजो॥ ५॥ जा निशिदिन श्रीबिठ्ठल बिठ्ठल बिठ्ठलही मुख भाषैं। हरीचन्द तिनके पदकी रजहम अपने शिर राखैं ॥६॥३५॥

बधाई—राग कान्हरा।

जोपै श्रीराधा रूप न धरतीं। प्रेमपंथ जग प्रगट न होतो बृजबनिता कहा करतीं ॥ १ ॥ पुष्टिमार्ग थापित को करतो ब्रजरहतो सब सूनो। हरि लीला काके सँग करते मंडल होतो ऊनो ॥२॥ रास मध्य को रमतो हरि सँग रसिक सुकबि कह गाते। हरीचन्द भवके भय सों भजि किहिके शरणहिं जाते ॥ ३ ॥ ३६ ॥

जय जय जय जय जय श्रीराधा। जबतें प्रगट भई बरसाने नाशी जन के तन की बाधा॥ १॥ सब सखि आनन्दित मन में अति चरन कमल अवराधा। हरीचन्द ब्रजचन्द पिया को प्रेम पंथ जिनसाधा ॥ २ ॥ ३७ ॥

श्रीरामनौमी वा दशहरा की किर्तन—सारंग ।

जयतिराम अभिराम छबिधाम पूरण काम श्याम बपु बाम सीता बिहारी । चण्ड कोदण्ड बल खण्डकृत दनुजबल अनुज सह सहज शुभ रूपधारी ॥ १ ॥ रक्षकुल अनलबलप्रबल पर्जन्यसम धन्य निजजन पक्ष रक्षकारी । अवध भूषण समर बिजित दूषण दुष्ट बिगत दूषण चतुर धर्मचारी ॥ २ ॥ खरप्रखर खरअग्नि लंकदृढ़ दुर्गदल दलमलन बाहु मारीचमारी । वैश्रवण अनुज घट श्रवण रावण शमन सशमन भय दमन हरिचन्द वारी ॥ ३ ॥ ३८ ॥

जगाने के पद ।

जागोमेरे प्राणपियारे । बलिबलि गई दिखावोशशिमुख उठो जगत उजियारे ॥ १ ॥ मेटहु बिरह ताप दरशनदै बोलहु मधुरेबैन । आलसभरे रैनि रँगरातेखोलहु पंकज नैन ॥ २ ॥ मेरे सरबस जीवन माधव प्रात भयोबलि जागो ॥ कछुअलसाइजँभाइमंदहँसि हरीचन्दगरलागो ॥ ३ ॥ ३९ ॥

प्रबोधनी के पद यथारुचि ।

जागो मंगलमूरति गोबिन्द बिनय करत सबदेव ॥ तुव सोये सबही जग सोयो लखहु न अपनो

भेव ॥ १ ॥ बन्दी वेद खरे यशगावत अस्तुति-करत जुहारी ॥ नारद शारद बीन बजावत जय जय बचन उचारी ॥२॥ किन्नरअरु गन्धर्ब अप्सरा तुम्हरोही यशगावैं ॥ बाजन बिबिध बजाइ तुम्हें सब करिमनुहारि जगावैं ॥ ३ ॥ जग के मंगल काजहोत नहिं बिनुतुव उठे कृपाल ॥ तुव जागे सबही जगजागत तासों उठहु दयाल ॥४॥ निद्रा तजहु रमापति केशव चहुंदिशि मंगलमाचै ॥ पंकज नयनबिलोकि बिमलयश हरीचन्दहू बांचै ॥५॥४०॥

ग्रीष्मऋतु ।

झीनो पिछौरा सोहैंआजु अति झीनो पिछौरा सोहैं । चन्दन लेप नंदनंदन तन देखतही मन मोहैं ॥ १ ॥ पारिजात मंदार रही लसि फूल छरी करलीन्हे ॥ सांझसमय बन ते बनि आवत गोधन आगे कीन्हे ॥ २ ॥ गोरज छरित अकल सब सुंदर ब्रजबालन दरशायो ॥ हरीचन्दमुखचन्द देखि कै वासर ताप नशायो ॥ ३ ॥ ४१ ॥

दीनता यथारुचि ।

तुम समनाथ और को करिहै ॥ ध्रु० ॥ हम से हीन दीनजनहूपै कौन कृपा बिसतरिहै ॥ १ ॥ को निज बिरद सम्हारन कारन दौरिदीन दुखहरि

है ॥२॥ जानि क्षुधित हरिचन्द अशन को भेजि क्षुधा परिहरिहैं ॥ ३ ॥ ४२ ॥

अभीग कान्हरा।

तिह्रारो घर सुबस बसो महरानी ॥ कीरति जू तुम्हरे घर प्रगटी ब्रजजननी ठकुरानी ॥ १ ॥ जाके भये सकल सुख बरसै जिमि सावन को पानी। आति आनंद भयो गोधन में हम यह आगम जानी ॥ २ ॥ कोउ गावैं कोउ देत बधाई वेद पढ़त मुनिज्ञानी ॥ हरीचन्द प्रगटी श्रीराधा मोहन के मनमानी ॥ ३ ॥ ४३ ॥

दीनता यथारुचि।

तेई धन्यधनि या कलियुग में जिनजाने श्रीबिठ्ठलनाथ ॥ जीवन जगत सुफल तिनहीं को जौन बिकाने इनके हाथ ॥१॥ धरम मूल इक-इन की पद रज इनके दासहि सदा सनाथ ॥ भक्ति सार इन को आराधन इनहीं को गावत श्रुतिगाथ ॥ २ ॥ इनके बिनुजे जीवत जग में ते सब श्वास लेत जिमि भाथ ॥ हरीचन्द चलुशरन इनहिं के धरिकै चरनन पर निजमाथ ॥३॥४४॥

सेहरा यथारुचि।

दूलह श्रीब्रजराज फूलि बैठे कुंजन आज ॥

ध्रु० ॥ फूलन को सेहरो फूलन के आभरण फूलन के सब साज ॥१॥ फूली सखी गीत गावैं देव फूल बरषावैं फूल्यो सकल समाज ॥ फूली श्रीराधा प्यारी देखि फूली ब्रजनारी हरीचन्द फूल्यो अति आज ॥ २ ॥ ४५ ॥

दान एकादशी और बावन द्वादशी ।

दानलेन हैही जन जान्यो ॥ कै तुम नन्दराय के ढोटे कै बामन जिन बलि छल ठान्यो ॥१॥ तीन पैर कहि छोटे पग सों उन छल करिकै देह बढ़ाई ॥ तुम गोरस के मिस कछु औरे रस लीनो छलिकै ब्रजराई ॥२॥ वे छोटे कपटी तुम खोटे एकहि से बिधि रचे संवारी ॥ हरीचन्द वेतो बावन रहे तुम छप्पन निकसे गिरिधारी ॥ ३ ॥ ४६ ॥

दान एकादशी ।

देखे आजु अनोखे दानी ॥ धु० ॥ याचक पनमें इती ढिठाई लालकौन यहबानी ॥१॥ रार करत कै गोरस मांगत सो कछु बात न जानी ॥ हरीचन्द कुल दीपक ढोटा कौन रीति यह ठानी ॥ २ ॥ ४७ ॥

निन्य टोड़ी ।

देखौ जू नागरनट ठाढ़ो जमुना के तट पर

मग कोउ चलन न पावै ॥ काहू को हरत चीर काहू को गिरावै नीर काहूकी ईंडुरी दुरावै ॥ १ ॥ श्याम बरन तन शीश टिपारो शोभा कहि नहिं आवै ॥ हरीचन्द हँसि हँसि नयनन आवत तन मन सबहि चोरावै ॥ २ ॥ ४८ ॥

मकर संक्रांति का और संक्रांति के दिन गायवे को पद—राग यथारुचि ।

दुतिय नृप भानु छटी तजु मान ॥ करन चतुर्थ सदा सौतिन हिय कटि पंचमी सुजान ॥१॥ तो सम माती नाय और कोउ नवमन दम तू बाल ॥ तुव बिन आठ बेदना पावत ब्याकुल पिय नंद-लाल ॥ २ ॥ दशम केतु पीड़त पिय कों अति निज दुख अगिनि बढ़ाय ॥ करु अभिषेक अमृत एकादश कुचपिय के हियलाय ॥३॥ द्वादश बिनु जल तिमि हरि तुव बिन लगतानि प्रथम न नेक । हरीचन्द ह्वै त्रतिय पियासंग करु संक्रमन टिबेक ॥ ४९ ॥

नित्य यथारुचि ।

दोउ मिलि पौढ़े सुख सों सेज ॥ करत भावती रस की बतियां बाढ़े मदन मजेज ॥१ ॥ बतिय-नहो कछु अनरस ह्वैगयो प्रिया रही करिमानि ॥ बोलत नहिं कछु मौन ह्वै रही भौंह युगुल धनु तान ॥ २ ॥ ५० ॥

ब्याहुला यथारुचि।

दोउ जन गांठि जोरि बैठारे ॥ बिहँसत दोउ मुख देखि परस्पर चितवत होत सुखारे ॥ १ ॥ दूलह दुलहिन को आनँद लखि बाढ्यो अनंद अपार ॥ हरीचन्द को पकरि नचावत गारि देत ब्रज नार ॥ २ ॥ ५१ ॥

ग्रीष्मऋतु यथारुचि।

दोउ मिलि बिहरत यमुनातीर मैं ॥ १ ॥ करि करके जलयंत्र चलावत भीजि रहीलट नीर मैं ॥ २ ॥ इत उत तरत सखी जन सोहत मनहुं कमल जल भीर मैं ॥ ३ ॥ छीट उड़ावत हंसत हंसावत बोलनि मनुपिक कीर की ॥ ४ ॥ सांवरे अंग गौर तन सोहत लपटनि भीजे चीर की ॥ ५ ॥ हरीचन्द लखि तन मन वारत छबि राधा बलबीर की ॥ ६ ॥ ५२ ॥

विरह।

न जानी ऐसी हरि करिहैं ॥ हमरे ह्वै द्विजन के ह्वै हैं दया न जिय धरि हैं ॥ १ ॥ ध्रु० ॥ होत सामनो जिनि हँसि चितवत भाव अनेक कियो। तिन अब मिलतहि सकुचि इतैसो मुखहू फेरि-लियो ॥ २ ॥ मान्यो तिन्हैं काम नहिं हम सों तासों निठुर भये। हरीचन्द ब्रजनाथ नाम की लाजहि क्यों मिटये ॥ ३ ॥ ५३ ॥

सों ज़ल जंत्रित करि गावत हँसत कलोलैं ॥ १ ॥ करन धार ललिता अति सुंदर सखि सब खेवत नावैं ॥ नाव हलनि मैं पिया बाहु मैं प्यारी डरि लपटावैं ॥ २ ॥ जेहि दिशि करि परिहास झुकावहिं सबही मिलि जलयानै ॥ तेहि दिशि युगुल सिमिटि झुकिपरहीं सो छबि कौन बखानै ॥ ३ ॥ ललिता कहत दाब अब मेरी तू मों हाथ न प्यारी ॥ मान करन की सौंह खाइतौ हम पहुंचावैं पारी ॥४॥ हँसत हँसावत छीट उड़ावत बिहरत दोऊ सोहैं ॥ हरीचन्द यमुना जल फूले जलज सरिस मनमोहैं ॥ ५ ॥ ५५ ॥

बधाई—यथा रुचि ।

प्रकटे रसिक जनन के सरबस ॥ ध्रु० ॥ यशुमति उदर अलौकिक बारिधि श्यामकलानिधि निधि रस ॥ २ ॥ पसरितचन्द्रकला सो पूरब उज्ज्वल बिमल बिशदजस ॥ हरीचन्द ब्रजबधू चकोरी सहजेहि कीन्ही निजबस ॥ २ ॥ ५६ ॥

प्रगटे प्रानन हूंते प्यारे ॥ ध्रु० ॥ नन्दभवन आनन्द कलानिधि यशुमति मात दुलारे ॥ १ ॥ आजु भयो सांचो आनन्द भुव फले मनोरथ सारे॥

बिहाग—तथा।

प्यारी लाजन सकुची जात ॥ ध्रु० ॥ ज्यों ज्यों रतिप्रतिबिंब सामुहें आरसि मांह लखात ॥१॥ कहत लाख यहि दूर राखिये बलकरि कर्षत गात ॥ हरीचंद रस बढ़त अधिक अति ज्यों ज्यों तीय लजात ॥ २ ॥ ६१ ॥

संक्रान्ति—यथारुचि।

पियारे इतही मकर मनावहु ॥ ताती खिचरी सुखद अरोगौ हमकहँ सुख उपजावहु ॥१॥ बड़ो-परब है आजु श्यामघन कहूं न चित्त चलावहु ॥ हरीचन्द मिलि देहु महासुख मेरीलगन पुजावहु ॥ २ ॥ ६२ ॥

प्यारे जान न देहौं आज ॥ कोटिन मकर करौ नहिं छांड़ौ प्राणनाथ ब्रजराज ॥ १ ॥ मीन मेख बिनु बात करत तुम कहूं मिथुन ललचाने ॥ धनि धनि पिय तुमतुल नहिं दूजो सब के घटन समाने ॥२॥ करकत हिय बीछीसी बातें सोतिन संग-जो कीनी ॥ तासों राखौ लाय हिय अब करि करि अधिक अधीनी ॥३॥ तौ वृषभानु राय की कन्या तौ अब तुमहिं न छाड़ौं ॥ बड़ो परब यह पुण्य उदय मोहिं मिलि तुम सों रंग माड़ौं ॥४॥ दक्षिण

वह मुख बोलै ॥१॥ फूल को सेहरो शीश फूलन की माल कण्ठफूले फूले नयन दोऊ लगे अनमोलै। हरीचन्द बलिहारी निज कर गिरीधारी कालीसी दुलहिया को घूंघट खोलै॥ २ ॥ ७२ ॥

फूलहु को कंगना नहिं छूटत कैसे हौ बलबीर जू। जानिपरी सब आजु तुम्हारी नामहिं के रणधीर जू ॥ १ ॥ दूध पिवायो यशुदा मैया जादिन को सों आयो। चोरि चोरि कै माखन खायो सो बलकहां गँवायो ॥ २ ॥ तारी दै दै हँसी सखी सब आजुपरी मोहिं जानी । सुनि कै तिनकी बात दुलहिया घूंघट मैं मुसक्यानी ॥३॥ कोटि यतन कोऊ करिहारौ लगालगन नहिं टूटै । हरीचन्द यह प्रेमडोरना सो कैसे करि छूटै ॥४॥७३॥

फूल के सिंगार करत अपने हाथ प्यारो। फूसन की कलियन को आभरण सँवारो ॥ १ ॥ पाटी पारि अपने हाथ बेनी गुथी बनावें। शीश-फूल करणफूल लै लै पहिरावें ॥ २ ॥ कंचुकी पहिरावत मैं चपलई कछु कीनी। प्यारी मुस-काय आंखि नीची करि लीनी ॥ ३ ॥ किंकिनि पहिराय झवा लहँगा पहिरायो। देखि देखि मुदित होत प्यारो मन भायो ॥ ४ ॥ पायल पहिरावन

बशबल हारचन्द अंशपर ढुरत अघर में अमर-रहत रिलि ॥ २ ॥ ७६ ॥

मगहम में राजभोग समय—सारंग।

बारो अति मेरोलाल सोइ उठत प्रातकाल कहातीर कैसो चीर झूठही अँगराती ॥ चोरीलाइ छिनारो लावत तुम ग्वालिनि मदमाती ॥ १ ॥ इहिमिस नित उठि देखन आवत अपनो मन क्यों नहिं समुछावत यौबन के रस चूर फिरत तुम घर घर में इतराती ॥ हरीचन्द घर न जाहु लाल हि मति दोषलाहु कहत बात क्यों बनाइ कापै इठलाती ॥ २ ॥ ७७ ॥

विहार—केदारा।

बैठे लाल यमुनाजू के तटपर ॥ गीष्मऋतु जान अतिसुख मान मान संग सबगोपीं चतुरतर ॥१॥ व्यजन चँवर दुरत चहुंदिशि ते शोभित सुभग नवलवर ॥ हरीचन्द चंदबदन हरि की छबि लखि कोटिकाम बारि गयो एक एक पद नखपर ॥२॥७८॥

तथा—कलिंगड़ा।

बीती निशितिय सोबन दीजै यह ललिता लै बनि बजायो ॥ चौंकि परे दोउ भोरजानि तब रसमसे नैनानि आलस आयो ॥ १ ॥ सीरे जानि

दिखरायो जा में शंका सकल जरै। प्रभु प्रतिकूल गुरुहि निज छाँड्यो यह अनन्य मति को बिचरै॥ ३ ॥ राजहु गये शाप गुरु दीनों आपु बधे पै कौन डरै। हरीचन्द दृढ़ता की दुन्दुभि जग बजाइ इमि कौनतरै॥ ४ ॥ ९१ ॥

वेदन में निज महिमा थापन भये त्रिबिक्रम आजु सुरारी। सब जग ब्यापकता दिखराई सबन प्रत्यक्ष दीन हितकारी॥ १ ॥ औरहु एक भेद है या में जो प्रगट्यो या बेष खरारी। बामनहू बपु सब सों ऊंचे त्रिभुवन दायक यदपि भिखारी॥ २ ॥ जग दाता बिराट बपु की फिरि कहौ महिम को कहै बिचारी। हरीचन्द छोटे पनहू में जब सबही सों बढ़ि बनवारी॥३॥९२॥

बलिहि छलन गये आपु छलाये। मांगत दान दियो अपुनो को बाँधि एक क्षण जनम बँधाये॥ १ ॥ प्रणतारति हर भगत बछल प्रभु साँचमान निज करि दिखराये। हरीचन्द सुर काज करन गये असुर राज थिर करि हरि आये॥ २ ॥ ९३ ॥

बलि की मतिपर बलि बलि हारी॥ सिखयो

[illegible] जिन निज गुरु की आज्ञा [illegible] ॥ [illegible] बुद्धि सुपात्र जानाहीं [illegible] जानत ॥ भूमिदान [illegible] दान नहीं [illegible] तजिहूँ जाता ॥ १ ॥ दृढ़ विश्वास अचल [illegible] मतहठ [illegible] न छिनत छिपावे ॥ [illegible] ने पद [illegible] [illegible] की रहत हार बैठावे ॥ २ ॥ सेवक स्वामि अनन्य [illegible] गति नाहिं परत लखाई ॥ [illegible] की चोट यह लिखि हरीचन्द [illegible] ॥ ४ ॥ ९८ ॥

[illegible]

भोजन करत किशोर किशोरी ॥ कुंज महल में [illegible] [illegible] ठाढ़ी नहुँ ओरी ॥ १ ॥ ललित [illegible] आई [illegible] ताती खिचरी कोरी ॥ [illegible] [illegible] बहुत [illegible] नहिं थोरी ॥ २ ॥ [illegible] बँधे प्रेम की डोरी ॥ हरिचन्द [illegible] जोरी पर [illegible] [illegible] ॥ ३ ॥ ९९ ॥

[illegible]

[illegible] लाल [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

थोड़े ही बेर ॥ ललिता बनि ज्योतिषी बतावत समय न पैहौ फेर ॥ २ ॥ कुंजकुटी तीरथ में चलिकै करहु स्वेद अस्नान ॥ हरीचन्द अलि याचक को मिलि देहु दोऊ सुखदान ॥ ३ ॥ ९६ ॥

संक्रान्ति।

मकर सक्रोन सखी सुखदाई ॥ मकर कुण्डल सौं मकर बिलोचनि क्यों न मिलत तू धाई ॥ १ ॥ मकरकेतु को भय नहिं मानत घर में रही छिपाई ॥ वें तुव बिनु भे मकर बिनाजल व्याकुल मुकरन पाई ॥ २ ॥ मान मान तजु मान मान धरम कर करधरि लै गरलाई ॥ हरीचन्द तजु मकर राधिके रहु त्यौहार मनाई ॥ ३ ॥ ९७ ॥

स्फुट—यथारुचि।

मनतुहि कौन यतन बश कीजे ॥ काहू सों जिय भरत न तेरो कहां कहां चित दीजे ॥ १ ॥ ज्ञान कर्म कुल नेम धर्म सो होत न तोहिं संतोष। घर घर भटकत डोलत धायो किये अनेक भरोस ॥ २ ॥ कामादिक नित काम तिहारे सों नाहिं क्यों हूं मानै ॥ सहस सहस नितकरत मनोरथ ताहि कौन बिधि जानै ॥ ३ ॥ कछु पूरो नाहिं परत यतन नित तौहू चाह बढ़ावै ॥ हरीचन्द क्यों

[illegible] न पूछत तो फिर एक न [illegible] ॥ ४५ ॥

[illegible]

[illegible] मति [illegible] प्यारी [illegible] । [illegible] किलोल
[illegible] मन [illegible] सुख [illegible] ॥ १ ॥
[illegible] कीरति [illegible] ।
[illegible] रजधानी [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible] जेहि [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] चारिहारि ॥ ३ ॥ ४६ ॥

[illegible]

मेरा [illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]

मेरी बात मानो। हरीचन्द बलिहारी आरनाहिं ठानों ॥ ७ ॥ १०० ॥

रथयात्रा—सारंग।

मेरे मन रथ चढ़ि पिय तुम आवो। चारु चक्र बुधि बल छल साहस लगन की डोर लगावो ॥१॥ चपल तुरंग मनोरथ बहु बिधि निर्भय छत्र छवावो। हरीचन्द गरलागि हमारे प्रेमध्वजा फहरावो ॥ २ ॥ १०१ ॥

बधाई—यथारुचि।

मंगल सब ब्रजबासी लोग ॥ मंगमय हरि जिन घर प्रकटे मिटे अमंगल भव के सोग ॥ १ ॥ मंगल ब्रज वृन्दाबन गोकुल मंगल माखन दधि घृत भोग। हरीचन्द बल्लभ पदमंगल गोपी कृष्ण संयोग ॥ २ ॥ १०२ ॥

मान को पद—बिहाग।

मेरी री मत कोउ होउ बसीठि ॥ ध्रु० ॥ मैं उनकी वे मेरे रहिहैं सदा दिये मैं पीठि ॥ १ ॥ मैं मानिनधे मनावन हारे मेरी उनकी मिलिदीठि। हरीचन्द मिलिहौं मैं उन सों लै मनुहारन नीठि ॥ २ ॥ १०३ ॥

नित्य—यथारुचि।

मेरेई पौरि रहत ठाढ़ो टरत न टारे नन्द

[illegible] को [illegible] ॥ ध्रु० ॥ गाय रही गुन [illegible] कि
[illegible] यामैं बांधो है मंजुल [illegible] ॥ १ ॥
चितवन हंसी फिरि सोतन देखत करत बेनु बजा-
वत । धरि अंचर रस बहु [illegible] नाम हमारोइ
गावत ॥ २ ॥ कर लै कमल फिरावत [illegible]
सोतन [illegible] ॥ हरीचन्द मन हरिल हंसि
हंसि हंसि [illegible] ॥ ३ ॥ १०४ ॥

[illegible] रोकि रही ठाढ़ी जान न देत मोहि
पूछत है तू कोरी ॥ ध्रु० ॥ कौन गांव कह नाम
तिहारो कहौं रहौ नेक भोरी ॥ १ ॥ कित चली
जात न कहत [illegible] री [illegible] साह-
[illegible] अब कहां जायगी नीसी है यह [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ बहुत जतन करि हारि ग्वालिनी
जान दियो नहिं तेहि [illegible] । हरीचन्द मिलि
विहरत दोउ रैनिनि नन्दकुंवर श्रीवृषभान
किशोरी ॥ ३ ॥ १०५ ॥

[illegible]

मोहन दोउ हौज किनारे बैठे करत प्रेम की
बतियां । श्री [illegible] लखि सखियन [illegible]
[illegible] पूहपन पतियां ॥ १ ॥ शीतल पवन
[illegible] शीतल [illegible] शरद [illegible]

रतिया । हरीचन्द अलसाने दोऊ मुरिमुरि बिहँसि रहत लगि छतियां ॥ २ ॥ १०६ ॥

राग यथारुचि ।

मोहनलाल के रससानी ॥ तन की सुधि न भवन की बुधि कछु डोलत फिरत दिवानी ॥ १ ॥ उघरि कहत पियगुण सबही में गावत कोकिल बानी ॥ बिथुरी अलक सरकि रह्यो अंचल चंचल चखन लखानी ॥ २ ॥ पिय रसमत छकी आशा-बसी पिय के रूप लुभानी ॥ पिय के ध्यान मुंदि रही लोचन अन्तर गति प्रकटानी ॥ ३ ॥ उझकि ललकि चौंकति भुज भरि भरि इमि सुख रहत भुलानी ॥ निज मन हँसत मौन ह्वै बैठति रोवति कहत कहानी ॥ ४ ॥ हरीचन्द इकरस हरि के रंग दिन निशि जात न जानी ॥ प्रेम समुद्र तन नाव डुबोयेहु प्रेम ध्वजा फहरानी ॥५॥ १०७॥

बिजयदशमी—माझ ।

मानगढ़ लंक के बिजय को मानिनी आज ब्रजराज रघुराज बनि कै चढ़े ॥ भृकुटि धनु नयन शर बिकट संधानि कै मुकुट की डालकर बाल अलकन कढ़े ॥ १ ॥ कोकिला कड़कि उघरत कड-खातही बदत बन्दी बिरद भवँर आगे बढ़े ॥

मुख के कमलकी चांदनी सैन है प्रेम हरिचन्द
रति बिजय आनंद भरे ॥ २ ॥ १०७ ॥

धनाश्री—चाचर।

मोहन तेरो चिरजीवो गोविन्द ॥ दिन दिन
बढ़ो बढ़ो [illegible] [illegible] ज्यों दुइज को चन्द ॥१॥
मथुरा गोकुल गोपी श्री सुत श्याम गोप सानन्द ॥
हरन सकल भय निज भक्तन को नासौ सब दुख-
द्वन्द ॥ २ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] भै अनुदिन रोहिणि
[illegible] ॥ लखौं बलाय प्राण प्यारे की सब
[illegible] हरिचन्द ॥ ३ ॥ १०९ ॥

[illegible]

रजाई करत रजाई सोहीं ॥ राजा कृष्ण राधिका
रानी दिये गांह में बांही ॥ १ ॥ सुखद सेज सुख
राज सिंहासन छत्र ओढ़ना सोहै ॥ चँवर निचुर
डोलत चहुँ दिशि ने को तहँ जो नहिं मोहै ॥२॥
बजत निशान जीति जग कंकण किंकिणि की बहु
भाँती ॥ [illegible] बादला मोती [illegible] [illegible] [illegible]
भावै पाती ॥ ३ ॥ बँधुवा मदनहिं बांधि मगायो
है [illegible] नर पैस्यो ॥ कियो [illegible] सकल सुख
सम्पति आनँद सिंधु उकस्यो ॥ ४ ॥ तब बंदी-
जन बर [illegible] कढ़ि पढ्यो बिरद [illegible] ॥

किियो स्वेद अभिषेक रीझ कच खचित कुसुम झरलाई ॥ ५ ॥ राजतिलक शिर दियो महावर अधर सुधा नजरानो ॥ तिहि लहि सर्वस दियो सरोपा साथ नीलपटवानो ॥ ६ ॥ नाची बेसर वारिमुखी तहँ परमानंद रह्यो छाई ॥ हरीचन्द अवसर तव लखिकै प्रेम जगीर लिखाई ॥७॥११०॥

राग—यथारुचि।

राधिकानाथ के साथ ब्रजबाल सब नवल यमुना-पुलिन रास राच्यो आज ॥ लेत संगीत गत शब्द उघटत विबिध एक गावत राग सुरन सांच्यो आज ॥ १ ॥ तत्तथेई तत्तथेई प्रकट धुनि होत तहँ बजत किंकिणि चुरी आनन्द माच्यो आज । थकित सुर गनन हरिचन्द निज तियन सह देखि जब मुदित नंदनन्दन नाच्यो आज ॥ २ ॥ १११ ॥

नित्य—बधाई।

राधिका मंगल की नव बेलि। जादिन प्रकटी बरसाने में सब सुख धरेउ सकेलि ॥१॥ नव नित आनँद नित नव मंगल नित नव नौतन केलि। हरीचन्द बिहरति प्रीतम सों कण्ठ भुजा उर मेलि ॥ २ ॥ ११२ ॥

बिहार—विहाग।

रसिक गिरिधरन संग सेज सोई भली। रीझि

[illegible] [illegible] [illegible] कौ निकलो ॥ ३ ॥ १०३ ॥
[illegible] [illegible] चाहि मुख [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] दुराइ दुराइ [illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] दिया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] भलो । [illegible] हरिचन्द [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] करत गुणगान [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ ११३ ॥

[illegible] में [illegible] जात न जाली । [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ २ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] । हरिचन्द [illegible] [illegible]
[illegible] प्रेम को [illegible] कहानी ॥ ३ ॥ ११४ ॥

[illegible]

[illegible] [illegible] हो [illegible] ॥ ध्रु० ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १ ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सरस रंग परिमल कोमल अति चारु रजाई उढ़ाऊं ॥ २ ॥ मधुरे गुण गाऊं प्यारे को करि मनुहार मनाऊं। हरीचन्द पौढ़ो प्रिय लालन हौं तेरे बलि जाऊं ॥ ३ ॥ ११५ ॥

स्फुट।

लाल यह तौ तुरकन की चाल ॥ ध्रु० ॥ दुख देनो गल रेति रेति कै करनो ताहि हलाल ॥१॥ जो बध करनो होइ बधो तौ क्यों खेलत यह ख्याल। एक हाथ में काम बनैगो छूटैंगे भव-जाल ॥२॥ कै मारो कै तारौ मोहन कै मोहिं करौ निहाल। हरीचन्द मति यों तरसावो बहुत भई नँदलाल ॥ ३ ॥ ११६ ॥

रथ—सारंग।

लाल नहिं नेकौ रथहि चलावै। गली सांकरी अटकि रह्यो रथ नहिं कहुं इत उत जावै ॥ १ ॥ उत बृषभानकुमारि अटा पै ठाढ़ी दृष्टि न टारै। इत नँदलाल रसिकबर सुंदर इकटक उतहि निहारै ॥ २ ॥ ये हँसि हँसि कै कमल फिरावत वै दोउ नयन नचावैं। ये पीताम्बर लै जु उड़ावैं वे मधुरेसुर गावैं ॥ ३ ॥ रीझे रसिक परस्पर दोऊ हरीचन्द मन माहीं। ये इत अपनो रथ

[illegible] मैं न [illegible] नाहीं ॥ ४ ॥ १२७॥

[illegible] आसावरी

ठाढ़ो [illegible] पद [illegible] अर्ज [illegible]
[illegible] तारें [illegible] भये हौ ।
[illegible] त्रिभुवन [illegible] तब [illegible]
[illegible] सिर [illegible] हौ ॥ १ ॥ [illegible] और
[illegible] आप अन्तरयामी प्रगट किया
[illegible] हौ । हरीचन्द [illegible] मुनि
[illegible] हृदय में आज प्रगट भये [illegible]
हौ ॥ २ ॥ १२८ ॥

राग—[illegible]

[illegible] आजु गोपिका [illegible] यमुना पुलिन
[illegible] कोमल [illegible] जहँ [illegible] ॥ १ ॥
[illegible] पूरण [illegible] नित
[illegible] निकर
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] सुवास । [illegible] मंद
मंद [illegible] जाहि हरि [illegible] ॥ ३ ॥
बजत मृदंग [illegible] चंग [illegible]
[illegible] रंग [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ मुरली [illegible]
[illegible]

ताल ताल करिहास ॥ ५ ॥ उघटत श्रीराधे राधे मधुर धुनि बन सब आस । हरिराधा की बचन रचन लखि बलिहारी हरिदास ॥ ६ ॥ ११९ ॥

स्फुट—देश ।

बेग आवो प्यारे बनवारी हमारी ओर ॥ध्रु०॥ दीन बचन सुनतै उठिधावो नेकु न करहु अबारी ॥१॥ कृपासिंधु छांड्यो निठुराई अपनो बिरद सम्हारी ॥ थानै जगदीन दयाल कहै क्यों हमारी सुरत बिसारी ॥ २ ॥ प्राण दान दीजो मोहि प्यारा हौंछू दासी प्यारी ॥ क्यों नहिं दीन बचन सुनो लालन कौन चूक छे म्हारी ॥३॥ तलफैं प्राण रहैं नहिं तनमा बिरह ब्यथा बाढ़ी भारी ॥ हरीचन्द गहि बांह उबारौ तुमतो चतुरबिहारी ॥४॥१२०॥

बिहार ।

वे देखो पौढ़े ऊंचे महल दोऊ झलकत रूप झरोखन आई ॥ ध्रु० ॥ हँसनि मुरनि बतरानि परस्पर कछुक दूर ते परत लखाई ॥१॥ फैलीअंग प्रभा दीपक में जालरंध्र सों घिरि घिरि आई । हरीचन्द कंकन किंकिनि रव निशि के उछीर भरो मधुर कछु सुनाई ॥ २ ॥ १२१ ॥

रथयवा ।

वह देखो सखि सेन ध्वजा फहरात । ज्यों ज्यों

रथ नियरे आवत है त्यों त्यों मन अकुलात ॥१॥ खंजन से भये नैन सखी के चक्रित इत उत डोलैं। आवत प्राण नाथ रथ चढ़ि कै सजनी यहु मुख बोलैं ॥२॥ जहँ लगि दृष्टि जात प्यारी की यहं छबि होत रसालैं। मानहु आदर सों पिय के हित कमल पांवड़े डालैं ॥ ३ ॥ अति अनुराग संग बैठन को प्यारी मन की जानी। हरीचन्द लै रथ बैठाये तिया अतिहि सुख मानी ॥ ४ ॥ १२२ ॥

पालना।

वारी वारी हों तेरे मुख पै वारी मैं तेरे लटकन पै वारी। पलना झूलो हो हठ छांड़ो बलि बलि गइ महतारी ॥ १ ॥ छोटी सी दुलहिनि तोहिं ब्याहौं अपने बाबा की दुलारी। तुम झूलो हौं हरषि झुलावों हरीचन्द बलिहारी ॥२॥१२३॥

वारी मेरे लालन झूलो पेलना। हौं बलि जाउँ बदन की मोहन मानहु बात हमारी ॥ १ ॥ माखन लेहु ललन ब्रज जीवन बारने गै महतारी। अँचरा छोरहु तुमहिं झुलाऊं हरीचन्द बलिहारी ॥ २ ॥ १२४ ॥

स्फुट—यथारुचि।

सखी मेरे नयना भये चकोर ॥ ध्रु० ॥ अनु-

दिन निरखत श्याम चंद्रमा सुन्दर नन्दकिशोर ॥१॥ तनिक बियोग भये उर बाढ़त बहुविधि नयन मरोर ॥ होत न पलकी ओट छिनकहूं रहत सदा दृग जोर ॥२॥ कोउन इन्हैं छुड़ावन हारो अरुझे रूप झकोर । हरीचन्द नित छटे प्रेमरस जानत सांझ न भोर ॥ ३ ॥ १२५ ॥

गरमी को पद ।

सखी मोंहिं ग्रीष्म अति सुखदाई ॥ ध्रु० ॥ जामें शोभा श्याम अंग की प्रतिक्षण परत लखाई ॥ १ ॥ बिनु अंतर पट मिलत पियारो अंगअंग सों लाई । हरीचन्द लखि कै सुख पावत गावत केलि बधाई ॥ २ ॥ १२६ ॥

फूलसिंगार ।

सखियन आज नवल दुलहिन को फूल सिंगार बनायो हो ॥ फूलन के आभरण मनोहर रचि-रचि कै पहिरायो हो ॥ १ ॥ फूलनि बेनी गुही मनोहर फूलन मौर सुहायो हो । फूलन के कँगना कर बांधे फूलनि मण्डप छायो हो ॥ २ ॥ फूलनि चोली फूलनि सारी फूलनि लहँगा भायो हो ॥ दुलहिन दुलहा गांठि जोरि कै एक पास बैठायो हो ॥ ३ ॥ फूली फूली सब सखियन

मिलि फूल्यो मंगल गायो हो ॥ फूली जोरी देखि नयन सों हरीचन्द सुख पायो हो ॥४॥१२७॥

मकरसंक्रान्ति—टोड़ी।

सुखद अति खिचरी को त्योहार॥ मिलि बैठे दोउ कुंज सखीरी नीके नयन निहार ॥ १ ॥ पहिरि छीटवारो अति सुन्दर ओढ़े सुखद रजाई॥ शिशिर प्रवेश दिखावत गावत तान मान सुख-दाई ॥ २॥ सखी सबै मिलि नेम पुजावत करत युगुल की सेवा ॥ ताती खिचरी भोग लगावत भेंट करत बहुमेवा ॥ ३ ॥ करत दान तिलगौर-श्याम दोउ हँसि हँसि पीतमप्यारी ॥ हरीचन्द जनि रीझि प्राण धन डारत छिन छिन वारी ॥ ४ ॥ १२८ ॥

टिपारे की पद—मलार।

सखीरी ठाढ़े नंद कुमार ॥ शुभग श्यामघन सुख रस बरसत चितवन मांझ अपार ॥ १ ॥ नटवर नवल टिपारो शिरपर लखि छबि लाजत मार ॥ हरीचन्द बलि बूंद निवारत जब बरसत घनधार ॥ २॥ १२९ ॥

श्रीगिरिधरजी की बधाई।

सदा तुम मायाबाद निवारेउ ॥ जब जब

प्रबल भयो मिथ्यामत तब तब प्रकट बिदारेउ ॥१॥ प्रथमहि होय बिष्णु स्वामी प्रभु यह मारग बिस्तारेउ ॥ फिरि श्रीबल्लभ ह्वै अगिनि काठ कटु माया मतछिन जारेउ ॥२॥ अबके काशी लखि असुरासी उधरन तासु बिचारेउ ॥ कृष्णावति ते श्रीगोपाल गृह यदुकुल द्विज अवतारेउ ॥ ३ ॥ नाम जगत गुरु सुनत श्रवणपुट पावन अमृत पारेउ ॥ कियो ग्रंथ बहुघर थिर थाप्यो माया बाद बिदारेउ ॥ ४ ॥ श्रीगिरिधर गिरिधर ह्वै प्रकटे पुष्ट पंथ गिरिधारेउ ॥ प्रबल प्रबाह इन्द्र धारा सों निज ब्रजलोग उबारेउ ॥५॥ काशी-में गोकुल करि दीन्हो श्रुति रहस्य उच्चारेउ ॥ हरीचन्द को जानि आपनो करुणा करि निशि तारेउ ॥ ६ ॥ १३० ॥

असीस—यथारुचि ।

सदा ब्रज सुवस बसो बरसानो ॥ जहँ प्रगटी रस की निधि राधे बाजत प्रगट निशानो ॥१॥ युग युग अबिचल राज राज्यो दोउ रावलि अरु महारानो ॥ हरचिन्द के शीश रहौ नित नील पीत को बानो ॥ २ ॥ १३१ ॥

बिहार—रागबिहाग।

सुन्दर सेजन बैठे प्रीतम प्यारी। झिल मिलात दीप ज्योति रंग भरे संग दोऊ सोवत ऊँची अँटारी ॥ १ ॥ रिझवत हिलि मिलि करि रस बतियां फैली बदन उजियारी। दीप सों परस्पर मुख अवलोकत हरीचन्द बलिहारी ॥२॥१३२॥

टीनवा।

श्रीबल्लभ की सरि करै कौन। प्रगटे प्रभु गुविन्दमनवाहक भक्त कारने जौन ॥१॥ परम पतित तारण करुणामय रसनिधि बुधता भौन। हरीचन्द जो इनहिं भजत नहिं महा अभागे तौन ॥२॥१३३॥

श्रीबल्लभ प्रभु मेरे सरबस। पचो वृथा करि योग यज्ञ कोउ हम को तो इक इहै परमरस ॥१॥ हमरे मात पिता पति बन्धू हरि गुरु मित्र धरमधन कुलजस। हरीचन्द एकहि श्रीबल्लभ तजि सबध्यान भये इन के बस ॥ २ ॥ १३४ ॥

श्रीबड़े गिरिधर जी की पद।

श्रीबिठ्ठलसुत गुणनिधान श्रीरुक्मिणी जीवनप्रान बन्दे श्रीगिरिधर प्रभु षटगुण सम्पन्न धीर। अतिही रिझवार रसिक सकल कलागुण प्रवीण बन्धुन शिर छत्रछाँह मेटत जन पीर ॥१॥ सेवारस परसपात्र पण्डित जन मण्डित कर

खंडित कृत माया मति छंडित भवपीर। श्री रानी प्राणनाथ गावत श्रुति बिशदगाथ हरीचन्द हाथ माथ धरत बलबीर ॥ २ ॥ १३५ ॥

श्रीघुरनाथ जी को पद।

श्रीबिठ्ठलनन्दन जग बन्दन जय जय श्री रघुनाथ। जानकिरमन शमनजन अघशत पितु पद रजगुण गाथ ॥ १ ॥ सेवारोचक मोचक भवरुज कृत बल्लभी सनाथ। हरीचन्द अनुभव बियोग कृत सदा सहायक साथ ॥२॥१३६॥

श्रीगोपीनाथ जी को पद।

श्रीबल्लभसुत प्रथम प्रगट लीला रसभाव गुप्त जय जय श्रीगोपीनाथ भक्तन सुखदाई। गावत गुण बेदचार तऊनहिं पावैंपार महिमा कोउ कहि न सकत गोपबंश राई ॥ १ ॥ पुष्टि-पथ करण काज प्रगटे हैं भूमि आज गावत सब ब्रजजन मिलि आनँद बधाई। हरीचन्द जस गावै बहुत बधाई पावै देखत त्रौलोक सब बलि बलि जाई ॥ २ ॥ १३७ ॥

श्रीबल्लभ गृह महा मंगल भयो प्रकट भये श्री गोपीनाथ ॥ मर्यादा श्रुतिरूप रमणहित संकर्षण जन कियो सनाथ ॥१॥ अक्षर ब्रह्मरूप

शुभ सोहत अनुजधाम जगधाम स्वरूप ॥ योग ज्ञान कर्म्मादिक मारग थापन॥ हित प्रगटे द्विज भूप॥ २॥ संवत पन्द्रहसौ शुभ सरसठि आश्विन कृष्ण द्वादशी जानि॥ श्री महालक्ष्मीजी के उदर ते प्रगटे हैं सब सुख की खानि ॥३॥ पुष्टि प्रवेश हेतु अधिकारी करन कियो लीला बिस्तार॥ कहि जय जय बल्लभ सुत दोऊ हरीचन्द जन भयो बलिहार ॥ ४ ॥ १३८ ॥

श्री घनश्यामजी को पद ।

श्रीबिठ्ठल घर अतिहि उछाह ॥ रानी पद्मावति सुत जायो पूरी अपने जन की चाह ॥१॥ आंश्विन बदी तेरसि रबिबासर बाढ्यो गोकुल प्रेम प्रवाह ॥ हरीचन्द बैराग प्रगट गुण जय जय जय श्रीकृष्ण वतीनाह ॥ २ ॥ १३९ ॥

श्री गोबिन्दरायजी को पद ।

श्रीगुबिन्द राय जयति सुन्दर सुखधाम ॥ देवि देव मेटि सकल कृष्णरूप थापननित सुन्दर बररूप निज भक्तन अभिराम ॥१॥ सुन्दर मर्याद रूप लोकरीति स्वबश भूप श्रीभागवत थापन सुख मय सुआद जाम ॥ हरीचन्द बिठ्ठलसुत-भक्ति भाव भूरि संयुतराज भाववंनसे हरि सुजन पूरण काम ॥ १ ॥ १४० ॥

श्रीबालकृष्णजी को पद।

श्रीरुक्मिणिनन्दन जय जग बन्दन बाल कृष्ण सुख धाम॥ सुन्दररूप नयन रतनारे भक्तन पूरण काम॥१॥ रसबात्सल्य करन अनुभव नित बिरह बिधूनन हरि मुखनाम॥ हरीचन्द बिठ्ठल सुख दायक प्रिय उनहरि रूप अभिराम॥२॥१४१॥

श्री गोकुलनाथजी कोपद।

श्रीबल्लभ निजमत राखि लियो॥ जीति सभा बादी कठोर बहु माला तिलक दियो॥१॥ अद्भुत अचरज बहुत दिखाये खल नृप निरखि भियो॥ हरीचन्द मर्याद राखि निज जगजस प्रगट कियो॥ २॥ १४२॥

श्रीयदुनाथजी को पद।

श्री यदुपति जय जय महराज॥ बिरह गुप्त अनुभवत प्रगटि जग महं बिरागँ को साज॥१॥ निवसत रह लघु कहत सुनत लहु छांड़ि जगत के काज॥हरीचन्द परमारथ पूरण गोविंद भक्ति जहाज॥ २॥ १४३॥

सांझी को पद।

आजु दोउ खेलत सांझी सांझ। नन्द किशोरी राधा गोरी जोरी सखियन मांझ॥ १॥ कुसुम जुनन में रुनझुन बाजत करचूरी पगझांझ।

हरीचन्द विधि गरबगरूरी भई रूप लखि बांझ ॥ २ ॥ १४४ ॥

महारानी तिहारो घर सुफल फलो । सुनरी कीरति तैं कन्या जनि सब ब्रजजन को कियो भलो ॥ १ ॥ कोउ गावत कोउ हँसत मोदभरि कोउ अति आनन्दरलो । देखि चन्द्र मुख कुवँरि लली को वारि फेरि तनमन सकलो ॥२॥ आनँद मगन सबै ब्रजबासी सब जिय को दुख पगनि-दलो । हरीचन्द युगयुग चिरजीवो युगल कहानी युगुल चलो ॥ ३ ॥ १४५ ॥

दीनता—यथारुचि ।

हमारे निर्द्धन की धन राधा । साधन कोटि छोड़ि इनहीं को चरण कमल अवराधा ॥ १ ॥ इनके बल हम गिनत न काहू करत न जिय कोऊ साधा । हरीचन्द इन नख शिख मेरी हरी तिमिर भवबाधा ॥ २ ॥ १४६ ॥

श्रीमद्दा प्रभुजी की बधाई ।

आजु ब्रजसांची बजत बधाई ॥ रतिपथ प्रगट करन को द्विजबपु बल्लभ प्रगटे आई ॥ १ ॥ दैवीजन हित कारन भूतल लीला फेरि दिखाई । हरीचन्द भूले लखि निज जन लियो बांह गहि धाई ॥ २ ॥ १४७ ॥

आजु प्रेम पथ प्रगट भयो भुव जन में श्रीवल्लभ पूरण काम ॥ कठिन काल कलि देखि दया करि आपुहि चलि आये द्विजधाम ॥ १ ॥ बहे जात अपने जन, लखिकै धर्‍यो बांह गहि कहि हरिनाम ॥ हरीचन्द रसमय बपु सुन्दर एकै राधा सुन्दरश्याम ॥ २ ॥ १४८ ॥

निजपथ प्रगट करन कों द्विज ह्वै आपुहि प्रगट भये हरि आज ॥ माधव कृष्ण एकादशि गुरु दिन लक्ष्मणभटग्रह पूरण काज ॥ १ ॥ दैवीजन मन अति हुलासाने फूल्यो ब्रजको सकल समाज ॥ हरीचन्द मिलि नाचत गावत मिले भक्तजन ताजि जगलाज ॥ २ ॥ १४९ ॥

आजु ब्रज घर घर बजत बधाई ॥ द्विजबपुलै नँदनन्दन प्रकटे लक्ष्मन भट घर आई ॥ १ ॥ फेर वहै लीला सोई रस निजजन हेत दिखाई ॥ हरीचन्द से अधमजानि निज तारे भुजगहि धाई ॥ २ ॥ १५० ॥

मान को पद—यथारुचि ।

नेकु निहारु नागरीहौं बलि ॥ इती रुखाई प्राण पियापै मान न करु सिखमानरी उठि चलि ॥१॥ फूलत लय बिरचत तउप्यारो बिरह हुता-

सन जात चले गलि ॥ तूइत बैठी भौंह तनेनत नहिं सोहात मोहिं यह रूखो कलि ॥२॥ खसित निशानायक पश्चिम दिशि आधीसो बढ़िरैन चली ढलि ॥ अरुनशिखा धुनि सुनियत कहुँ कहुँ शीरीपवन चली सुगंध रलि ॥ ३ ॥ बलि किन कुँजभवन तू भामिनि अपनी सौतिन को छलबल छलि ॥ प्रथम मान पुनि सहजहि मिलिबो सुनि बैरिनि रहि जैहैं जलि जलि ॥ ४ ॥ कसि कंचुकि नयनन दै काजर नूपुर छोड़ि अतर अंगन मलि बिन बिलम्ब उठि मिलु प्यारे सों बिरह दवागि-मिले श्रमजलदलि ॥ ५ ॥ भागभरी अनुरागभरी सखि पीतम सरस सोहाग फलनफलि ॥ हरीचन्द सखिसाथ गमन छबि नयननते नहिं जाइ कबहु टलि ॥ ६ ॥ १५१ ॥

अथ कार्तिक स्नान ।

नील गौर दुति अति मधुर · सब ब्रज जन चित चोर ।
जय जय विरहा तपसमन · राधा नन्दकिशोर ॥ १ ॥
जुगल जलद केकी जुगल · दोऊ चन्द चकोर ।
उभय रसिक रसरास जय · राधा नन्दकिशोर ॥ २ ॥
जल तरंग बुधि प्रान पुनि · दीप प्रकाश समान ।
जुगल अभिन्नहु दोय बपु · जय राधा भगवान ॥ ३ ॥
नलिन नयन अमृत बयन · वेनुवाद्यरत धीर ।
राधासुखमधुपानरत · जय जय जय बलबीर ॥ ४ ॥
बिनु हरि राधा पद भजन · नाहि न और उपाय ।
क्यों मन तू भटकत वृथा · जगत जाल फंसि धाय ॥ ५ ॥
मथि कै वेद पुरान बहु · यहै लह्यौ इक सार ।
राधा माधव चरन भजु · तजु जप जोग हजार ॥ ६ ॥
भ्रमि मत तू वेदान्त बन · वृथा अरे मन मोर ।
चलु कलिन्दजा कुंज तट · लखु घन श्याम किशोर ॥ ७ ॥
शास्त्र एक गीता परम · मन्त्र एक हरि नाम ।
कर्म एक हरि पद भजन · देव एक घनश्याम ॥ ८ ॥
विधि निषेध जग के जिते · तिन को यह सिर मौर ।
भजनो इक नन्दलाल पद · तजनो साधन और ॥ ९ ॥
साधक गन सों तुम सदा · छिपत फिरत ब्रजराय ।
अति अंधियारो मम हृदय · तहां छिपत किन आय ॥ १० ॥
वेद कहत जग विरचि हरि · व्यापि रहत ता माहिं ।
मम हिय जग बाहर कहां · जो इत व्यापत नाहि ॥ ११ ॥
तुमहिं रिझावन हित सज्यो · लख चौरासी रूप ।
रीझि देहु गति खीझि कै · बरजहु मोहि ब्रजभूप ॥ १२ ॥
कोउ जप संजम करी · कोउ तप ध्यान ।

मेरे साधन एक हरि । सपनेहु रुचत न आन ॥ १३ ॥
नर्क स्वर्ग औ ब्रह्मपद । के चौरासी माहिं ।
जहां रहौं निज कर्मबस । छुटै कृष्णरति नाहिं ॥ १४ ॥
कृष्ण नाम मुख सों कढ़ी । सुनौ कृष्ण जस कान ।
मन मैं कृष्ण सदा बसौ । नयन लखौं हरिध्यान ॥ १५ ॥
चोरि चीर दधि दूध मन । तुरत चुहत ब्रजराय ।
मेरे हिय अंधियार मैं । तौ न छिपत क्यौं आय ॥ १६ ॥
सुनत दूध दधि चीर मन । हरत फिरत ब्रज राय ।
तौ अघ मेरे किन हरत । यह मोहि देहु बताय ॥ १७ ॥
कृष्ण नाम मनि दीप जो । हिय घर मैं न प्रकाश ।
दीप बहुत बारे कहा । हिय तम भयो न नाश ॥ १८ ॥
जय जय श्रुति पद बन्दिनी । कीर्त्तिनन्दिनी बाल ।
हरि मन परमा नन्दिनी । कन्दिनि भव भय जाल ॥ १९ ॥

सोरठा ।

जय जय परमानन्द । कृपा कन्द गोविन्द हरि ।
जय जय जसुदानन्द । नंदानंदन दुंद हर ॥ २० ॥

कवित्त ।

पूजि के कालिहि सबु हतौ कोउ लच्छमी पूजि महा धन पायो ।
भेइ सरस्वति पंडित होउ गनेसहि पूजि कै विघ्न नसायो ॥
त्यों हरिचंद जू ध्याइ शिवै कोऊ चार पदारथ हाथ ही लायो ।
मेरे तो राधिका नायक ही गति लोक दोऊ रही कै नसि जायो ॥ १ ॥
सन्ध्या जू आपु रहो घर नीकी नहान तुम्है है प्रणाम हमारी ।
देवता पित्र छमौ मिलि मोहि अराधना होइ सकै न तुम्हारी ॥
बेद पुरान सिधारी तहां हरिचंद जहां तुम्हरी पतियारी ।
मेरे तो साधन एक ही है जग नंदलाल वृषभानदुलारी ॥ २ ॥

भजन ।

जय वृषभानुनन्दिनी राधा । शिव ब्रह्मादि जासु पदपंकज हरि बस हेतु अराधा ॥ करुनामयी प्रसन्न चन्दमुख हंसत हरति भवबाधा । हरीचंद ते क्यौं जग जीवत जिन नहिं इनहिं अराधा ॥ १ ॥

जय जय हरि नन्दनंद पूर्णब्रह्म दुख निकंद परमानंद जगत बंद सेवक सुख-दाई। परम जस पवित्र गाथ दीनबन्धु दीननाथ स्रवन दरस ध्यान सुखद गोवर्द्धन राई ॥ गोप गोपिकादि पाल सतत असुर बंस काल सकल कला गुन निधान कीरति जग छाई। हरीचंद प्राननाथ कीर्तिसुता लिए साथ पावन गुन अवलि बिमल श्रुति गन नित गाई ॥ २ ॥

मेरी गति छोड सोई महारानी। जासु भौंह की हिलनि बिलोकत निसु दिन सारंग पानी ॥ खेलन में कबहूं जो आंचर उड़त बात बस जाको। रिसि मुनि बंदित हू हरि मानत परम धन्य करि ताको ॥ परम पुरुष जो जोग जग्य जप क्यों हू लख्यौ न जाई। सो जा पद रज बस निसि बासर तुरत हि प्रगटत आई ॥ ग्रामबधूटी जा कटाच्छ बल उमा रमाहि लजावें। हरीचंद ते महा मूढ़ जे इनहिं न अनुछिन ध्यावें ॥ ३ ॥

जय जय श्री वृंदावन देवी। अखिल विश्वनायक पुरुषोत्तम जा पद पंकज-सेवी ॥ जो निज दृष्टि कोर सों जग के जीवहि नितहि जिआवै। परमानंद घनहु पै जो निज आनंद कन बरसावै ॥ जगत अधार भूत परमातम जिय अधार सो ताकी। हरीचंद स्वामिनि अभिरामिनि तुल न जगत में जाकी ॥४॥

विपुल वृंदा विपिन चक्रवर्ती चतुर रसिक चूड़ा रतन जयति राधारमन। गोप गोपी सुखद भक्त नयनानंदा बिरहि जन कोटि सन्ताप सन्तति समन ॥ जयति गिरिराज धृत बास अंगुरि नखन जयति छात बेनु रव मत्त गज गति गमन। अघ बकी बक सकट पूतनादिक काल.जयति हरिचंद हित कारन कालिय दमन ॥ ५ ॥

जय जय गोवर्द्धनधर देव। जय जय देव राज मद मर्दन करत सकल सुर सेव ॥ जय जय श्रुति जस गावत निसि दिन पावत तऊ न भेव। जय जय हरीचन्द्र रच्छण कृत दीन उधारन टेव ॥ ६ ॥

बाजी नैननहीं में लागी। रसिकराज इत उत श्रीराधा परम प्रेम रस पागी ॥ दोऊ हारे दोऊ जीते आंपुस के अनुरागी। हरीचंद निज जन सुख-दायक रहे केलि निसि जागी ॥ ७ ॥

हम में कौन बड़ो री प्यारी। ठाढ़ी होउ बराबर मापें बिहंसि कह्यौ गिरधारी ॥ सुनत उठी वृषभानुनंदिनी खरी भई समुहाई। पद अंगुरी बल उचकि पिया सों बढ़वन चहत उंचाई ॥ सुंदर सुख आपुहि ढिग आवत लखि चूम्यौ पिय प्यारे। हरीचंद लजि हंसि भुव निरखत पिया कह्यौ हम हारे ॥ ८ ॥

राग बिहाग दीपावली।

करत मिलि दीपदान ब्रजबाला। जमुना सों कर जोरि मनावत मिलें पिया नन्दलाला॥ न्हान दान जप जोग ध्यान तप संजम नियम बिसाला। इन के फल में हरीचंद गल लगे कृष्ण गुन वाला॥ ९॥

अरी तू हठ नहिं छाड़त प्यारी। दीपदान में मगन ह्वै रही भूलि गई गिरिधारी। तेरे बिनु उत बिनहीं दीपक बिरह अगिनि संचारी। हरीचंद पीतम गर लगि कै करु त्योहार दिवारी॥ १०॥

हमारे ब्रज के है मणि दीप। पुष्पराग श्रीराधा मरकत गोबिंद गोप महीप। सदा प्रकाश करत ब्रज मंडल ब्रंदाबन अवनीप। हरीचंद सुमिरत बियोगतम कहुं नहि रहत समीप॥ ११॥

राग बिहाग चौताला।

अरी हौं बरजि रही बरज्यौ नहिं मानत सबै छोरि कृष्ण प्रेम दीप जोरि। भरि अखंड दै सनेह एक लौ लगाइ वा सों मन बाती राखु ता में नित्य बोरि॥ बिरह प्रगट करि जोति सों मिलाइ जोति करि पतंग नेम धरम लाज ओट डारि छोरि। हरीचंद कह्यो मानि देखि है तू प्रीति पन्थ भाजी गो बियोगतम सुख मोरि॥ १२॥

राग बिहाग दीपावली।

आजु गिरिराज के उच्चतर शिखर पर परम शोभित भई दिव्य दीपावली। मनहुं नगराज निज नाम नग सत्य किय बिबिध मणि जटित तन धारि हारावली॥ औषधी गन मनहुं परम प्रज्वलित भईं किधौ ब्रजबासहित बसी तारावली। दास हरिचंद मन मुदित छबि देखि कै करत जै जै बरषि देव कुसुमावली॥ १३॥

आजु तरनि तनया निकट परम परमा प्रगट ब्रजबधुन मिलि रची दीप माला। जोतिजाल जगमग जगत दृष्टि थिर नहिं लगत छूट छबि की परत अति बिसाला॥ खड़ीं नवल बनिता बनी चार दिसि छबिसनी हंसहिं गावहिं बिबिध ख्याला। निरखि सखी हरीचंद अति चकित सी ह्वै कहत जयति राधे जयति नंदलला॥ १४॥

आजु ब्रज छवि की लूट परै। इत नन्दलाल लाड़िली इत उत दीपक ज्योति बरै॥ इत सहचरी ललित ललितादिक सुरकुल चंवर ढरै। इत जरतार तास बागो उत भूषण झलक भरै॥ इत नवखण्ड सीस महला उत दुगनित बिंब परै॥ इत बादलन लपेटी झालर झल बीर झलरै॥ इत सारी कोरन सों मुकुता मानिक हीरझरै। जमुना जल प्रतिबिंब सुहायो जल छवि मिलि लहरै॥ हरीचन्द मुख चन्द मिलो सब रवि ससि गरब हरै॥ १५॥

आजु संकेतन दीपक बारे। निकट जानि गोवर्द्धनघटियां अपने हाथ सवांरे॥ किये प्रकासित गहवर गिरि थल कुंजपुंज प्रजसारे हरीचन्द अपनी प्यारी की बाट निहारत प्यारे॥ १६॥

अरी तू उठि चलि प्यारी दीपमण्डल ते क्यों शोभा हरि लेत। तेरे मुख प्रकास दीपकगण मन्द दिखाई देत॥ मंद परे आभा सब मेटी झिलमिलि झिलोने सेत॥ हरीचन्द तू दूरि बैठि के कर त्यौहार सहेत॥ १७॥

ईमन।

कबिन सों सांचेहि चूकपरी। दीप सिखा की उपमा जिन तुलि प्यारी हेत धरी॥ वह दाहत यह अंग जुड़ावति वह चंचल थिर येह। वह निज प्रेमिन परम दुखद यह सदा सुखद पिय देह॥ ब्रज में धूम स्वच्छ अति ही यह रैनि दिना इकरास। वह परिछिन्न और बस यह निज बस सर्वत्र प्रकास॥ वह सनेह आधीन और के यह संदेह भरपूर! हरीचन्द दीपक प्यारी की नहिं कोउ बिधि समतूर॥ १८॥

जमुन जल बढ़ी दीप छवि भारी। प्रतिबिम्बित प्रतिबिंब लहरि प्रति तहं राजत पिय प्यारी॥ तैसी ही नभ तर तारावलि तरल वायु गुन होई। तैसेहि उठत गगन गुब्बारे छुटत दारु गति जोई॥ अवनि नीर आकास प्रकासित दीपहि दीप लखाई। मनु ब्रज मण्डल ज्योति रूपता अपनी प्रगट दिखाई॥ मुख प्रकास रंजित सब ही थल सोभा नहिं कहि जाई। हरीचन्द राधे मन मोहन रहे त्यौहार मनाई॥ १९॥

तव बिनु पिय को घर अंधियारो॥ जदपि चहूंदिसि प्रगटि ख्वासमद
त संचारो॥ कछु न लखात ताहि अति व्याकुल दृग झर लावत भारो। प्रिये प्रिये कहि प्रति कानन में ढूंढ़ि रहत घर सारो॥ तू इत बैठी बदन बनाये उत वह बिकल बिचारो॥ हरीचन्द उठि चलुरी प्यारी लाउं गरे पिय प्यारो॥ २०॥

भारतेंदु हरिश्चन्द्र कृत ग्रन्थ जो बिक्री के लिये तयार है ।

१	नाटक	।=)
२	सत्यहरिश्चन्द्र ...	।=)
३	मुद्राराक्षस ...	॥)
४	हिंदी भाषा ...	=)
५	कर्पूरमंजरी ...	≡)
६	चंद्रावली ...	॥)
७	विद्यासुंदर ...	।)
८	भारतजननी ...	=)
९	भारत दुर्दशा ...	।)
१०	नीलदेवी ...	≡)
११	माधुरी ...	-)
१२	पाखंडविडम्बन ...	=)
१३	अंधेरनगरी ...	=)
१४	दुर्लभ बन्धु ...	॥)
१५	भाण ...	=)
१६	धनंजय विजय ...	।)
१७	सतीप्रताप ...	=)
१८	वैदिकीहिंसाहिंसानभवति	≡)
१९	प्रेमयोगिनी ...	=)
२०	काश्मीरकुसुम ...	॥)
२१	महाराष्ट्र देश का इतिहास	-)
२२	बूंदीराजवंश ...	/॥)
२३	रामायण का समय	/॥)
२४	अगरवालों की उत्पत्ति	-)
२५	खत्रियों की उत्पत्ति	॥)
२६	उदयपुरोदय ...	।)
२७	बादशाहदर्पण ...	॥=)
२८	पुरावृत्त संग्रह ...	॥)
२९	कार्त्तिक नैमित्तिक कर्म	।)
३०	युगलसर्वस्व ...	॥)
३१	भक्तसर्वस्व ...	।)
३२	विजयनी विजय वैजयंती	=)
३३	मनोमुकुलमाला ...	।)
३४	गोमहिमा ...	=)
३५	रसबरसात ...	=)
३६	प्रेमाश्रुवर्षण ...	=)
३७	पुरुषोत्तम मासविधान	=)
३८	मल्लारजयंन्ती कजली संग्रह	=)
३९	वर्षाविनोद ...	।)
४०	चरितावली ...	॥)
४१	भक्तमाल ...	।)
४२	हिन्दी व्याकरण ...	-)
४३	वेश्यास्तोत्र ...	=)
४४	तदीय सर्वस्व ...	॥)
४५	वैष्णवता और भारतवर्ष	=)
४६	संगीतसार ...	≡)
४७	प्रेमप्रलाप ...	।)
४८	प्रेमफुलवारी ...	।)
४९	मल्लारावली ...	≡)
५०	मानसोपायन ...	।)
५१	श्रीवल्लभीय सर्वस्व	।)
५२	वैष्णव सर्वस्व ...	।)

विजयते जीवितेशः ।

इस छोटे से ग्रन्थ में मेरे बनाए कीर्त्तनों में से कतिपय कीर्त्तन एकत्र किए हैं । इस में कीर्त्तन तीन भांति के हैं एक तो लीला सम्बन्धी दूसरे दैन्य भाव के और तीसरे परम प्रेममय पवित्र अनुभव के हैं । इस्को एकत्र करना और छपवाना अप्रयोजन था क्यौंकि एक तो संसार में प्रायः अनधिकारी लोग हैं दूसरे इस्के द्वारा लोगों में अपनी प्रसिद्धि की इच्छा नहीं तथापि परम प्रीति से यह प्रेम पुष्प ग्रथित मालिका उसी के श्रीकंठ में समर्पित है जो इस्में गाया गया है ।

हरिश्चन्द्र ।

श्रीजीवितेश्वरो जयति ।

प्रेममालिका ।

राग यथारुचि ।

प्यारी छबि की रासि बनी । जाहि बिलोक निमेष न लागत श्रीवृषभानुजनी ॥१॥ नंदनंदन सो बाहु मिथुन करि ठाढ़ी जमुना तीर । करक होत सौतिन के छबि लखि सिंह कमर पर चीर ॥२॥ कीरति की कन्या जगधन्या अन्या तुला न वाकी। वृश्चिक सी कसकत मोहन हिय भौंह छबीली जाकी ॥३॥ धन-धन रूप देखि जेहि प्रतिछिन मकरध्वजतिय लाजै। जुग कुच कुंभ बढ़ावत सोभा मीन नयन लखि भाजै ॥४॥ बैस संधि संक्रोन समय तन जाके बसत सदाई । हरीचंद मोहन बड़भागी जिन अंकम करि पाई ॥५॥ १ ॥

आजु तन नीलाम्बर अति सोहै । तैसेही केश खुले मुख ऊपर देखत ही मन मोहै ॥१॥ मनु तम गन लियो जीति चन्द्रमा सो तिन मध्य बंध्यौ है। कै कवि निज जिजमान जूथ में सुंदर आइ बस्यौ है॥२॥ श्रीजमुनाजल कमल खिल्यौ कोऊ लखि मन अलि ललच्यौ है । जीति तमोगुन कों

ताके सिर मनु सतगुन निबस्यौ है ॥३॥ सघन तमाल कुंज मैं मनु कोऊ कुंद फूल प्रगट्यौ है। हरीचंद मोहन मोहनि छबि बरने सो कवि को है ॥४॥ २ ॥

राग सारंग।

अहो पिय पलकन पैं धरि पाव। ठीक दुपहरी तपत भूमि मैं नागे पद मत आव ॥ १ ॥ करुना करि मेरो कह्यौ मानि कै धूपहिं मैं मति धाव। मुरझानो लागत मुख पंकज चलत चहूं दिसि दाव ॥२॥ जा पद को निज कुच अरु कर पै धरत करत सकुचाव। जाको कमला राखत है नित कर मैं करि करि चाव ॥३॥ जामैं कली चुभत कुसुमन की कोमल अतिहि सुभाव। जो मम हृदय कमल पैं बिहरत निसि दिन प्रेम प्रभाव॥४॥ सोंई कोमल चरनन सों मो हित धावत हौ ब्रजराव। हरीचंद ऐसी मति कीजै सह्यौ न जात बनाव ॥५॥ ३ ॥

नैना मानत नाही मेरे नैना मानत नाहीं। लोक लाज सीकर मै जकरे तऊ उतै खिच जाहीं॥१॥ पचिहारे गुरजन सिख दैकै सुनत नहीं कछु कान। मानत कह्यौ नांहि काहू को जानत भए अजान॥२॥

निज चवाव सुनि औरहु हरखत उलटी रीति चलाई । मदिरा प्रेम पिये पागल ह्वै इत उत डोलत धाई ॥३॥ परबस भए मदन मोहन के रंग रंगे सब त्यागी । हरीचंद तजि मुख कमलन अलि रहैं किते अनुरागी ॥ ४ ॥ ४ ॥

नैन भरि देखि लेहु यह जोरी । मन मोहन सुंदर नट नागर श्रीवृषभानुकिसोरी ॥१॥ कहा कहूं छबि कहि नहि आवै वे सांवर वह गोरी । ये नीलांबर सारी पहिने उनको पीत पिछोरी ॥२॥ एक रूप एक बैस एक बय बरनि सकै कवि कोरी । हरीचंद दोउ कुंजन ठाढ़े हंसत करत चित चोरी ॥३॥ ५ ॥

सखीरी देखहु बाल बिनोद । खेलत रामकृष्ण दोउ आंगन किलकत हंसत प्रमोद ॥ १ ॥ कबहुं घुटुरुअन दौरत दोउ मिलि धूर धूसरित गात । देखि देखि यह बाल चरित छबि जननी बलि बलि जात ॥२॥ झगरत कबहुं दोउ आनंद भरि कबहुं चलत हैं धाय । कबहुं गहत माता की चोटी माखन मांगत आय ॥३॥ घर घर ते आवत व्रजनारी देखन यह आनंद । बाल रूप क्रीडत हरि आंगन छबि लखि बलि हरीचंद ॥४॥ ६ ॥

राग केदारा चौताल ।

अरी हरि या मग निकसे आइ अचानक, हौं तो झरोखे रही ठाढी । देखत रूप ठगौरी सी लागी, बिरह बेलि उर बाढी ॥ १ ॥ गुरुजन के भय संग गई नहि, रहि गई मनहुं चित्र लिखि काढी । हरीचंद बलि ऐसी लाज मैं लगौरी आग, हौं बिरहा दुखदाढी ॥२॥ ७ ॥

अरी सखी गाज परौ ऐसी लोक लाज पैं, मदन मोहन संग जान न पाई । हौं तो झरोखे ठाढी देखतीही कछु, आए इतै मैं कन्हाई ॥ १ ॥ औचक दीठ परी मेरे तन, हंसि कछु बंसी बजाई । हरीचंद मोहि बिबस छोडिकै, तन मन धन प्रान लीनो संगलाई ॥२॥ ८ ॥

राग बिहागरा ।

सखी मोरे सैंयां नहि आये बीति गई सारी रात । दीपक जोति मलिन भई सजनी होय गयो परभात ॥१॥ देखत बाट भई यह बिरियां बात कही नहि जात । हरीचंद बिन बिकल बिरहनी ठाढी है पछितात ॥२॥ ९ ॥

सखी मोहि पिया सों मिला दे दैहौं गले को हार । मग जोहत सारी रैन गंवाई मिले न नंद

মূল্যপ্রাপ্তি।

নাম	ধাম		মূল্য
বাবু কামিনীকুমার গঙ্গোপাধ্যায়	রঙ্গপুর	...	১২৸০
„ গৌরীশঙ্কর সেন	হাওড়া	...	৬৲
„ সুরনাথ চৌধুরী	ইছাপুর	...	৬৲
„ হীরালাল রক্ষিত	কলিকাতা	...	৮৲
„ প্রসন্নকুমার বটব্যাল	কুমিল্লা	...	৩৲
„ ভুবনেশ্বর মিত্র ডাক্তার	মেদিনীপুর	...	৫৲
কবিরাজ হরগোবিন্দ দাস গুপ্ত	কাকিন্যা	...	৩৲
বাবু তারাচাঁদ পাল উকীল	কাঁথি	...	৬।০
„ ইন্দ্রচন্দ্র লাহাটা	জিয়াগঞ্জ	...	১১॥৶০
„ জানকীনাথ ভট্টাচার্য্য	দানাপুর স্কুল	...	৪।০
„ পরমানন্দ সাহা	মেদিনীপুর	...	৭॥০
„ জগদানন্দ ভৌমিক	ময়মনসিংহ	...	৪৸০
কবিরাজ প্যারীমোহন গুপ্ত	বেলকুচি, পাবনা	...	২॥০
বাবু মতিলাল বাগচি	নাটোর	...	৬৸০
কবিরাজ নিমাইচরণ দাস	সলদা, বাকুড়া	...	২৲
বাবু অখিলনাথ দাস গুপ্ত	কুবাজপুর	...	২৲
„ মহেশচন্দ্র চৌধুরী	ভবানীপুর	...	৬৸০
„ রজনীকিশোর রক্ষিত	লাকনাউ, শ্রীহট্ট	...	২৶০
কবিরাজ হরিদাস গুপ্ত	ক্ষেতুপাড়া, দিনাজপুর		৩৲
„ হরচরণ সেন গুপ্ত	বহরমপুর	...	৬।৶০
রাজা প্রমথনাথ রায় বাহাদুর	দিঘাপাতিয়া	...	৬।৶০
বাবু পীতাম্বর গুপ্ত জমিদার	পহুয়া, চট্টগ্রাম	...	৬।৶০
কবিরাজ কৈলাসচন্দ্র কবিশেখর	যোড়াসাকো	...	৬৲
বাবু সত্যচরণচট্টোপাধ্যায়	আড়িয়াদহ	...	৮৸
„ হারাধন ঘোষাল	রামপুর, বাকুড়া	...	৩৲
„ হরিমোহন সরকার	পালপাড়া, বরাহনগর		৩৸০
„ তারিণীকুমার রায়	কলিকাতা	...	২৲
„ চিরঞ্জীব সর্ব্বাধিকারী	ভাগলপুর	...	৫৸০
„ রাধাবল্লভ কবিরাজ	ইছাপুর	...	৩৲
বাবু অন্নদাপ্রসাদ আচার্য্য	বহরমপুর	...	৪৲
কবিরাজ কৈলাসচন্দ্র বরাট	কলিকাতা	...	৪৲
বাবু হরপ্রসাদ ঘোষ	কলিকাতা	...	৬৲
„ কৃষ্ণলাল দাস গুপ্ত	পাবনা	...	৩৶০
„ মাধবচন্দ্র মৈত্র	সলপ, পাবনা	...	৩৲

„ „ বৃন্দাবনচন্দ্র চন্দ	বেড়াচাকি, ত্রিপুরা		৪৲
„ „ পরমানন্দ সাহা	মেদিনীপুর	...	৭৷৹
শ্রীল শ্রীযুত মহারাজা ত্রিপুরাধিপতি	ত্রিপুরা	...	১২৷৹
শ্রীযুত উমাকান্ত গোস্বামী	লোচনগৌর গ্রাম, নাটোর		৬৷৵৹
„ „ রাজেন্দ্রকৃষ্ণ ঘোষ	সভাবাজার	...	৬৲
„ „ বিহারীলাল সেন	কলিকাতা	...	৪৲
„ „ কৃষ্ণকিশোর নিয়োগী	কলিকাতা	...	৪৲
„ „ গোবিন্দকুমার চৌধুরী	কলিকাতা	...	৬৲
„ „ কৈলাসচন্দ্র গুপ্ত	হবিগঞ্জ	...	৪৲
শ্রীযুত বাবু রামধন শাসমল	চণ্ডিভেটী, মেদিনীপুর		৮৲
„ „ প্রাণকৃষ্ণ বল	চট্টগ্রাম	...	৪৲
„ „ দুর্গাচরণ সেন মুন্সেফ	হুগলী	...	১০৲
„ „ পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	কলিকাতা	...	১৲
„ কুমার ধরেন্দ্রকৃষ্ণ বাহাদুর	কলিকাতা	...	৬৲
„ বাবু আশুতোষ বন্দোপাধ্যায়		...	৬৲
মিঃ স্থইন্‌হো সাহেব	কলিকাতা	...	৬৲
শ্রীযুক্ত বাবু ভুবনমোহন বসাক	কলিকাতা	...	২৲
„ „ হরমোহন বসু	রোয়াইলস্কুল	...	৩৲
„ কবিরাজ দুর্গাচরণ দাস	মেদিনীমণ্ডল	...	৬৲
„ „ কৃষ্ণকুমার কবিরত্ন	ভবানীপুর	...	৩৲
„ বাবু নিশিকান্ত বসু		...	৮৲
„ রাজা যোগেন্দ্রনাথ রায়বাহাদুর	নাটোর	...	১২৮৹
„ কুমার নবদ্বীপচন্দ্রদেব বর্ম্মণ মানিক্য বাহাদুর	কুমিল্লা	...	৬৷৵৹
„ রাজা মহেন্দ্রলাল খান বাহাদুর	মেদিনীপুর	...	৬৷৵৹
„ ভুবনমোহন ভট্টাচার্য্য	খাগড়া	...	১৲
„ বাবু রাধিকাপ্রসাদ সিংহ উকীল	কাটোয়া	...	৬৷৵৹

कुमार ॥१॥ उन पीतम सों यौं जा कहियो तुम बिनु व्याकुल नार । हरीचंद क्यों सुरति बिसारी तुम तो चतुर खिलार ॥२॥ १० ॥

नैन भरि देखौ गोकुल चंद । श्याम बरन तन खौर बिराजत अति सुंदर नंद नंद ॥१॥ बिथुरी असकैं मुख पै झलकैं मनु दोउ मन के फंद । मुकुट लटक निरखत रबि लाजत छबि लखि होत अनंद ॥२॥ संग सोहत वृषभाननंदिनी प्रमुदित आनंद कंद । हरीचंद मन लुब्ध मधुप तहां पीवत रस मकरंद ॥३॥ ११ ॥

नैन भरि देखो श्रीराधा बाल । मुख छबि लखि पूरन ससि लाजत सोभा अतिहि रसाल ॥१॥ मृग से नैन कोकिल सी बानी अरु गयंद सी चाल । नख सिख लौं सब सहजहिं सुंदर मनहुं रूप की जाल ॥२॥ वृन्दाबन की कुंज गलिन मैं संग लीने नंदलाल । हरीचंद बलि बलि या छबि पर राधा रसिक गोपाल ॥३॥ १२ ॥

सखी हम कहा करैं कित जायं । बिनु देखे वह मोहनि मूरति नैना नाहिं अघायं ॥१॥ कछु न सुहात धाम धन पति सुत मात पिता परिबार । बसति एक हिय मैं उनकी छबि नैननि वही

निहार ॥२॥ बैठत उठत सयन सोवत निस चलत फिरत सब ठौर। नैननते वह रूप रसीलो टरत न एक पल और ॥३॥ हमरे तन धन सरबस मोहन मन वच क्रम चित मांहि। पै उनके मन की गति सजनी जानि परत कछु नाहिं ॥४॥ सुमिरन वही ध्यान उनकोही मुख में उनको नाम। दूजी और नाहि गति मेरी बिनु मोहन घनश्याम ॥५॥ नैना दरसन बिन नित तलफै वचन सुनन को कान। बात करन को रसना तलफै मिलवे कों ए प्रान ॥६॥ हम उनकी सब भांति कहांवहिं जगत वेद सरनाम। लोक लाज पति गुरुजन तजि कै एक भज्यौ घनश्याम ॥७॥ सब ब्रज बरजौ परिजन खीझौ हमरे तौ हरि प्रान। हरीचंद हम मगन प्रेम रस सूझत नाहि न आन ॥८॥ १३ ॥

ठुमरी।

तूं मिलि जा मेरे प्यारे ॥ तेरे बिना मनमोहन प्यारे व्याकुल प्रान हमारे। हरीचंद मुखड़ा देखला जा इन नैनन के तारे ॥ १४ ॥

राग रामकली।

ऐसी नहिं कीजै लाल देखत सब संग की बाल काहे हरि गए आजु बहुतै इतराई। सूधे क्यों न दान लेहु अंचरा मेरो छाड़ि देहु जामैं मेरी लाज रहै करौ सो उपाई ॥१॥ जानत ब्रज प्रीत सबै औरहू हंसैंगे अबै गोकुल के लोग होत बड़ेही चवाई। हरीचंद गुप्तप्रीत बरसत अति रस की रीत नेकहूं जो जानै कोउ प्रगटत रस जाई ॥२॥ १५॥

छाडौ मेरी बहियां लाल सीखी यह कौन चाल हाहा तुम परसत तन औरन की नारी। अंगुरी मेरी मुरुक गई परसत तन पीर भई भीर भई देखत सब ठाढीं व्रजनारी ॥१॥ बाट परौ ऐसी बात मोहि तौ नहीं सुहात काहे इतरात करत अपनो हठ भारी। हरीचन्द लेहु दान नाहीं तौ परैगी जान नेक करो लाज छाडौ अंचल गिरि-धारी ॥२॥ १६ ॥

राग सारंग।

हमारे घर आओ आजु प्रीतम प्यारे। फूलन हीं की सेज बिछाई फूलन के चौवारे ॥१॥ कोमल चरनन हित फूलन के रचि पांवड़े संवारे। हरी-चंद मेरो मन फूल्यौ आउ भंवर मतवारे ॥२॥१७॥

राग बिभास।

आजु उठि भोर वृषभांन की नंदिनी फूल के महल तें निकसि ठाढ़ी भई। खसित सुभ सीस तें कलित कुसुमावली मधुप की मंडली मत्त रस ह्वै गई ॥१॥ कछुक अलसात सरसात सकुचात अति फूल की बास चहुं ओर मोदित छई। दास हरिचंद छबि देखि गिरिधरलाल पीतपट लकुट सुधि भूलि आनंदमई ॥२॥ १८ ॥

राग देस।

अहो हरि ऐसी तौ नहिं कीजै। अपनी दिसि बिलोकि करुनानिधि हमरे दोस न लीजै ॥ १ ॥ तुव माया मोहित कह जानै कैसे मति रस भीजै। हरीचंद पहिलै अपनो करि फिरि कांहें तजि दीजै ॥२॥ १९ ॥

राग सोरठ।

बनी यह सोभा आजु भली। नथ मै पोही प्रान प्रियारे निज कर कुसुम कली ॥१॥ झीने बसन बिथुरि रहीं अलकैं श्रीवृषभानुलली। यह छबि लखि तन मन धन वार्‌यो तहं हरिचंद अली ॥२॥ २० ॥

फबी छबि थोरेहीं सिंगार। बिना कंचुकी

बिन कर कंकन सोभा बढ़ी अपार ॥१॥ खसि रहि तन तें तन सुख सारी खुलि रहे सोंधे वार। हरीचंद मन मोहन प्यारो रिझयो हैं रिझवार।२। २१

आजु सिर चूडामनि अति सोहै। जूडो कसि बांधो है प्यारी पीतम को मन मोहै ॥१॥ मानहुं तमके तुंग सिखर पैं बालचंद उदयो है। हरिचंद ऐसी या छबि को बरनि सकै सो को है ॥२॥ २२॥

राग बिभास।

भोर भये जागे गिरिधारी। सगरी निसि रस बस करि बिताई कुंज महल सुखकारी ॥ १ ॥ पट उतारि तिय मुख अवलोकत चंदबदन छबि भरी। बिलुलित केस पीक अरु अंजन फैली बदन उज्यारी ॥ २ ॥ नांहि जगावत जानि नींद बहु समुझि सुरति श्रम भारी । छबि लखि मुदित पीतपट करलै रहे भंवर निरुवारी ॥३॥ संगम गुन मधुरे सुर गावत चौंकि उठी तब प्यारी । रही लपटाइ जंभाइ पिया उर हरीचंद बलिहारी ।४। २३॥

जागे माई सुंदर स्यामा स्याम। कछु अलसात जंभात परस्पर टूटि रही मोतिन की दाम ॥ १ ॥ अधखुले नैन प्रेम की चितवनि आधे आधे बचन ललाम। बिलुलित अलक मरगजे बागे नखछत

उरसि मुदाम ॥२॥ संगम गुन गावत ललितादिक बाजत बीन तीन सुरग्राम। हरीचंद यह छबि लखि प्रमुदित तृन तोरत ब्रजबाम ॥३॥ ॥ २४ ॥

राग देस।

बेगां आवो प्यारा बनवारी हमारी ओर। दीन बचन सुनतां उठि धावौ नेकु न करहु अवारी ॥१॥ कृपासिंधु छाड़ौ निठुराई अपनो बिरद संभारी। थाने जग दीनदयाल कहे छे क्यौं म्हारी सुरत बिसारी ॥२॥ प्राण दान दीजे मोहि प्यारा होछूं दासी थारी। क्यौं नहि दीन बैण सुनो लालन कौन चूक छे म्हारी ॥३॥ तलफैं प्रान रहैं नहिं तनमैं बिरह बिथा बढ़ी भारी। हरीचंद गहि बांह उबारौ तुमतौ चतुर बिहारी ॥४॥ ॥ २५ ॥

राग सारंग।

जयति वेणुधर चक्रधर शंखधर पद्मधर गदा-धर शृंगधर वेत्रधारी। मुकुटधर क्रीटधर पीतपट कटिनधर कंठकौस्तुभ धरन दुःखहारी ॥१॥ मत्स को रूप धरि बेद प्रगटित करन कच्छ को रूप जल मथनकारी। दलन हिरनाच्छ बाराह को रूप धरि दन्त के अग्रधर पृथ्वी भारी ॥२॥ रूप नरसिंह धर भक्त रछा करन हिरन कश्यप उदर नख

बिदारी । रूप बावन धरन छलन बलिराज को परसुधर रूप छत्री संहारी ३ राम को रूपधर नास रावन करन धनुषधर तीरधर जित सुरारी। मुशलधर हलधरन नीलपट सुभगधर उलटि करषन करन जमुनवारी॥४॥ बुद्ध को रूपधर बेद निंदा करन रूप धर कल्कि कलजुग संघारी। जयति दश रूपधर कृष्ण कमलानाथ अतिहि अज्ञात लीला बिहारी॥५॥ गोपधर गोपिधर जयति गिरिराजधर राधिका बाहु पर बाहु धारी। भक्तधर संतधर सोइ हरिचंदधर वल्लभाधीश द्विजवेषकारी ॥६॥ २६॥

राग कान्हरा ।

दोउ कर जोरे ठाढो बिहारी। मान कह्यौ तजि मान मया करि सुनि चंद्रावलि प्यारी॥१॥ ये बहु नायक मिलत भाग्य सों यह लै चित्त बिचारी। हरीचंद ब्रजचंद पियाचे तूं चंद्रावलि नारी॥२॥२७॥

राग बिहाग ।

आजु नवकुंज बिहरत दोऊ रस भरे पिया ब्रजचन्द संग चतुर चंद्रावली । सुरति श्रम स्वेदमुख परस्पर बढ्यौ सुख टूटि रही उरसि मुकुतानि हारावली॥१॥ गिरत तन बसन नहि थिरत बेसरि तनिक खसित सुभ सीसतें कलित

कुसुमावली। सखी हरिचंद लखि मूंदि दृग दोउ रही पाइ आनंद परम बुद्धि भई बावली ॥२॥२८॥

जयति राधिकानाथ चंद्रावली प्रानपति घोष कुल सकल संताप हारी। गोपिका कुमुद बन चंद्र सांवरवरन हरन बहु बिरह आनंदकारी ॥१॥ त्रिखित लोचन जुगल पानहित अमृत वपुं बिमल बृंदाबिपिन भूमिचारी। गाय गिरिराज के हृदय आनंद करन नित्य बिह्बलकरन जमुनवारी ॥२॥ नंद के हृदय आनंद वर्धित करन भरन जसुदा मनसि मोद भारी। बाल क्रीडा करन नंद मांदिर सदा, कुंज मैं प्रौढलीला बिहारी ॥३॥ गोपसागर रत्न सकल गुनगन भरे क्वनित स्वर सप्तमुख मुरलिधारी। मंजु मंजीर पद कलित कटि किंकिनी उरसि बनमाल सुंदर संवारी ॥४॥ सदा निज भक्त सन्ताप आरति हरन करन रसदान अपनो बिचारी। दास हरिचंद कलि वल्लभाधीश है प्रगट अज्ञात लीला बिहारी ॥ ५ ॥ २९ ॥

राग देस।

स्यामाजी देखो आवेछे थारो रसियो। कछु गातो कछु सैन बताती कछु लखिकै हंसियो ॥१॥ मोर मुकुट वाके सीस सोहणों पीतांबर कटि

कसियो। हरीचन्द पिय प्रेम रंगीलौ थांके मन बसियो ॥ २ ॥ ३० ॥

म्हारी सेजां आओ जू लाल बिहारी। रंग रंगीली सेज संवांरी लागी छे आसा थारी ॥१॥ बिरह बिथा बाढ़ी घणी ही मैं सो नहि जात संभारी। हरीचन्द सो जाय कहो कोउ तलफै छेथारे बिन प्यारी ॥ ५ ॥ ३१ ॥

राग असावरी।

सुंदरश्याम कमलदल लोचन कोटिन जुग बीते बिनु देखे। तलफत प्रान बिकल निसि बासर नैनहूं नहिं लगत निमेखे ॥१॥ कोउ मोहि हंसत करत कोउ निंदा नहि समुझत कोऊ प्रेम परेखे। मेरे लेखे जगत बावरो मैं बावरी जगत के लेखे ॥२॥ तापै ऊधव ज्ञान सुनावैन कहत करहु जोगिन के भेखे। बलिहारी यह रीझ रावरी प्रेमिन लिखत जोग के लेखे ॥३॥ बहुत सुने कपटी या जग मैं पै तुमसे तो तुमही पेखे। हरीचन्द कहा दोस तुम्हारौ मेटै कौन करमकी रेखे ॥ ४ ॥ ३२ ॥

राग बिहाग।

हमतौ श्रीवल्लभ ही को जानैं। सेवन वल्लभ

पदपंकज को वल्लभ ही को ध्यानै ॥१॥ हमरे मात-पिता गुरु वल्लभ और नहीं उर आनै । हरीचन्द वल्लभ पद बलसों इंद्रहु को नहि मानै ॥२॥३३॥

अहो प्रभु अपनी ओर निहारो।जौ मेरे दोसन कों देखौ तौ न निबाह हमारो ॥१॥ करिकै सुरति अजामिल गज की हमरे करम बिसारो । हरीचंद डूबत भवसागर गहिकर धाइ उबारो ॥२॥३४॥

हम तो मोल लिये या घरके । दास दास श्रीवल्लभ कुल के चाकर राधा बर के ॥ १ ॥ माता श्रीराधिका पिता हरि बंधु दास गुनकरके। हरीचंद तुमरेही कहावत नहि बिधि के नहि हरके ॥ २॥३५॥

राग परज ।

तुम क्यौं नाथ सुनत नहिं मेरी। हमसे पतित अनेकन तारे पावन की विरुदावलि तेरी ॥ १ ॥ दीनानाथ दयाल जगतपति सुनियै बिनती दीनहुं केरी । हरीचन्द को सरनहिं राखौ अब तौ नाथ करहु मति देरी ॥ ३६ ॥

विहाग ।

अहो हरि वेहू दिन कब ऐहैं । जा दिन मैं तजि और संग सब हम ब्रजवास बसैहैं ॥ १ ॥ संग करत नित हरि भक्तन को हम नेकहु न अघैहैं । सुनत श्रवन हरि कथा सुधारस महा

मत्त ह्वै जैहैं ॥ २ ॥ कब इन दोउ नैननसों निसि-दिन नीर निरंतर बहिहैं । हरीचन्द श्रीराधे राधे कृष्ण कृष्ण कब कहिहैं ॥ ६ ॥ ३७ ॥

अहो हरि वह दिन बेगि दिखाओ । दै अनु-राग चरन पंकजको सूत पितू मोह मिटाओ ॥ १ ॥ और छोड़ाइ सब जग वैभव नित ब्रजवास बसाओ । जुगल रूप रस अमृत माधुरी निस-दिन नैन पिआओ ॥ २ ॥ प्रेम मत्त ह्वै डोलत चहुंदिसि तनकी सुधि बिसराओ । निसदिन मेरे जुगल नैनसों प्रेम प्रवाह बहाओ ॥ ३ ॥ श्रीव-ल्लभ पद कमल अमल में मेरी भक्ति दृढ़ाओ । हरी चन्द कों राधामाधव अपनो करि अपनाओ॥४॥३८॥

रसने रटु सुंदर हरि नाम। मंगल करन हरन सब असगुन करन कल्पतरु काम ॥ १ ॥ तूं तौ मधुर सलोनो चाहत प्राकृत स्वाद मुदाम। हरीचंद नहि पान करत क्यों कृष्ण अमृत अभि-राम २ ॥ ३९ ॥

उधारौ दीन बंधु महराज । जैसे हैं तैसे तुम-रेही नाहिं और सों काज ॥१॥ जौं बालक कपूत घर जनमत करत अनेक बिगार। तौ माता कहा

वाहि न पूछत भोजन समय पुकार ॥२॥ कपटहु भेष किए जो जांचत राजा के दरबार। तौ दाता कह वाहि देत नहि निज प्रन जानि उदार ॥३॥ जौं सेवक सब भांति कुचाली करत न एकौ काज। तऊ न स्वामि सयान तजत तेहि बांह गहे की लाज ॥४॥ बिधि निषेध कछु हम नहिं जानत एक आस बिश्वास। अब तौ तारेही बनि है नहि ह्वै है जग उपहांस ॥५॥ हमरो गुन कोऊ नहि जानत तुमरो प्रन बिख्यात। हरीचंद गहि लीजे भुज भरि नाही तो प्रनजात ॥ ६ ॥ ३९ ॥

राग भैरव।

लाल यह बोहनियां की बेरा । हौं अबहीं गोरस लै निकसी बेचन काज सबेरा ॥१॥ तुम तौ याही ताक रहत हो करत फिरत मग फेरा। हरीचन्द झगरौ मति ठानो ह्वैहै आज निबेरा ॥२॥४०॥

रागिनी प्रभाती।

अरी यह को है सांवरो सो लंगर ढोटा ऐंडोई ऐंडो डोलै। काहूको कोहनी काहू को चुटकी काहूसों हंसि बोलै ॥१॥ काहू की गाहि कंचुकी छोरत काहू को घूंघट खोलै। हरीचंद सब लाज गंवाई बात कहै अनमोलै ॥ २ ॥ ४१ ॥

राग गौरि तालचर्चरी।

आजु नंदलाल पिय कुंज ठाढे भए श्रवत सुभ सीस पैं कलित कुसुमावली। मनहुं निज नाथ ससि भूमिगत देखि के खसित आकास ते तरल तारावली ॥ १ ॥ वहत सौरभ मिलित सुभग त्रैबिधि पवन गुंजरत महारस मत्त मधुपावली। दास हरिचन्द ब्रजचन्द ठाढे मध्य राधिका बाम दक्षिण सुचन्द्रावली ॥ २ ॥ ४२ ॥

राग केदारा।

फूलन के सब साज सजि गोरी कित बदन दुराय जात। फूलन की तन सारी फूलनि की छबि भारी फूली न हृदय समात॥१॥ फूल्यौ श्रीबृन्दा-बन फूलैं तेरे अंग अंग काहे को सकुचात। हरीचंद हम जानि पिय जू सों रति मानी प्रीति छिपे न छिपात ॥ ४३ ॥

राग सारंग चर्चरी।

आजु ब्रजचन्द तनलेप चन्दन किए ठाढे अति रस भरे जमुना तीरे । फूल के आभरन बसन झीने बने खौर चन्दन दिए सीरे सीरे ॥१॥ तैसही संग बृषभान नृपनंदिनी धारि चन्दन के तन चोली चीरे। दास हरिचन्द बलि जात छबि देखि कै जयति ब्रजराज सुत गोप बीरे ॥२॥४४॥

रागसारंग।

नटवर रूप निहार सखीरी नटवर रूप निहार। गोहन लगी फिरन जाके हित कुल की लाज बिसार ॥१॥ ललित त्रिभंग काछनी काछे अमल कमल से नैन। करलै फूल फिरावत गावत मोहत कोटिक मैन ॥२॥ जग उपहांस सहे बहु भांतिन जा दरसन के हेत। सो हरि नीके नैननि भरि के काहें देखि न लेत ॥३॥ तुमरी प्रीति अलौकिक सजनी लखि न परै कछु ख्याल। हरीचन्द धनि धनि तुम दोऊ राधा अरु गोपाल ॥४॥ ४५॥

राग हमीर।

ठाढे हरि तरनि तनैया तीर। संग श्रीकीरति कुमारी पहिनी झीने चीर ॥ १ ॥ उरनि फूलन माल जापै भंवर गन की भीर। हाथ कमल लिए फिरावत राधिका बलबीर ॥ २ ॥ सांझ समय सोहावनो तहं बहत त्रिबिध समीर। बारने हरिचन्द छबि लखि श्याम गौर सरीर ॥ ३ ॥ ४६ ॥

राग केदारा।

मेरेई पौरि रहत ठाढो टरत न टारे नन्दराय जू को ढोटा। पाग रही भुव ढरकि छबीली जामैं बांध्यौं हैं मंजुल चोटा ॥ १ ॥ चितवत मो तन फिरि फिरि हेरत कर लै बेनु बजावत। धरि अध-

रन वह ललन छबीलो नाम हमारोइ गावत ॥२॥ सुन्दर कमल फिरावत चहुंदिसि मोतन दृष्टि न टारै। हरीचन्द मन हरत हमारो हंसि हंसि पाग सवारै॥ ३॥ ४७॥

मारग रोकि भयो ठाढो जानन देत मोहि पूंछत है तूं कोरी। कौन गांव कहा नांव तिहारो ठाढ़ि रहि नेक गोरी॥ १॥ कित चली जात तूं बदन दुराए एरि मति की भोरी। सांझ भई अब कहां जायगी नीकी है यह सांकरी खोरी॥ २॥ बहुत जतन करि हारी ग्वालिनि जान दियौ नहि तेहि घर ओरी। हरीचन्द मिलि बिहरत दोऊ रैननि नंद कुँवर बृषभानकिशोरी॥ ३॥ ४८॥

राग गौरी।

नैना वह छबि नाहि न भूले। दया भरी चहुं-दिसि की चितवनि नैन कमल दल फूले॥ १॥ वह आवनि वह हंसनि छबीली वह मुसुकनि चित चोरै। वह बतरानि मुरनि हरि की वह वह देखन चहुं कोरैं॥ २॥ वह धीरी गति कमल फिरावन कर लै गायन पाछे। वह बीरीमुख बेनु बजावनि पीत पिछौरी काछे॥ ३॥ परबस भए फिरत हैं नैना एक छन टरत न टारे। हरीचन्द ऐसी

छबि निरखत तन मन धन सब हारे ॥४॥ ४९॥

बैठे लाल नवल निकुंजन माहीं । अति रस भरे दोऊ अंग जोरि कै हिलिमिलि दै गल बाहीं॥१॥ तैसे श्रीगिरिराज शिला पैं फूले कुसुम अनेकन भांती । तैसीयै जमुना अति सोभित लहकि रही कमलन की पांती ॥ २ ॥ तैसेई भंवर गुंजार करत हैं तैसोइ त्रिविध बयार । तैसेई सौरभ झरत अनेकन वृन्दाबन तरुडार ॥ ३ ॥ कर लै कमल फिरावत दोऊ उर फूलन की माल । हरी-चन्द बलि बलि यह छबि लखि राधा और गोपाल ॥ ४ ॥ ५० ॥

मान के कीर्त्तन । ईमन ।

तूं तो मेरी प्रान प्यारी नैन मैं निवास करै तूंहीं जो करैगी मान कैसेकैं मनाइ हैं । तूंहीं तो जीवन प्रान तोहि देखि जीव राखैं तूंहीं जौं रहैगी रूसि हम कहां जाइ हैं ॥ १ ॥ कियो मान राधे महारानी आजु पीतम सों ऐसी जो खबरि कहूं सौति सुनि पाइ हैं । हरीचन्द देखि लीजो सुवतहि दौरि दौरि निज निज द्वार पैं बधाई बजवाई हैं ॥ २ ॥ ५१ ॥

प्यारे जू तिहारी प्यारी अतिही गरब भरी

हठकी हठीली ताहि आपुहीं मनाइए । नेकहूं न मानै सब भांति हौं मनाय हारी आपुहि चलिए ताहि बात बहराइए ॥१॥ रिस भरि बैठि रही नेकहू न बोलै बैन ऐसी जो मानिनि तेहि काहे को रिसाइए। हरीचन्द जामें मानै करिए उपाय सोई जैसे बनै तैसे ताहि पगपरि लाइये ॥२॥ ५२ ॥

आजु मैं देखेरी आलीरी दोऊ मिलि पौढे ऊंची अटारी । मुख सों मुख मिलाइ बीरी खात रंगभरि नवलपिया प्रानप्यारी ॥ १ ॥ चांदनी प्रकास चारु ओर छिरकाव भयो सीतल चहुं दिसि चलत बयारी । हरीचंद सखीगन करत बिंजना जानि सुरतिश्रम भारी ॥ २ ॥ ५३ ॥

राग बिहाग ।

पौंढे दोउ बातन के रस भीने । नींद न लेत अरुझि रहे दोऊ केलिकथा चित दीने ॥१॥ तैसइ सीतल सेज बिछाई सखी बिंजन कर लीने। हरीचन्द आलस भरि सोए कछुक ओढ़ि पट झीने ॥ २ ॥ ५४ ॥

राग सारंग ।

मेरे प्यारे सों संदेसवा कौन कहै जाय। उर की बेदन हरै बचन सुनाय । कोऊ सखी देइ

मोरी पाती पहुंचाय ॥१॥ जाइ कै बुलाय लावै बहुत मनाय । मिलि हरीचन्द मोरा जियरा जुड़ाय ॥ २ ॥ ५५ ॥

जमुना जू की तिवारी चलु सखि । तेरो मग जोहत मनमोहन सुंदर गिरिवरधारी ॥ १ ॥ तेरे हित छिरकाव कियो है सुंदर सेज संवारी । बिंजन चलत फुहारे छूटत खसपरदे रुचिकारी ॥२॥ मृगमद चंदन घोरि धरे हैं फूल माल छबि भारी । मिलि बिहरौ दोऊ आनंद भरि हरीचन्द बलिहारी ॥ ३ ॥ ५६ ॥

सांझ के गए दुपहरी आए । सांची बात कहो नंदनंदन भले बने मन भाए ॥१॥ अबलौं बाट रही तुव हेरत साजि धरे सब साज । बैठो हौं बींजना डुलाऊं अब न जाहु ब्रजराजें ॥ २ ॥ आए मेरे नैन सिराए सीतल जल लै पीजै । रैनि नहीं तौ दुपहरिया मै हरीचन्द सुख दीजै ॥३॥५७॥

अरी कोऊ करिकै दया नेकु ठांवं मोहि दीजौ धूप लगै मोहि भारी । पांवं तपै मेरो गोचारत में यह बोलत गिरिधारी ॥ १ ॥ सुनि यह बचन उसीर महल मैं लै आई सुकुमारी । हरीचन्द

येहि मिसि मिलि बिहरे नवल पिया अरु प्यारी ॥५८॥

अरी हौं बरजि रही बरज्यौ नहि मानत दौरि दौरि बार बार धूपही में जाय। सीरे खस-खाने साजि सेजहू बिछाय राखी भयो छिड़काव आइ नेकुतौ जुड़ाय ॥ १ ॥ छूटत फुहारो चारु देखि तौ कौतुक आइ मोतिन सी बूंद झरे चित ललचाय। हरीचन्द मातु के बचन सुनि आइ पौढ़े बिंचन करत सब सखि हरखाय ॥२॥ ५९॥

राग केदारा।

फूलि रही द्वै बेली श्रीबृन्दावन। नवतमाल घनश्याम पिया श्रीराधा पीत चमेली ॥१॥ और फूल फूली सब सखियां फूलनि पहिरि नबेली। हरीचन्द मन फूल्यौ फूल्यौ सब साज देखि भंवर भयो है हेली ॥ २ ॥ ६० ॥

राग सोरठ।

सखी मोहि लै चलि जमुनातीर । जहां मिलै नटवर मनमोहन सुंदरश्यामशरीर ॥ १ ॥ नंदद्वार सब बड़े गोप मैं हौं कैसे धसिजाऊं। भौन माहिं जसुदा जू के भय नीके लखन न पाऊं ॥ २ ॥ गुरुजन की भय अटा झरोखा हू नहि बैठन पावैं । राह बाट मैं लाज निगोड़ी

कैसे नैन मिलावें ॥३॥ तू सब जिय की जाननिहारी तो सों कहा दुराऊं। हरीचन्द जीवन धनदै मोहि नैना निरखि सिराऊं ॥ ४ ॥ ६१ ॥

जलविहार राग सोरठ।

नाव हरि अवघटघाट लगाई । हम ब्रजबाल कहो कित जैहैं करिहैं कौन उपाई ॥१॥ सांझ भई संग मैं कोउ नाहीं देहु हमैं पहुंचाई । हरीचंद तन मन धन जोबन सब दैहैं उतराई २॥ ६२॥

हमैं तुम दैहौ का उतराई । पार उतार देहिं जो तुम को करिकै बहुत खेवाई ॥ १ ॥ जोबन धन बहु है तुम्हरे ढिग सो हम लेहिं छोड़ाई । हम तुम्हरे बस हैं मनमोहन जो चाहौ सो करौ कन्हाई ॥ २ ॥ निरजन बन मैं नाव लगाई करी केलि मनभाई । हरीचंद प्रभु गोपीनायक जगजीवन ब्रजराई ॥ ३ ॥ ६२ ॥

राग सारंग।

आजु श्रीराधिका प्रानपति काज निज हाथसों कुंज मैं कुसुम सिज्जा सजी । परमसीतल भवन चलत सुंदर पवन देखि छबि उष्णता दूर कोसन भजी ॥१॥ मोद भरि बिहरहीं दोउ अति सुख पगे काम की बाम लखि ललित सोभालजी।

दास हरिचन्द धुनि करत किंकिनि चुरी मदन के सदन मनु नवल नौबत बजी ॥ २ ॥ ६३ ॥

आजु दुपहरी मैं श्याम के काम तू बाम छबि धाम भई नवल अभिसारिका । अतिहि कोमल चरन तपित धरनीधरन गयो कुम्हलाय मुख कमल सुकुमारिका ॥ १ ॥ उरसि मुक्ताहार स्वेत सारी बनी कहत कोमल बचन मनहुं पिक सारिका । बदत हरिचन्द छलछन्द एतो कियो कहां सीखी नई कोक की कारिका ॥ २ ॥ ६४ ॥

राग बिहाग ।

बृज के लता पता मोहि कीजै । गोपी पद पंकज पावन की रज जामैं सिर भीजै ॥१॥ आवत जात कुंज की गलियन रूप सुधा नित पीजै । श्रीराधे राधे मुख यह बर हरीचन्द को दीजै ॥२॥६५॥

राग असावरी वासा रंग ।

ऊधो जौं अनेक मन होते । तौ इक स्याम सुंदर कों देते इकलै जोग संजोते ॥१॥ एक सों सब ग्रह कारज करते एक सों धरते ध्यान । एक सों श्याम रंग रंगते तजि लोक लाज कुल कान ॥२॥ को जप करै जोग को साधै को पुनि मूंदै नैन । हिये एकरस श्याम मनोहर मोहन कोटिकमैन ॥३॥

ह्यांतो हुतो एकही मन सो हरिलै गए चुराइ। हरीचन्द कोऊ और खोजिकै जोग सिखावहु जाइ ॥ ४ ॥ ६६ ॥

राग भैरव खंडिता।

श्याम पियारे आजु हमारे भोरहि क्यौं पगु धारे। बिन मादकही आज कहो क्यौं घूमत नैन तुह्मारे ॥ १ ॥ दीपक जोति मलिन भई देखो पच्छिम चन्द सिधार्‍यौ। सूरज किरिन उदित उदयाचल पच्छिन शब्द उचार्‍यो ॥ २ ॥ कुमुदिनि सकुची कमल प्रफुल्लित चक्रवाक सुख पायो। सीतल मरुत चलत उठि मुनियन निज निज ध्यान लगायो ॥ ३ ॥ कहा कहों कछु कहि नहिं आवै आज बनी जो सोभा। पेंच खुले लटपटी पाग कें देखतहीं मन लोभा ॥ ४ ॥ ऐसी को है सुघर सुनरिया ज़िन यह हार बनायो। बिन नग जड्यौ हेम बिन निरमित बिन गुन दाम पोहायो॥५॥ मोहन तिलक महावर को सिर लीलाम्बर कटि धारे। कौन सी चूक परी हरि हम सों नैन लाल क्यौं प्यारे ॥ ६ ॥ लै आरसी सांमुहें राखी जल लाई भरि झारी। हरीचन्द उठि कंठ लगाई हंसिकै गिरवरधारी ॥ ७ ॥ ६७ ॥

राग सारंग ।

सखी ए नैना बहुत बुरे। तब सों भए पराए हरि सों जब सों जाइ जुरे ॥ १ ॥ मोहन के रस बस ह्वै डोलत तलफत तनिकदुरे । मेरी सीख प्रीत सब छांड़ी ऐसे ये निगुरे ॥२॥ जग खीझ्यौ बरज्यौ पे ए नहिं हठ सों तनिक मुरे। हरीचन्द देखत कमलन से विष के बुते छुरे ॥३॥ ६८ ॥

राधिका पौंढ़ी ऊँची अटारी। पूरनचन्द उयो नभ मंडल फैली बदन उजारी ॥१॥ दोऊ जोति मिलि एक भई है भूमि गगन लौं भारी । सो छबि देखि सखा तृन तोरत हरीचंद बलिहारी ॥ २ ॥ ६९ ॥

देखि सखी देखु आजु कुंजन में नवल केलि करत कृष्ण संग बिबिध भांति राधिका। तैसोइ बहै त्रिविध पौन तैसोइ नभ चंद उग्यो तैसी परछाहीं परत लाज बाधिका ॥ १ ॥ किंकिनि की धुनि सुनात पातन की खरखरात तैसी निसि सनसनात सुखहि साधिका। तहां अलि हरीचंद आय बिनवत ससि कों मनाय आजु रहो थिर ह्वै रथ यह अराधिका ॥ २ ॥ ७० ॥

तुम्हें तो पतितनहीं सों प्रीति । लोकरु बेद

बिरुद्ध चलाई क्यौं यह उलटी रीति ॥१॥ सब बिधि जानत हो निश्चय करि तुम सों छिप्पो न नेक। बेद पुरान प्रमान तजन को मेरो यह अबिबेक ॥ २ ॥ महा पतित सब धर्म्म बिबर्जित श्रुतिनिन्दक अघखान । मरजादा तें रहित मनस्वी मानत कछु न प्रमान ॥३॥ जानत भए अजान कहो क्यौं रहे तेल दै कान। तुम्हैं छोडि जग को नहिं जो मोहि बिगर्यौ करत बखान ॥४॥ बलिहारी यह रीझि रावरी कहां खुटानी आय। हरीचन्द सों नेह निबाहत हरि कछु कही न जाय ॥ ५ ॥ ७१ ॥

रावरी रीझ के बलिजैये। महापतित सों प्रीति पियारे एक तुमहिं में पैये ॥ १ ॥ नेमिन ज्ञानिन दूर राखि के हमसे पास बैठैये। हरीचंद यह जग उलटी गति केवल कहा कहैये ॥ २ ॥ ७२ ॥

नाथ तुम प्रीति निबाहत सांची। करत इकंगी नेह जनन सों यह उलटी गति खांची ॥ १ ॥ जेहि अपनायो तेहिन तज्यौ फिर अहो कठिन यह नेम। जेहि पकर्यौ छोड़त नहिं ताकों परम निबाहत प्रेम ॥ २ ॥ सों भूले पै तुम नहि

भूलत सदा सवांरत काज। हरीचन्द कों राखत हौ बलि बांह गहे की लाज ॥ ३ ॥ ७३ ॥

तुम्हारौ सांचौ हम मैं नेह। कबहूं नाहिं छाड़िहों हमकों दृढ़ ब्रत लीनो एह ॥१॥ प्रेम सत्य तुमरो जग मिथ्या यामैं कछु न संदेह। हरीचन्द जो याहि न मानैं तिन के मुख में खेह ॥ २ ॥ ७४ ॥

नाथ तुम उलटी रीति चलाई। सब शास्त्रन की बात बिगारी पतितन पास बिठाई ॥१॥ बिधि निषेध तामैं नहिं राख्यौ जाहि लियो अपनाई। नाहीं तो क्यौं हरीचन्द सों इतनी प्रीति बढ़ाई ॥ २ ॥७५॥

बलिहारी या दरबार की। बिधि निषेध मरजाद शास्त्र की गति नाहिं जहां पुकार की ॥ १ ॥ नेमी धरमी ज्ञानी जोगी दूर किये जिमि नारकी। पूछ होत जहं हरीचन्द से पतितन के सरदार की ॥२॥७६॥

हमतो दोसहु तुम पें धरिहैं। व्यापक प्रेरक भाखि भाखि कै बुरे कर्म्म सब करिहैं ॥ १ ॥ भलो करम जो कछु बनि जैहैं सो कहिहैं हम कीनो। निसि दिन बुरे करम को फल सब तुम्हरे माथें दीनो ॥ ५ ॥ पतित पवित्र करन तब तुमरो सांचो ह्वै है नाम। जब तारिहौ हठी कोउ जैसो हरीचन्द अघ धाम ॥ ३ ॥ ७७ ॥

प्यारे अब तो तारेहि बनिहै । नाहीं तो तुम कों का कहि है जो मेरी गति सुनि है ॥ १ ॥ लोक वेद मैं कहत सबै हरि अभय दान के दानी । तेहि करि हौ सांचो कै झूठो सो मोहि भाषो बानी ॥ २ ॥ भले बुरे जैसे हैं तैसे तुम्हरेही जग जानै । हरीचन्द कों तारेहि बनि है को अब औरहि मानै ॥ ३ ॥ ७८ ॥

छिपाए छिपत न नैन लगे । उघरि परत सब जानि जात हैं घूंघट मैं न खगे ॥ १ ॥ कितनो करौ दुराव दुरत नहिं जब ये प्रेम पगे । हरीचन्द उघरे से डोलत मोहन रंग रंगे॥ ५॥७९॥

लगौंहीं चितवनि औरहि होति । दुरत न लाख दुराओ कोऊ प्रेम झलक की जोति ॥ १ ॥ निज पीतम कों खोजि लेत हैं भीरहु मैं भरि रंग । रूप सुधा छिपि छिपि कै पीयत गुरुजनहूं के संग ॥ ५ ॥ घूंघट मैं नहिं थिरत तनिकहू अति ललचौंही बानि । छिपतन क्यों हू हरीचन्द ये अन्त जात सब जानि ॥ ३ ॥ ८० ॥

आजु हम देखत हैं को हारत । हम अघ करत कि तुम मोहि तारत को निज बान बिसारत ॥ १ ॥

होड़ पड़ी है तुमसों हमसों देखैं को प्रन पारत। हरी-चन्द अब जात नरक मैं कै तुम धाइ उबारत॥२॥८२॥

कै तौ निज परतिज्ञा टारौ। गीतादिक मैं जौन कही है ताकों तुरत बिसारौ॥ १॥ दीन-बन्धु प्रनतारतिं नासन अपनो बिरद बिगारौ। कै झटधाइ उठाइ भुजा भरि हरीचन्द कों तारौ॥२॥८३॥

लगाओ बेदनपै हरताल। जिन तुम को गायो करुनानिधि भक्तन के प्रतिपाल ॥ १ ॥ पतित उधारन आरतिनासन दीनानाथ दयाल। इन नामन को झूठ करौ पिय छाड़ो सब जंजाल ॥ २॥ देहु बहाइ लीक मरजादा तोरि आपुनी चाल। नांहीं तौ हरिचन्दहि तारौ बेगहि धाइ गुपाल ॥३॥८४

कहौ तुम व्यापक हौ की नांहीं। जौ तुम व्यापक हौ तौ अघ करि क्यौं हम नरकहि जाहीं ॥ १ ॥ जो नहिं पूरन घट घट तो क्यौं लिख्यौ पुरानन माहीं। तासों राखौ हरीचन्द कों चरन छत्र की छांहीं ॥ २ ॥ ८५ ॥

बही मैं ठाम न नेकु रही। भरि गई लिखत लिखत अघ मेरे वाकी तबहुं रही ॥ १ ॥ चित्रगुप्त हारे अति थकि कै बे-सुध गिरे मही। जम-पुर मैं हरताल परी है कछु नहिं जात कही ॥२॥

जम भागे कछु खोज मिलत नहिं सबही बही बही। हरीचन्द ऐसे को तारो तौ तुव नाम सही ॥ ३ ॥ ८६ ॥

पियारे हम तो भक्त इकंगी। सब छोड्यो तुमरे हित मोहन लोकलाज कुल संगी ॥ १ ॥ बिधिनिषेध अरु वेद छांड़ि कै होइ गई मनु नंगी। हरीचन्द चाहै मति मानौ हम तौ तुव रंग रंगी ॥ २ ॥ ८७ ॥

छूट नहिं तुम को कोऊ बिधि प्यारे। हम सब पाप करैंगे बनि है ताहू पैं पुनि तारे ॥ १ ॥ बेदन मैं निज क्यों कहवायो पतित उधारन नाम। क्यौं परतिज्ञा यह कीनौ कै तारहिंगे अघधाम ॥ २ ॥ सुबरन चोर ब्रह्म हत्यारो गुरुतलपगहु सुरापी। अब की बेर निबाहि लेहु पिय हरीचन्द सो पापी ॥ ३ ॥ ८८ ॥

हम नहिं अपुने कों पछितात। यह सोचत कै बिनु मोहि तारे बात तुम्हारी जात ॥ १ ॥ अजामिलादिक के तारन सों भई अतिहि बिख्यात। सो काहू बिधि अब लौं निबही जानी जगत जगात ॥ २ ॥ हरीचन्द तुमरो औ पापी यह

दोऊ अति ख्यात । तासों ताकहं तारि कोऊ विधि राखौ अपनी बात ॥ ३ ॥ ८९ ॥

राग असावरी।

जे जन अन्य आसरो तजि श्रीबिठ्ठलनाथहि गावैं। ते बिनु श्रम थोरेहि साधन में भवसागर तरिजावैं ॥ १ ॥ जिन के मातपिता गुरु बिठ्ठल और कतहुं कोउ नाहीं। ते जन यह संसार समुद्रहि बत्सचरन करि जाहीं ॥ २ ॥ जिन कों श्रवन कीर्तन सुमिरन बिठ्ठलही को भावै । ते जन जीवन मुक्त कहांवहिं मुख देखे अघ जावै ३॥ जिन के इष्ट सखा श्रीबिठ्ठल और बात नहिं प्यारी। जिन के बस में सदा सर्वदा रहत गोबर्धन धारी ॥ ४ ॥ तिन के मनक्रम बच सब भांतिन श्रीबिठ्ठल पद पूजो। ते कृत कृत्य धन्यते कलि में तिन सम और न दूजो ॥ ५ ॥ जे निसादिन श्रीबिठ्ठल बिठ्ठल बिठ्ठलही मुख भाखैं। हरीचन्द तिन के पद की रज हम अपुने सिर राखैं ६॥९०॥

राग असावरी चीर हरण ।

जमुना तट ठाढे नंदनंदन कोऊ न्हान न पावै हो। जो कोउ जल पैठत मज्जन हित ताको चीर चुरावै हो ॥ १ ॥ तोरत हार कंचुकी फारत

चढ़त कदम पै धाई । पुनि पाछेतें पीठ मलत है ऐसो ढीठ कन्हाई ॥ २ ॥ गारी देत कह्यो नहिं मानत हाथ नचावत आई । हम जल मैं नागीं सकुचाहीं सुनहु जसोदा माई ॥ ३ ॥ तुम निज सुत के गुन नहिं जानत कहत लाज अति आवै । हरीचंद बरजति नहिं काहे नित नित धूम मचावै ॥ ४ ॥ ९१ ॥

राग टोड़ी ।

बिनती सुन नंदबाल बरजो क्यौं न अपनो बाल प्रातकाल आइ आइ अम्बर लै भागै । भोर होत जमुना तीर जुरि जुरि सब गोपि भीर न्हात जबै बिमल नीर शीत अतिहि जागै ॥ १ ॥ लेत बसन मन चुराइ कदम चढ़त तुरत धाइ ठाढ़ी हम नीर माहिं नांगी सकुचाहीं । हरीचन्द ऐसो हाल करत नित्य प्राति गोपाल ब्रज में कहो कैसे बसैं अब निबाह नाहीं ॥ २ ॥ ९२ ॥

राग असावरी चेहरा ।

चलो सखी मिल देखन जैये दुलहिनि राधा गोरी जू । कोटि रमा मुख छबि पैं बारौं मेरी नवल किसोरी जू ॥ १ ॥ घंघरी लाल जरकसी सारी सोंधे भीनी चोली जू । मरवट मुख में सिर पैं

मोरी मेरी दुलहिया भोली जू ॥ २ ॥ नकबेसर कनफूल बन्यौ है छबि कापैं कहि आवै जू । अनवट बिछिया मुंदरी पहुंची दूलह के मन भावै जू ॥३॥ ऐसे बनाबनी पै री सखी अपनो तन मन बारी जू । सब सखियां मिलि मंगल गावत हरीचंद बलिहारी जू ॥ ४ ॥ ९३ ॥

राग सारंग रथयात्रा ।

अटा पैं मग जोवत हैं ठाढ़ीं । एहि मारग हरिको रथ ऐहै प्रेम पुलक तन बाढ़ीं ॥ १ ॥ कोउ खिरकिन छज्जन पैं ठाढ़ीं कोउ द्वारे मग जोहैं । करि शृंगार स्याम सुंदर हित प्रेम भरी अति सोहैं ॥ २ ॥ यह आयो वह आयो सजनी कहति सबै ब्रजनारी । लै लै भेंट सामुहे आईं भरि के कंचन थारी ॥ ३ ॥ बीरी देत करति न्यौछाघरि लै आरती उतारैं । हरीचंद ब्रजचंद पिया पैं अपनो तन मन वारैं ॥ ४ ॥ ९४ ॥

निविड़ तमपुंज अतिश्याम गहवर कुंज राधिका श्याम तहं केलि सुंदर रची । परम अंधियार मधि उदय मुख चंद को करत तम दूर सब भांति सोभा सची ॥ १ ॥ हारहिय चमकि उडुगनन की छबि हरत करत किंकिनि चुरी शब्द

मनिगन खची। लखत हरिचन्द सखि ओट ह्वै सुरति सुख काम कामनि काम गरब गति नहिं बची ॥ २ ॥ ९५ ॥

ठुमरी।

सजन तेरीहो मुख देखे की प्रीत। तुम अपने जोबन मद माते कठिन बिरह की रीत ॥१॥ जहां मिलत तहां हंसि हंसि बोलत गावत रस के गीत। हरीचन्द घर घर के भौंरा तुम मतलब के मीत ॥ २ ॥ ९६ ॥

राग असावरी।

अरे कोऊ कहौ संदेसो श्याम को। हमरे प्रान पिया प्यारे को अरु भैया बलराम को। बहुत पथिक आवत है या मग नित प्रती बाही गाम को। कोऊ न लायो पिय को संदेसो हरीचन्द के नाम को ॥ ९७ ॥

राग सारंग।

हम तौ मादिरा प्रेम पिए। अब कबहूं न उतरि है यह रंग ऐसो नेम लिए ॥ १ ॥ भई मतवार निडर डोलत नहिं कुल भय तनिक हिए। डगमगपग कछु गैल न सूझत निज मन मान किए ॥ २ ॥ रहत चूर अपुने प्रीतम पैं तिन पैं

प्रान दिए। हरीचन्द मोहन छैला बिनु कैसे बनतजिए ॥ ३ ॥ ९८ ॥

बैठी ही वह गुरुजन के ढिग पाती एक तहां लै आई। पाती लाय हाथ में दीनी कही श्याम यह तोहि पठाई॥ १ ॥ सुनतहि अति चकृत सी ह्वै रही मात पितहि लखि बहुत लजाई। नैन नचाइ भौंह टेढी करि बोली तासों बुद्धि उपाई॥२॥ अरी बावरी सी क्यौं डोलत यह घर नाहीं क्यौं धुसि आई। सो तो आगे दूर रहत है जाके हित तू पाती लाई ॥ ३ ॥ कै तू नाम भूलि कै वाको ताहि पढ़ावन मो ढिग धाई। औरहु ब्रज में बांचनहारे तिन सों क्यौं न पढ़ावत जाई ॥४॥ जानि परी हम कों याही मिस भेद लेन घर को तू आई। जो चाहैं सो करैं डरैं नहिं या ब्रज की अति कठिन लुगाई ॥ ५ ॥ बे बातहि बदनाम करन की इनकी टेव परी मैं पाई । इन बैरिनि पाछें या ब्रज में कैसे कै बसिये री माई ॥ ६ ॥ दूती समुझि बहुत पछितानी कहि भूली मैं भौन दुहाई। हरीचंद अति चतुर राधिका यों मोहन की प्रीति छिपाई ॥ ७ ॥ ९९ ॥

अथ वेणुगीति ।

श्रीचन्द्रावली मुख चकोरी विजयती ।

दोहा—जै जै श्री घनश्याम वपु, जै श्रीराधा वाम ।
जै जै सब ब्रज सुंदरी, जै बृंदाबन धाम ॥ १ ॥
मायावाद मतंग मद, हरत गरजि हरि नाम ।
जयति कोऊ सो केसरी, वृन्दाबन बन धाम ॥ ३ ॥
गोपीनाथ अनाथ गति, जग गुरु बिट्ठलनाथ ।
जयति जुगल वल्लभ तनुज, गावत श्रुति गुनगाथ ॥ ४ ॥
श्रीबृन्दावन नित्य हरि, गोचारन जब जाहिं ।
बिरह बेलि तबहीं बढ़ै, गोपी जन उर माहिं ॥ ६ ॥
तब हरि चरित अनेक बिधि, गावहिं तन मय होइ ।
करहिं भाव उर के प्रगट, जे राखे बहु गोइ ॥ ७ ॥
जो गावहिं ब्रजभक्त सब, मधुरे सुर सुभ छंद ।
रसना पावन करन कों, गावत सोइ हरिचन्द ॥ ८ ॥

राग सोरठ तिताला ।

सखी फल नैन धरे को एह। लखिवो श्रीब्रज राज कुंवर कों गौर सांवरी देह॥१॥ सखन संग बनते बनि आवत करत बेनु को नाद। धन्य सोई या रस को जाने पान कियो है स्वाद ॥२॥ वह चितवनि अनुराग भरी सी फेरनि चारहुं ओर। हरीचन्द सुमिरतही ताके बाढ़त मैन मरोर ॥३॥१॥

सखी लखि दोउ भाइन को रूप। गोप सखा मंडल मधिराजत मनु द्वै नट के भूप॥१॥ नवदल

मोरपच्छ कमलन की माल बनी अभिराम । ता पै सोहत सुरंग उपरना वेष विचित्र ललाम ॥२॥ नटवर रंगभूमि मै सोभित कबहुं उठत हैं गाय। हरीचन्द ऐसी छबि लखि कै बार बार बलिजाय ॥ ३ ॥ २ ॥

राग देस होरी का ताल।

बंसी कौन सुकृत कियौ। गोपिकन को भागयाने आपुही लै पियौ ॥ १ ॥ करत अमृत पान आपुन औरहू को देत । बचत रस सो पिवत ह्रिदनी वृक्ष लता समेत ॥ २ ॥ प्रगट ह्रिदिनी तटनि तृन पुन श्रवत मधुतरुडार । होत याहि रोमांच वाको बहत आंसूधार ॥ ३ ॥ वेन पुत्र सुपुत्र लखिकै करत दोउ आन्द । आपु हरी न होत अचरज यह बड़ो हरिचन्द ॥ ४ ॥ ३ ॥

राग मल्लार आडा चौताला।

बढ़ी जग कीरति बृन्दाबन की। श्रीजसुदा नन्दन की जापैं छाप भई चरनन की ॥ १ ॥ वेणु धुनि सुनि जहां नाचत मत होइ मयूर । शिखर पै गिरिराज के सब संग कों करि दूर ॥२॥ सबै मोहत देव नर मुनि नदी खग मृग आन । ता समै यह मोर नाचत सुनत बंसी तान ॥३॥

पच्छ यातें धरत सिर पें श्याम नटवरराज । कहत इमि हरिचन्द गोपी बैठि अपुन समाज ॥४॥४॥

बिहाग तिताला ।

धन्य ये मूढ़ हरिन की नारि । पाइ विचित्र वेष नदनन्दन नीके लेहिं निहारि ॥ १ ॥ मोहित होइ सुनहिं बंशी धुनि श्याम हरिन लै संग । प्रनय समेत करहिं अवलोकन बाढ़त अंग अनंग ॥२॥ जानि देवता वन को मानहुं पूजहिं आदर देहिं । हरीचन्द धनधन ये हरिनी जन्म सुफल करि लेहिं ॥ ३ ॥ ५ ॥

राग सोरठ तिताला ।

विमानन देवबधू रहीं भूलि । बनिताजन मन नैन महोत्सव कृष्ण रूप लखि फूलि ॥१॥ सुनि कै अति विचित्र गीतन कों बंशी की धुनि घोर । थकित होत सब अंग अंग में बाढ़त मैन मरोर ॥ २ ॥ खुलि खुलि परत फूल की कवरी नीवी की सुधि नाहिं । हरीचन्द कोऊ चलन न पावत या नभपथ के माहिं ॥ ३ ॥ ६ ॥

देस तिताला ।

लखो सखि इन गौवन को हाल । ऐसी दसा पसुन की है जहां हम तो हैं ब्रजबाल ॥ १ ॥ कृ-ष्णचन्द्र के मुख सों निकसै जो बंशी की तान ।

ता अमृत कों पान करहिं ये ऊंचे करि करि कान ॥२॥ बछरा थन मुख लाइ रहे नहिं पीवत नहिं तृन खात । थन तें पय की धार बहत है नैनन तें जल जात ॥ ३ ॥ इकटक लखत गोविंदचन्द कों पलक परत नहिं नैन । हरीचन्द जहां पशु की यह गति अबलन कों कित चैन ॥ ४ ॥ ७ ॥

सोरठ मल्लार तिताला।

धन्य ये मुनि वृन्दाबन बासी । दरसन हेतु बिहंगम ह्वै रहे मूरति मधुर उपासी ॥ १ ॥ नव कोमल दल पल्लव द्रुम पैं मिलि बैठत हैं आई। नैननि मूंदि त्यागि कोलाहल सुनहिं बेणु धुनि माई ॥२॥ प्राणनाथ के मुख की बानी करहिं अमृत रस पान। हरीचन्द हम कों सोऊ दुर्लभ यह बिधि की गति आन ॥ ३ ॥ ८ ॥

सोरठ तिताला ।

अहो सखि जमुना की गति ऐसी । सुनत मुकुन्द गीतमधु श्रवनन बिहबल ह्वै गई कैसी ॥१॥ भंवर पड़त सोई काम बेग सों थकित होत गति भूली। तट निघस अंकुरित देखियत सोई रोमावलि फूली ॥ २ ॥ चुंबन हित धावत लहरन सों करलै कमल अनेक । मानहुं पूजन हेत चरन

कों यह इक कियो बिबेक ॥ ३ ॥ चरण कमल के सदृस जानि तेहि निसिदिन उरपैं राखै। हरीचन्द जहं जल की यह गति अबलन की कहा भाखै ॥ ४ ॥ ९ ॥

विहाग आड़ा चौताला।

जहां जहां रामकृष्ण चलिजाहीं। तहं तहं आतप जानि देव सब दौरि करहिं तनछाहीं ॥ १॥ खेलहिं संग गोप के बालक चरहिं गऊ सुख पाई। तिन के मध्य बने दोउ राजत मुरली मधुर बजाई ॥ २ ॥ प्रेम मगन ह्वै सुरंग फूल सब गगन आइ बरसावैं। कठिन भूमि कोमल-पद लखिकै मनु पांवड़े बिछावैं ॥ ३ ॥ दूर देस सों आइ देवता रूप सुधा नित पीयैं। हरीचन्द बसि एक गांवं बिनु दरसन कैसे जीयैं॥४॥१०॥

कान्हरा आड़ा चौताला।

अहो सखि धन भीलन की नारि। हरि पद-पंकज को श्रीकुंकुम लेहिं कुचन पै धारि ॥ १ ॥ तन सिंगार जो ब्रजजुबतिन को प्रानपिया पद लायो। सो बनगवन समै ब्रज तृन के पातन मैं लपटायो ॥ २ ॥ हरिपद तल की आभा सों सो अरुन ह्वै रह्यौ मोहै। भक्तन को अनुराग

मनहुं यह चरनन लाग्यौ सोहै ॥ ३ ॥ ताहि देखि भई बिकल कामबस करसों लेहिं उठाई। निज मुख मैं दोउ कुच मैं लावहिं मनजिस ताप नसाई ॥ ४ ॥ जगबंदन नंदनन्दन के पग चन्दन भिलनी पावैं। हरीचन्द हम कों सोउ दुर्लभ एकहि जात कहावैं ॥ ५ ॥ ११ ॥

राग सारंग वा बिहाग तालचर्चरी।

हरिदास बर्य्य गिरिराज धन धन्य सखिराम घनश्याम करैं केलि जापैं। चरन के स्पर्श सों पुलकि रोमांच भयौ सोइँ सब वृक्ष अरु लता तापैं ॥ १ ॥ झरत झरना सोई प्रेम अंसुवा बहत नवत तरुडार मनुहार करहीं। परम कोमल भयो हैयंगवीन सम जानि जापैं कृष्ण चरन धरहीं ॥ २ ॥ करत आदर सहित सबन की पहुनई संग के गोप गोवच्छ लेहीं। पत्रफल मधुर मधुस्वच्छ जल तृन छांह आदि सब बस्तु गिरिराज देहीं ॥३॥ करहिं बहु केलि हरि खेल खेलहिं संग ग्वालगन परम आनंद पावैं। देखि हरिचन्द छवि मुदित बिथकित चकित प्रेप भरि कृष्ण के गुनहिं गावैं ॥ ४ ॥ १२ ॥

सोरठ तिताला।

सखी यह अति अचरज की बात। गोप सखा अरु गोगन लै जब राम कृष्ण बन जात ॥ १ ॥ बेनु बजावत मधुरे सुर सों सुनि कै ताधुनि कान। भूलि जात जगमैं सब की गति सुनत अपूरब तान ॥ २ ॥ बृक्षन कौं रोंमाच होत है यह अचरज अति जान। थावर होइ जात हैं जंगम जंगम थावर मान ॥ ३ ॥ गोबंधन कंधन पै धारे फेंटा झुकि रह्यो माथ। मत्त भृंगजुत है बनमाला फूलछरी पुनि हाथ ॥ ४ ॥ बेनु बजावत गीतन गावत आवत बालक संग। हरीचन्द ऐसी छबि निरखत बाढ़त अंग अनंग ॥ ४ १३ ॥

दोहा—कृष्णचन्द्र के बिरह मैं, बैठि सबै ब्रजबाल।
एहि विधि बहु बातैं करत, तन सुधि बिगत बिहाल ॥ १ ॥
जब लौं प्यारे पीय को, दरस होत नहिं नैन।
इक छन सौ जुग लौं कटत, परत नहीं जिय चैन ॥ २ ॥
सांझ समै हरि आइ कै, पुरवत सब की आस।
गावत तिन को बिमलजस, हरीचन्द हरि दास ॥ ३ ॥

इति श्रीहरीश्चन्द्र कृता वेणु गीति समाप्त।

प्रेमतरंग।

खिमटा।

राधाजी हो वृषभानुकुमारी। कोटि कोटि ससि नखपर वारों कीरति दृग उंजियारी॥ सब ब्रज की रानी सुखदानी जसुदानन्द दुलारी। हरीचन्द के हिये बिराजो मोहन प्रानपियारी॥ १॥

बिरहकी पीर सही नहिं जाय। कहा करों कछु बस नहिं मेरो कीजे कौन उपाय॥ हरीचन्द मेरी बांह पकर के लीजै आय उठाय॥ २॥

अकेली फूल बिनन मैं आई। संग नहीं कोउ सखी सहेली फूल देख बिलमाई॥ या बन के कांटन सों मेरी सारी गई उरझाई। हरीचन्द पिया आय दया करि अपने हाथ छुड़ाई॥ ३॥

खिमटा मांझी का।

श्याम सलोने गात मलिनियां। बड़े बड़े नैन भौंह दोउ बांकी जोबन सों इठलात॥ सुनत नहीं कछु बात कोऊ की राधे के ढिग जात। हरीचन्द कछु जान परे नहिं घूंघट मैं मुसकात॥ ४॥

लगत इन फुलवारिन में चोर। इन सों चौंकत रहियो सजनी छिप रहे चारो ओर॥ अबहिं निकसि अइहैं गहवर सों लैहैं भूषन छोर। हरीचन्द इनसों बच रहियो ए ठगिया बरजोर॥ ५॥

मुख पर तेरे लटूरी लट लटकी। काली घूंघरवाली प्यारी चुनवारी मेरे जिअ खटकी॥ छल्लेदार छबीली लांबी लखि नागिन सब रहीं सिर पटकी। हरीचन्द जंजीरन जकड़ी ये अंखियां अब छुटहिं न अटकी॥ ६॥

कैसे नैया लागे मोरी पार खिवैया तोरे रूसे हो। औड़ी नदिया नावरि झंझरी जाय

परी मँझधार ॥ देइ चुकीं तन मन उतराई छोड़ि चुकीं घर बार। कहि हरिचन्द चढ़ाइ नेवरिया करो दगा मति यार ॥ ७ ॥

सखी बंसी बजी नंदनन्दन की। श्रीवृन्दाबन की कुंजगलिन में सुधि आई सांवर घन की ॥ मगन भई गोपी हरि के रस बिसरि गई सुधि तन मन की ॥ सखि० ॥ ८ ॥

काफी।

कठिन भई आजु की रतियां। पिया परदेस बहुत दिन बीते नहीं आई पतियां ॥ बिरह सतावत दिन दिन हम को कैसे करों बतियां। आय मिलौ पिय हरीचन्द तुम लागूं मै तोरी छतियां ॥ ९ ॥

बजन लागी बंसी लाल की। हौं बरसाने जात रही री सुधि आई बनमाल की ॥ बिसरत नाहिं सखी वह चितवन सुन्दर स्याम तमाल की। हरीचन्द हंसि कण्ठ लगायो बिसरि गई सुधि बाल की ॥ १० ॥

झिंझोटी।

रंगीले रंग दे मेरी चुनरी। स्याम रंग से रंग दे चुनरिया हरीचन्द ऊनरी रे॥ रंगीले० ११

झोझीखेमटा।

छबीले आजा मोरी नगरी हो। सांवरे रंग मनोहर मूरति बांधे सुरुख पगरी हो॥ हरीचन्द पिय तुम बिनु कैसे रैन कटे सगरी हो॥ १२॥

चलो सोय रहो जानी अंखियां खुमारी से लाल भईं, सगरी रैन छतियन पर राखा अधरन का रस लीना। हरीचन्द तेरी याद न भूलै ना जानौं कहा कीना॥ १३॥

दादरा।

सैंया बेदरदी दरद नहिं जानै। प्रान दिये बदनाम भये पर नेक प्रीति नहिं मानै। हरीचन्द अलगरजी प्यारा दया नहीं जिय आनै॥ १४॥

सोरठ।

जबनियां मेरी मुफ़ुत गई बरबाद।

सपन्यौं मैं सखियां नहिं जान्यौं सैयां सुख सेजिया सवाद ॥ बारी बैस सैयां दूर सिधारे दे गये बिरह बिखाद । हरीचन्द जियरै में रहि गई लाखन मोरी मुराद ॥ १५ ॥

सखी राधा बर कैसा सजीला । देखोरी गोइयां नजर नहिं लागै कैसा खला सिर चीरा छबीला ॥ वार फेर जल पीयो मेरी सजनी मति देखो भर नैन रंगीला । हरी-चन्द मिलि लेहु बलैया अंगुरिन करि चट काटि चुटीला ॥ १६ ॥

पीलू ।

का करौं गोइयां अरुझि गई अंखियां । कैसे छिपाऊं छिपत नहिं सजनी छैला मद माती भईं मधुमखियां ॥ सांवरो रूप देख परबस भईं इन कुललाज तनिक नहिं रखियां । हरीचन्द बदनाम भई मैं तो ताना मारत सब संग कि सखियां ॥ १७ ॥

नयन की मत मारो तरवरिया । मैं तो

घायल बिनु चोट भई रे कहर करेजे करिया ॥ काहे को सान देत भौंहन की काजर नयनन भरिया । हरीचन्द बिन मारे मरत हम मत लाओ तीर कटरिया ॥१८॥

जिय लेके यार करो मत हांसी । तुमरी हंसी मरन है मेरो यह कैसी रीत निकासी ॥ आइ मिलो गल लागो पिअरवा अखियां दरसन प्यासी । हरीचन्द नहिं तो जुलफन की मरि हैं दै गल फांसी ॥ १६ ॥

ठुमरी सहाना ।

आज तोहि मिल्यो गोरी कुञ्जन पियरवा । काहे बोलै झूठे बैन कहे देत तेरे नैन देखु न बिथुरि रहे मुख पर बरवा ॥ अंगिया के बंद टूटे कर सों कङ्गन छूटे अपने पीतम जी के लागी है तू गरवा । हरीचन्द लाज मेटी गाढ़े भुज भर भेटी दै दै के उपटि भये चार चार हरवा ॥ २० ॥

काहू सों न लागें गोरी काहू के नयनवां ।

हंसैं सुनि सब लोग मिटै ना बिरह सोग पूछे ते न आवै कछू मुख सों बयनवां ॥ हरीचन्द घबराय बिपति कही न जाय छूटै खान पान मिटैं चित के चयनवां ॥ २१ ॥

ठुमरी ।

भए हो तुम कैसे ढीठ कंर कन्हाई ॥ मटुकी मोरी सिर सों पटकि तापै हंसत हौ ठाढ़े देखो किन ऐसी बान सिखाई । भीर भई देखो ठाढ़ी हंसैं वृजबाल सब लखि मुख मेरो हरिचन्द तुम वृज कैसी यह नई रीत चलाई ॥ २२ ॥

हां दूर रहो ठाढ़े हो कन्हाई । जिन पकरो बहियां मेरी हटो लंगर करो न लंगराई इठलाई । काहे इत आओ अररावे रहो दूर हरिचन्द कैसी रीत चलाई मन भाई ॥ २३ ॥

ठुमरी सोरठ ।

बेपरवाह मोहन मीत, होंती पछिताई हो दिल दे के । बरबस आय फंसी इन फंदन

छोड़ सकल कुलरीत ॥ कीनी चाल पतंग दीप की मानी तनक न नीत। हरीचन्द कछु हाथ न आयो करि ओछे सों प्रीत ॥२४॥

तू मिलजा मेरे प्यारे। तेरे बिन मन-मोहन प्यारे व्याकुल प्रान हमारे। हरीचन्द मुखड़ा दिखला जा इन नयनन के तारे ॥२५॥

बहियां जिन पकरी मोरी, पिया तुम सांवरे हम गोरी। तुम तो ढोटा नन्द महर के हम वृषभानकिशोरी। हरीचन्द तुम कमरी ओढ़ो हम पै नील पिछोरी ॥ २६ ॥

सेजिया जिन आओ मोरी, मैं पइयां लागों तोरी। तुम सौतिन घर रात रहत हो आवत हो उठ भोरी। हरीचन्द हम सों मत बोलो झूठ कहत क्यों जोरी ॥२७॥

झूठी सब ब्रज की गोरी, ये देत उलहनो जोरी। मइया मैं नाहीं दधि खायो मैं नहि मटुकी फोरी। हरीचंद मोहि निबल जान ये नाहक लावत चोरी ॥ २८ ॥

कालिङ्गड़ा।

आओ रे मोरे रूठे पियरवा धाय लगो प्यारी के गरवा। रूठ रहे क्यों मुख सों बोलो हिय की गांठैं हंस हंस खोलो हरीचंद अपनी प्यारी को मान राख राखौ अपने कोरवा ॥ २९ ॥

छतियां लेहु लगाय सजन अब मत तरसाओरे। तुम बिन तलफत प्रान हमारे नयनन सों बहें जल की धारें बाढ़ी है तन बिरह पीर सूरत दिखलाओ रे। हरीचंद पिय गिरवरधारी पैयां परों जाओं बलिहारी अब जिय नाहीं धरत धीर जलदी उठ धाओरे ॥ ३० ॥

मुकट लटक भौंहन की मटक मोहन दिखला जारे। कुण्डल की लटक तानन की खटक मुख तनक हंसन कटककुनी कसन इन दरसन प्यासे नयनन कों प्यारे दरसाजारे। झुक झुक के चलन कलगी की

हलन नित आय आय कछु गाय गाय हरिचंद नाम मेरो लैलै नई तान सुनाजारे ॥ ३१ ॥

पीलू ।

सजन तोरी हो मुख देखे की प्रीत । तुम अपने जोबन मद माते कठिन बिरह की रीत ॥ जहां मिलत तहां हंसि हंसि बोलत गावत रस के गीत । हरीचंद घर घर के भौंरा तुम मतलब के मीत ॥ ३२ ॥

हिंडोलि ।

जमुना तट कुञ्जन बीन रहीं सब सखियां फूलों की कलियां । एक गावत ताल बजाजत हैं करती मिल के एक रंगरलियां ॥ मृगनैनी आय अनेक जुरीं छबि छाय रही बृज की गलियां । हरीचंद तहां मनमोहन जू सखि बन आए लखियो अलियां ॥ ३३ ॥

यह कैसी बान तिहारी मेरे प्यारे गिरवरधारी हो । मारग रोकि रहे सूने बन घेर लई पर नारी । कर बरजोरी मोरी बहियाँ

मरोरी लीनो मटुकी हुं सिर सों उतारी । ऐसी चपलाई कहा करत कन्हाई देखो लोक लाज सब टारी॥ पइंयां परों दूर रहो अंग न छुओ हमारी हरीचन्द तोपें बलिहारी॥३४॥

सजन छतियां लपटा जारे । दोउ नैन जोर कछु भौंह मोर झुकि झूमि चूमि मुख दै झकोरा अधरन पैं धर के अपनो अधर रस मोहि पिला जारे । दोउ भुज बिलास गले बांही डाल मेरे गालन पै धर अपनो गाल उरछाय अङ्ग में अङ्ग में सबै रस रंग बरसा जारे । मेरे खोल कंचुकी बंद हंसि के रस लै जोबन को कसि कसि के हरिचंद रंगीली सेजन पै सब कसक मेटा जारे ३५

सजन गलियों बिच आ जारे । तेरे बिन बाढ़ी बिरह पीर गलियों बिच आजारे ॥ तेरे बिना मोहो नींद न आवे घर अगना कछु नांहि सुहावे इन नयनन सों बहत नीर सूरत दिखला जारे। हरीचंद तू मिल

किन बे रुठाया मेरा यार। कहां गया क्यौं छोड़ गया मोहि तोड़ गया क्यौं प्यार ॥ कि०। बन बन पात पात करि पूंछूं कोई न सुनै पुकार। हरीचंद गल लगत हौंस मैं बिरहिनि जरि भई छार ॥ ४० ॥

किन बिलमायो मेरो प्रान। पाटी कर पटकत निसि बीती रोअत भयो है बिहान ॥ कि०। कहां रैन वसे को मन भाई किन तोर्‌यो मेरो मान। हरीचंद बिन बिकल भई कछु करतब परत न जान ॥ ४१ ॥

भैरवी।

सैंयां तुम हम से बोलो ना। कब के गए कहां रैन गंवाई मत घूंघट पट खोलो ॥ स० ॥ ४२ ॥

काफी।

तेरी छबि मन मानी मेरे प्यारे दिल जानी। प्रात समय जमुना तट पै हौं जात रही पानी ॥ घूंघट उलटि वदन दिसि

हेर्यौ कहि मीठी बानी । हरीचन्द के चित में चुभि गई सूरति सैलानी ॥ ४३ ॥

छयल तोरी रे तिरछी नजर मोहि मारी। जब ते लगी तनक सुधि नाहीं तनकी दसा बिसारी ॥ छयल तोरी रे तिरछी० ॥ ४४ ॥

आजु की रात न जाओ सैंयां मोरी बतियां मानो ना। तुम सौतन के रात रहत हौ हम सों छल मत ठानो। सैंयां मोरी ॥४५॥

बलखात गुजरिया बिरह भरी। भूलि गई सब सुध तनमन की लागी हरि की तिरछी नजरिया। हरिचंद पिया आय मिलो अब मारत है मोहि बिरह कटरिया ॥ ४६ ॥

न जाय मोसों सेजरिया चढ़ीलो न जाय। जागत सब सास ननंद मोरी बजेगी पायल मोसों सेजरिया। तुम अपने मदचूर गिनत नहिं मुख मेरो चूमो गर लाय हाय। हरी-चंद न ऐसी मोसों बनैगी पिआ रे कैसे लाज छांड़ि दौरि आउं तोहि मिलूं धाय ॥४७॥

भैरवी ।

नजरहा छैलारे नजर लगाए चला जाय। नजर लगो बेहोस भई मैं जिय मोरा अकुलाय। व्याकुल तड़पूं नजर न उतरै हाय न और उपाय। हरिचंद प्यारे को कोई लाओ जाय मनाय ॥४८॥

नशीली आंखें वाले सोए रहो अभी है बड़ी रात। सगरी रैनमेरे संग जागत रहे करत रंगीली बात॥ चिड़िया नहीं बोलीं मेरी खनकत काहें अकुलात। हरीचंद मत उठो पियरवा गल लगि करौ रस घात। नशीली आंखेंवाले सोए रहो अभी है बड़ी रात ॥ ४९ ॥

पीलू ।

हम से प्रीति न करन प्यारी हम परदेसी लोगवा। प्रीत लगाय दूर चले जैहैं रहि जैहै जिय सोगवा। परदेसी की प्रीत बुरी है काटे न बिरह की रोगवा। हरीचंद

फिर दुख बढ़ि जैहै कटि है नाहिं बियोगवा ॥ ५० ॥

भैरवी ।

पियारे गर लागो रैन के जागे हो । रैन के जागे प्यारी रस पागे जिय अनुरागे हो ॥ घूमत नैन पीक रंग दागे रसमसे बागे हो । हरीचंद प्यारी मुख चूमत हंसि गर लागे हो ॥ पियारे गर लागो लागो रैन के जागे हो ॥ ५१ ॥

रैन के जागे पिया हो भोरहि मुख दिखलाओ । रङ्गीली नसीली छबीली अंखियन अंखियां यार मिलाओ ॥ घूंघरवाली अलकै बिथुरि रहीं जुलफैं यार बनाओ । हरीचन्द मेरे गलबहियां दे आलस रैन मिटाओ ॥ रैन के० ॥ ५२ ॥

न जाय मोसों सेजरिया चढ़ीलो नजाय। बिरह बाढ्यौ पिय बिनु कैसे कटै रैन सखी मोसीं सेजरिया चढ़ीलो न जाय ॥ हरीचंद

पीया बिनु नींद न आवै सांपिन सी लगै सेज हाय मोरी तड़पत रैन बिहाय। न जाय मोसों सेजरिया चढ़ीलो न जाय ॥५३॥

पूरबी।

अजगुत कीनी रे रामा। लगाय कांची प्रीति गए परदेसवां अजगुत कीनी रे रामा ॥ बारी रे उमिरि मोरी नरम करेजवा बिपति नई दीनी रे रामा। अजगुत कीनी रे०। हरीचन्द बिन रोइ मरौं रे खबरियौ न लीनी रे रामा ॥ अजगुत कीनी रे० ॥ ५४ ॥

आवन की कछु आज पिया की सुरत लगी मेरी सखियां। उड़ि उड़ि अंचल जीबन उमगत फरकत मोरी बाईं अंखियां॥ हरीचन्द पिय कंठ लागि कै होइ हैं ये छतियां सुखियां ॥ ५५ ॥

भैरवी।

रैन की हो पिय की खुमारी न टूटै। बहुत जगाय हारी मोरी सजनी नीदड़िया

नहीं छूटै ॥ भोर भए गर लगत न प्यारो अधर सुधा नहिं घूटै । हरीचन्द पिय नींद को मातो सेज को सुख नहिं लूटै ॥ ५६ ॥

शिकारी मियां वे जुलफों का फन्दा न डारो । जुलफों के फन्दे फंसाय पियरवा नैन बान मत मारो ॥ पलक कटारिन मार भवन की मत तरवार निकारो । हरीचंद मेरे जुलमी घायल छोड़ि न हमैं सिधारो ॥ ५७ ॥

पूरबी ।

अरे प्यारे हम तुम बिनु व्याकुल आजारे प्यारे । तड़पत प्रान हमारे तुम बिन हो दरस दिखला जारे प्यारे ॥ हरीचन्द तुम बिना तलफत गर लपटा जारे प्यारे । अरे प्यारे जल बिन मरत मछरिया इनहिं जिला जारे प्यारे ॥ ५८ ॥

पूरबी वा गौरी ।

पिअरवा रे मिलि जा मत तरसाओ । तुम बिनु व्याकुल कल न परत छिन जलदी

दरस दिखाओ। हरीचन्द पिय अब न सहौंगी धाईं कै गरवां लगाओ ॥ ५९ ॥

प्यारी तोरी बांकी रे नजरिया बड़े तोरे नैना रे प्यारी। प्यारी तोरा रस भरा जोबन जोर मीठे मुख बैना रे प्यारी ॥ तड़पत छैला काहे छोड़ चली रे प्यारी मार गई सैना रे प्यारी ॥ ६० ॥

सांवरे छैला रे नैन की ओट न जाओ। तुम बिन देखे मोरे नैना अति व्याकुल इक छिन मुख न छिपाओ ॥ सदा रहो मोरे नयनन आगे बंसी मधुर बजाओ। हरीचन्द पिय प्यासी अंखियन सुंदर रूप दिखाओ ॥ ६१ ॥

ना बोलौ मोसौं मित्त पियरवा जानि गए सब लोगवा। तुमरी प्रीति छिपी न छिपाए अब निबहैगी बहुत बचाए इन दइमारे नयनन पीछे यह भोगन पर्‌यो भोगवा ॥ हरीचन्द ब्रज बड़े चवाई कहत

एक की लाख लगाई कठिन भयी अब घाट बाट मैं हमरो तुमरो संजोगवा ॥ ६२ ॥

एरी सखी ऐसी मोही परी लचारी रे। का करों मीत मोहन सों बोलतहि बनि आयो पैयां परत बिनती करत हाहा खात बलिबलि जात गिरिधारी। हरिचन्द पियरवा निकट आय मेरे पग सो रहत मुकुट छुवाय ऐसे ढीठ लंगरवा सो हारी रे ॥६३॥

राग सिंदूरा।

भौंरा रे रस के लोभी तेरो का परमान। तू रस मस्त फिरत फूलन पर करि अपने सुख गान। इत सों उत डोलत बौरानो किए मधुर मधु पान। हरीचन्द तेरे फन्द न भूलूं बात परी पहिचान ॥ ६४ ॥

ख़याल।

न जाय मोसों ऐसो झोंका सहीलो न जाय। झुलाओ धीरे डर लगै भारी बलिहारी हो बिहारी मोसों ऐसो झोंका

सह्यौलो न जाय। देखोकर धर मेरी छाती धरधर करै पग दोऊ रहे थहराय हाय। हरिचन्द निपट मैं तो डरि गई प्यारे मोहिं लेहु झट गरवां लगाय न जाय मोसों ऐसो झोंका सह्यौलो न जाय॥ ६५॥

सोरठ।

नींदड़िया नहिं आवै; मैं कैसी करूं एरी सखियां। हरीचन्द पिय बिन अति तड़पैं खुली रहें दुखियां अखियां॥ ६६॥

खयाल।

सखियां री अपने सैंयां के कारनवां हरवा गूथि गूथि लाई। बाग गई कलियां चुनि लाई रचिरचि माल बनाई। हरि-चन्द पिय गल पहिराई हंसि हंसि कंठ लगाई॥ ६७॥

विहाग।

जगता रहियो वे सोवनबालियो ऐहै कारी चोर। आधी रात निखरड गए मैं

सुन्दरनन्द किसोर। लूटन लगिहै जीवन जब तब चलिहै कछू न जोर। हरिचन्द रीती करि जैहै तन मन धन सब छोर ॥६८॥

असवारी।

एरी लाज निछावर करिहौं जौ पियमिलिहैं आज। गहि कर सौं कर गर लपटैहौं करिहौं मन को काज। लोक संक एकौ नहिं मानौं सब बाधक पर डरिहौं गाज। हरिचन्द फिर जान न दैहौं जो ऐहैं ब्रजराज ॥६९॥

ईमन कल्यान।

चतुर केवटवा लाओ नैया। सांझ भई घर दूर उतरनो नदिया गहिरी मेरो जिय डरपैमैंअब तेरी लेहुं बलैया। देहौं जोबन धन उतराई हरीचन्द रति करि मन भाई पैयां लागू तोरी रे बलदाऊ के भैया गर लगो मेरे पीतम सुघर खिवैया ॥ ७० ॥

पूरबी।

प्रानेर बिना की करो रे आमी कोथा

जाई। आमी की सहिते पारी बिरह जंत्रना भारी आहा मरी मरी बिष खाई। बिरहे व्याकुल अति जल हीन मीन गति हरि बिना आमि ना बचाई॥ ७१॥

बेदरदी बे लड़वे लगी तैंड़े नाल। बेपरवाही बारीजी तू मेरा साहबा असी डूथों बिरह बिहाल। चाहन वाले दी फिकर न तुझनूं गल्लों दा ज्वाब न ख्याल। हरीचन्द ततबीर न सुझदी आशक बैतलमाल॥७२॥

बिहाग वा कलिंगड़ा।

मैंतो राह देखतही खड़ी रह गई हाय बीति गई सब रतियां। पिय सांझ के कह गए भयो भोर नहिं आए मदन को बढ्यो जोर हरिचन्द रही पछिताय सीस धुनि करि कै बजर सी छातियां॥ ७३॥

पिया बिनु मोहि जारत हाय सखी देखो कैसी खुली उजियारियां। चन्दा तन लावत बिरह लाय कर पाटी पटकत करत

हाय दुख बढ्यो सखी नहिं पास कोऊ व्याकुल बिरहिन सुकुमारियां। तलपत जल बिनु मछरी सी सेज रहि जात पकरि कर सों करेज हरिचन्द पिया की याद परैं जब बातैं प्यारी प्यारियां ॥ ७४ ॥

काफी पीलू।

क्यौं फकीर बनि आया वे मेरे बारे जोगी। नई बैस कोमल अंगन पर काहें भभूत रमाया वे मेरे बारे जोगी ॥ को वे माता पिता तेरे जोगी जिन तोहि नांहि मनाया वे। कांचे जिय कहु काके कारन प्यारे जोग कमाया वे मेरे बारे जोगी ॥ बड़े बड़े नैन छके मद रंग सों मुख पर लट लटकाया वे। हरीचन्द बरसाने में चल घर घर अलख जगाया वे मेरे बारे जोगी ॥ क्यौं० ॥ ७५ ॥

गौरी।

मोहन मीत हो मधुबनियां। मतवारो

प्यारो रस बादी रसिया छैल छिकनियां ॥ बटपारी लंगर लड़बौरा भरन देत नहिं पनियां। घाट बाट रोकत हरिचन्दहि नयो बन्योदधि दनियां ॥ ७६ ॥

मोहन प्यारो हो नंदगैयां। नित नई अट पट चाल चलावत देखी सुनी जो नैयां॥ लकुट लिए रोकत मग जुवतिन मानत परेहु न पैंयां। हरीचन्द छैला ब्रजजीवन वाको कोउ न गोसैयां ॥ ७७ ॥

मोहन बांको हो गोकुलिया। चलन न देत पंथ रोकत गहि चञ्चल अञ्चल चुलिया ॥ नैन नचावत दधि मटुकिन की करि कै ठाला ढुलिया। हरीचन्द टोना कछु जानत जासों सब ब्रज भुलिया ॥ ७८ ॥

लावनी।

बिना उस्के जल्वा के दिखाती कोई परी या हूर नहीं। सिवा यार के, दूसरे का दुनियां में नूर नहीं ॥ जहां में देखो जिसै

खूबरू वहां हुस्न उस्का समझो । झलक उसी की, सभी माशूकों में यारो मानो ॥ जहां कोई खुशगुलू मिलै तुम वहां उसी का बोल सुनो । जुल्फों को भी, उसी का पेच समझ कर आके फसो ॥ नशीली आखें वहां नहीं हैं जहां मेरा मखमूर नहीं । सिवा यार के० ॥ १ ॥ जहां पै देखो नाज गजब का उस के सब नखरे जानो । देख करिश्मा, उसी सीगे में उसको गरदानो ॥ जहां हो भोलापन तुम उस भोले को वहां पै पहिचानो । जुल्म जो देखो, तो उस जालिम की बेरहमी मानो ॥ बिना उस के इस शीशए दिल को करता कोई चूर नहीं । सिवा यार के० ॥ २ ॥ बिना मिले उस मह कि झलक माशूकपना आताही नहीं । बगैर उस के, निवानी शक्ल कोई पाताही नहीं ॥ मजाल क्या है दिल छीनै उस बिना दिया जाताही नहीं । उस को छोड़

कर, दूसरा आंखों को भाताही नहीं॥ जितने खूबरू जहां में हैं वो कोई उस्से दूर नहीं। सिवा यार के० ॥ ३ ॥ वही मेरा माशूक झलक इन बुतों में भी दिखलाता है। वही इश्क में, आशकों को हर तरह फसाता है ॥ कहीं मेहरवां बनता है औ कहीं जुल्म फैलाता है। गरज के हर जा, मुझे वो यारही नजर आता है ॥ हरी-चन्द जो और देखते वे आशक भरपूर नहीं। सिवा यार के, दूसरे का दुनियां में नूर नहीं ॥ ४ ॥ ७८ ॥

करि निठुर श्याम सों नेह सखी पछताई। उस निरमोही की प्रीति काम नहिं आई ॥ उन पहिले आकर हम से आंख लगाई। करि हाव भाव बहु भांति प्रीति दिखलाई ॥ ले नाम हमारा बंसी मधुर बजाई। अब हमें छोड़ के दूर बसे जदुराई॥ कुबरी ने मोहा रहे वहीं बिलमाई। उस

निरमोही की प्रीत काम नहिं आई ॥ १ ॥
हमने जिसके हित लोक लाज सब छोड़ी।
सब छोड़ रहे एक प्रीत उसी से जोड़ी ॥
रहीं लोक बेद घर बाहर से मुख मोड़ी।
पर उन नहिँ मानी सो तिनका सी तोड़ी ॥
इक हाथ लगी मेरे जग बीच हँसाई। उस
निरमोही की प्रीति काम नहिँ आई ॥ २ ॥
हम उन बिन सखियां बन बन ढूंढ़त
डोलैं। पिय प्यारे प्यारे मुख से सब छिन
बोलैं ॥ जिन कुञ्जन में हरि हँसि हँसि
करी कलोलैं। वहां व्याकुल हो हम मूंद
मूंद दृग खोलैं ॥ दै दगा जुदा भए मोहन
बिपति बढ़ाई। उस निरमोही की प्रीति
काम नहिँ आई ॥ ३ ॥ क्या करैं कोई तद-
बीर न और दिखाती। दिन रोते कटता
रात जागते जाती ॥ बिरहा से सब छिन
हाय दहकती छाती। कोई उनसे जा यह
मेरी बिथा सुनाती ॥ हरिचन्द उपाय न

चलै रही पछताई । उस निरमोही की प्रीति काम नहिं आई ॥ ४ ॥ ७९ ॥

बारहमासा ।

तुम सुनो सहेली संग की सखी सयानी।
पिय प्यारे की मैं कहँ लौं कहौं कहानी ॥
एक दिन मैं अंधेरी रात रही घर सोई।
पलँगों पै अकेली और पास नहिं कोई ॥
हरि आय अचानक सोए पास भय खोई।
मुख चूमि कस्यो मेरे भुज सों भुज सोई ॥
मैं चौंक उठी लियो गल लगाय सुखदानी।
पिया प्यारे की मैं कहँ लौं कहौं कहानी ॥१॥
एक सांझ अकेली मैं थी गलियों आती ।
लिये अंचल नीचे घर हित दीआ बाती ॥
आए इतने सखि मेर बाल संघाती। उन दीप बूझाय लगाय लई मोहि छाती मैं औचक रह गई कियो जोई मन मानी । पिया प्यारे की मैं० ॥ २ ॥ एक दिन मेरे घर जोगी बन कर आए । सिर जटा बढ़ाए

अंग भभूत लगाए ॥ चढ़ सीढ़ी नाम लै हर को अलख जगाए । मैं भिच्छा ले गई तब मुख चूमि लुभाए ॥ बोले भिच्छा थी मुझे यही मेरी रानी । पिया प्यारे की मैं० ॥ ३ ॥ जब मिले जहां हंसि लीनों चित्त चुराई । मुख चूमि भए बलिहार कण्ठ रहे लाई ॥ बिनती कर बोले सदा प्रीति दिखलाई । सपने में भी नहिं देखी कभी रुखाई ॥ रहे सदा हाथ पर लिए मुझे दिल जानी । पिया प्यारे की मैं० ॥ ४ ॥ एक दिन कुञ्जों में साथ दूसरी नारी । अपने सुख बैठे थे मिलकर गिरधारी ॥ मैं गई तो सकुचे झट यह बुद्ध बिचारी ॥ बोले यह आई तुमहिं मिलावन प्यारी । तुम घर भेजन की बिनती करि यह आनी । पिया पयारे की मैं० ॥ ५ ॥ मेरे सुख में पिय नें सब दिन सुख माना । मुझे अपना जीवन प्रान सदा कर जाना । मेरे हितसब

सखियों का सहते ताना । मुरझाएं जी मुख मेरा कुछ मुरझाना ॥ गुन लाख एक मुख कैसे बोलौं बानी। पिया प्यारे की मैं०॥६॥ वह बन बन बिहरन कुञ्ज कुञ्ज तरुपातैं। वह गल भुज डालन प्रीत रीत की घातैं ॥ वह चन्द चांदनी और निराली रातैं। एक एक की सौ सौ जी में खटकती बातैं ॥ हरिचन्द बिना भई रोरी हाय दिवानी। पिया प्यारे की मैं० ॥ ७ ॥ ८० ॥

दुख किस्से कहूं कोई साथ न सखी सहेली। मुझे छोड़ गए मन मोहन हाय अकेली। मैं पिय बिन तड़पूं हाय पास नहिं कोई। रही सपने की संपत सी सब सुख खोई। जो मैं पिय बिनु नहि कभी पलंग पर सोई। सोइ आज सेज सूनी लखि दुख सों रोई। जङ्गल सी मुझको लगती हाय हवेली। मुझे छोड़ गए० ॥१॥ मेरे बाल सनेही मुझको छोड़ सिधारे।

तड़पूं व्याकुल मैं बिन ब्रज के रखवारे ॥ कहां बिलमि रहे किन मोहे पीय हमारे। नहिं खबर मिली भये निपट निठुर पिय प्यारे ॥ यह बिरह बिथा नहिं जाती है अब झेली। मुझे० ॥ २ ॥ मेरा बाला जोबन पड़ी बिपत सिर भारी। दिन कैसे काटूं भई उमर की ख्वारी ॥ यह नई आपदा सिर से जात न टारी। कहां गए हाय मुझे छोड़ पिया गिरधारी ॥ भई उन बिन मैं मुरझाय जली ज्यों बेली। मुझे० ॥ ३ ॥ गए सुरत भूल नहिँ पाती भी भिजवाई। करि याद पिया की हाय आंख भरि आई ॥ सांपिन सी सेज घर बन सी परत दिखाई। जीना भया भारी दामोदर दुखदाई ॥ हरि-चन्द बिना भई जोगिन दे गल सेली। मुझे० ॥ ४ ॥ ८१ ॥

वही तुम्हें जाने प्यारे जिसको तुम आपही बतलाओ। देखे वही बस, जिसे

तुम खुद अपने को दिखलाओ ॥ क्या मजाल है तेरे नूर की तरफ आंख कोई खोले। क्या समुझे कोइ, जो इस झगड़े के बीच आकर बोले ॥ खयाल के बाहर की बातें भला कोई क्योंकर तोले। ताकत क्या है, मुअम्मा तेरा कोई हल कर जो ले ॥ कहां खाक यह कहां पाक तुम भला ध्यान में क्यौं आओ। देखे वही० ॥ १ ॥ गरचे आज तक तेरी जुस्तजू खासो आम सब किया किये। लिखीं कितावें, हजारों लोगों ने तेरेही लिये ॥ बड़े बड़े झगड़े में पड़े हर शख्स जान रहते थे दिये। उम्र गुजारी, रहे गल्तां पेचां जब तक कि जिये ॥ पर तुम हो वह शै कि किसी के हाथ कभी क्यों कर आओ। देखे वही० ॥ २ ॥ पहिले तो लाखों में कोई बिरलाही झुकता है इधर। अपने ध्यान में, रहा वह चूर झुका भी कोई अगर ॥ पास छोड़ कर मजहब का खोजा

न किसी ने तुम्हें मगर। तुमको हाजिर, न पाया कभी किसी ने हर जा पर॥ दूर भागते फिरो तो कोई कहां से पाए बतलाओ। देखे वही० ॥ ३ ॥ कोई छांट कर ज्ञान फूल के ज्ञानी जो कहलाते हैं। कोई आपही, ब्रह्म बन कर के भूले जाते हैं॥ मिला अलग निरगुन व सगुन कोइ तेरा भेद बताते हैं। गरज कि तुझको, ढूंढ़ते हैं सब पर नहिं पाते हैं॥ हरीचन्द अपनो के सिवा तुम नजर किसी के क्यौं आओ। देखे वही बस० ॥ ४ ॥ ८२ ॥

चाहे कुछ हो जाय उम्र भर तुझी को प्यारे चाहेंगे। सहेंगे सब कुछ, मुहब्बत दम तक यार निवाहेंगे॥ तेरी नजर की तरह फिरैगी कभी न मेरी यार नजर। अब तो योंहीं, निभैगी युंहीं जिन्दगी होगी बसर॥ लाख उठाओ कौन उठैहै अब न छुटैगा तेरा दर। जो गुजरैगी, सहैंगे

करैंगे यौंही यार गुजर ॥ करोगे जो जो ज़ुल्म न उन को दीलवर कभी उलाहैंगे। सहैंगे सब कुछ मुहब्बत दम तक यार निबाहैंगे ॥ १ ॥ आह करैंगे तरसैंगे गम खायेंगे चिल्लायेंगे। दीन व ईमं, बिगाड़ैंगे घर बार डुबाएंगे ॥ फिरैंगे दर दर बे इज्जत हो आवारे कहलाएंगे। रोयेंगे हम, हाल कह औरों को भी रुलायेंगे। हाय हाय कर सिर पीटैंगे तड़पैंगे कि कराहैंगे। सहैंगे सब कुछ, मुहब्बत दम यार निबाहैंगे ॥ २ ॥ रुख फेरो मत मिलो देखने को भी दूर से तरसाओ। इधर न देखो, रकीबों के घर में प्यारे जाओ ॥ गाली दो कोसो झिड़को दो खफा हो घर से निकलवाओ। क़त्ल करो या, नीमबिसमिल कर प्यारे तड़पाओ ॥ जितना करोगे ज़ुल्म हम उतना उलटा तुम्हें सराहैंगे। सहैंगेसब कूछ, मुहब्बत दम तक यार निबाहैंगे ॥ ३ ॥

होके तुम्हारे कहां जांय अब इसी शर्म से मरते हैं। अब तो योंही, जिन्दगी के बाकी दिन भरते हैं॥ मिलो न तुम या कत्ल करो मरने से नहीं हम डरते हैं। मिलेंगे तुमको, बाद मरने के कौल यह करते हैं॥ हरीचन्द दो दिन के लिये घबरा के न दिल को डाहेंगे। सहेंगे सब कुछ, मुहब्बत दम तक यार निबाहेंगे॥ ६॥ ८३॥

बाल य दिल के वबाल दिलवर ने मुखड़े पर डाले हैं। जुल्फ के फन्दे, तुम्हारे सब से यार निराले हैं॥ कल्लेदार छबीले लम्बे लम्बे यह छहराते हैं। बल खाखा कर, फन्द में अपने दिल को फसाते हैं॥ चिलकदार चुनवारे गिंडुरी से होकर रह जाते हैं। हिल हिल कर के कभी यह अपनी तरफ बुलाते हैं॥ पेचदार खम खाए उलझे सुलझे घूंघर वाले हैं। जुल्फ के फन्दे०॥ ॥१॥ कहूं इश्क पेंचां आशिक की पेच में भी

यह लाते हैं। फांसी भी हैं, मुसाफिर को बेतरह फंसाते हैं॥ जाल हैं यह जंजाल से सबको जाल में करके जाते हैं। जादू की यह, गिरह हैं दिल की अजब भुलाते हैं॥ काले काले गजब निकाले पाले क्या यह काले हैं। जुल्फ के फन्दे० ॥ २ ॥ देख इनका तलवार ने खम दम स्यान में मुंह को छिपा दिया। भौरों ने भी, न इन सा हो के गंजना शुरू किया॥ हजार सिर बुलस ने पटका हुई न ऐसी सांवलिया। सिवार ने भी शर्म से पानी में मुंह डुबा लिया॥ मुश्क से खुशबू में रेशम से चमक में यह चौकाले हैं। जुल्फ के फन्दे० ॥ ३ ॥ बंसी हैं दिल के शिकार को लालच देके फसाने के। छींके हैं यह, लटकते दोनों दिल लटकाने के॥ आंकुस की हैं नोक जिगर से खींच के दिल को लाने के। जंजीरों से यह बढ़ कर दिल को कैद कर

जाने के ॥ दिल के दुखाने को बीछू के डंक से भी जहराले हैं। जुल्फ के फन्दे० ॥ ४ ॥ तुम्हें नूर की शमा कहूं तो धुआं इन्हें कहना है बजा। रुखसारों पर यः दोनों चंवर ढला करते हैं सदा ॥ यह वह उकदा है जो किसी से अब तक प्यारे नहीं खुला। कहूं मुअम्मा, तो इस में नहीं बाल भर फर्क जरा॥ दिल के पहुंचने को गालों तक कमन्द दोनों डाले हैं। जुल्फ के फन्दे० ॥ ५ ॥ इन में जो आकर फंसा वह फिर न उम्र भर कभी छुटा। बला हैं बस यह, हमेशः इन से बचाये दिल को खुदा ॥ जंत्र मंत्र कुछ लगा न उस को जिस को इन सांपों ने डसा। हरीचन्द के, जुल्फ में दिल अब तो बेतरह फँसा ॥ भूल भुलैयां से उलझे चिकने महीन चमकाले हैं। जुल्फ के फन्दे, तुम्हारे सब से यार निराले हैं ॥ ६ ॥ ८४ ॥

आंखों में लाल डोरे शराब के बदले।

हैं जुल्फ छुटीं रुख पर निकाब के बदले ॥
नित नया जुल्म करना सवाब के बदले ।
झिड़की देना हरदम जवाब के बदले ॥
त्योरी में बल बालों के ताब के बदले ।
खून में रंगना कपड़ा शहाब के बदले ॥
सब ढंग आज कल हैं जनाब के बदले । हैं
जुल्फ छुटीं ॥ १ ॥ पीते हैं जिगर का खून
आब के बदले । खाते हैं सदा हम गंम
कबाब के बदले ॥ खुशबू तेरी सूंघी गुलाब
के बदले । लेते हैं नाम तेरा किताब के
बदले ॥ तब रुपोशी यह किस हिसाब के
बदले । हैं जुल्फ छुटीं० ॥ २ ॥ ह्यां सदा
जईफी है शबाब के बदले । मस्तों से मिले
बस शेखो शाब के बदले ॥ रातों को
जागते रहे ख्वाब के बदले । मुंह तेरा देखा
माहताब के बदले ॥ नागिन जिस पर अब
हैं सहाब के बदले । हैं जुल्फ छुटीं० ॥ ३ ॥
दिन कभी न इस खांन खराब के बदले ।

मरना बेहतर इस इजतिराब के बदले ॥ हो हरीचन्द पर खुश अताब के बदले। कर अब तो रहम जालिम अजाब के बदले। क्यों नए चोचले हैं हिजाब के बदले। हैं जुल्फ छुटीं० ॥ ४ ॥ ८५ ॥

सपने में बनाई हुई।

मोहि छोड़ि प्रान पिय कहूं अनत अनुरागे। अब उन बिनु छिन छिन मान दहन दुख लागे॥ रहे एक दिन वे जो हरिही के संग जाते। वृन्दाबन कुञ्जन रमत फिरत मद माते॥ दिन रैन श्याम सुख मेरेही संग पाते। मुझ देखे बिन इक छन प्यारे अकुलाते॥ सोई गोपीपति कुबरी के रस पागे। अब उन बिनु छिन० ॥ १ ॥ कहां गईं श्याम की वे मनहरनी बातैं। वह हंसि हंसि कण्ठ लगावनि करि रस घातैं॥ वह जमुना तट नव कुञ्ज कुञ्ज द्रुम पातैं। सपने सी भईं अब वे बिहरन की रातैं॥

सहि सकत न कठिन बियोग अगिन तन दागे। अब उन बिनु छिन० ॥ २ ॥ पहिले तो सुन्दर मोहन प्रीति बढ़ाई। सबही बिधि प्यारे अपनी कर अपनाई ॥ सुख दै बहु भांतिन नित नव लाड़ लड़ाई। अब तोड़ि प्रीति मोहि छोड़ि गए ब्रजराई ॥ संजोग रैन बीतत बियोग दुख जागे। अब उन बिन छिन० ॥ ३ ॥ क्या करूं सखी कुछ और उपाय बताओ। मेरे पीतम प्यारे मुझ से आन मिलाओ ॥ जिय लगी बिरह की भारी अगिन बुझाओ। मैं बुरी मौत मर रही मिलाइ जिलाओ ॥ हरिचन्द स्याम संग जीवन सुख सब भागे। अब उन बिनु छिन छिन प्रान दहन दुख लागे ॥ ४ ॥ ८६ ॥

जब तक फंसे थे इसमें तब तक दुख पाया औ बहुत रोए। मुंह काला कर, बखेड़े का हम भी सुख से सोए ॥ बिना बात इस में फंस कर रंज सहा हैरान रहे।

मजा बिगाड़ा, अपना नाहक हो को परेशान रहे॥ इधर उधर झगड़े में पड़े फिरते बस सर करदान रहे। अपना खोकर, कहाते बेवकूफी नादान रहे॥ बोझ फिक्र का नाहक को फिरते थे गरदन पर ढोए। मुंह काला कर, बखेड़े का हम भी सुख से सोए॥ १॥ मतलब की दुनियां है कोई काम नहीं कुछ आता है। अपने हित को, मुहब्बत सब से सभी बढ़ाता है॥ कोई आज औ कल कोई सब छोड़ के आखिर जाता है। गरज कि अपनी, गरज को सभी मोह फैलाता है॥ जब तक इसे जमा समझे थे तब तक थे सब कुछ खोए। मुंह काल कर, बखेड़े का हम भी सुख से सोए॥२ जिसको अमृत समझे थे हम वह तो जहर हलाहल था। मीठा जिस को, जानते थे वह इनारू का फल था॥ जिस को सुख का घर समझे थे वह तो दुख का जंगल था।

जिन को सच्चा, समझते थे वह झूठों का दल था ॥ जीवन फल की सासा में उलटे हमने थे बिष बोए । मुंह काला कर, बखेड़े का हम भी सुख से सोए ॥३॥ जहां प देखो वहीं दगा औ फरेब औ मक्कारी है । दुखही दुख से, बनाई यह सब दुनियां सारी है ॥ आदि मध्य औ अन्त एकरस दुखही इस में जारी है । कृष्ण भजन बिन, और जो कुछ है वह ख्वारी है ॥ हरीचन्द भव पंक छुट नहिं बिना भजन रस से धोए । मुह काला कर, बखेड़े का हम भी सुख से सोए ॥४॥ ८७ ॥

पिय प्राननाथ मनमोहन सुन्दर प्यारे । छिनहू मत मेरे हो हु द्दगन सों न्यारे ॥ घनश्याम गोप गोपीपति गोकुलराई । निज प्रेमी जन हित नित नित नव सुखदाई ॥ वृन्दावन रच्छक ब्रज सरबस ब्लभाई । प्रानहुं ते प्यारे प्रियतंम मीत कन्हाई ॥

श्रीराधानायक जसुदानन्द दुलारे। छिनहूं०॥ तुव दरसन बिन तन रोम रोम दुख पागे। तुव सुमिरन बिनु यह जीवन बिष सम लागे॥ तुमरे संजोग बिनु तन बियोग दुख दागे। अकुलात प्रान जब कठिन मदन मन जागे॥ मम दुख जीवन के तुम हो इक रखवारे। छिनहूं० ॥ तुम ही मम जीवन को अवलम्ब कन्हाई। तुम बिनु सब सुख के साज परम दुखदाई॥ तुव देखेही सुख होत न और उपाई। तुमरे बिनु सब जग सूनो परत लखाई॥ हे जीवनधन मेरे नैनों के तारे। छिनहूं० ॥ तुमरे बिनु इक छन कोटि कलप सम भारी। तुमरे बिनु स्वरगहु महानरक दुखकारी॥ तुमरे संग बनहू घर सों बढ़ि बनवारी। हमरे तौ सब कुछ तुमही हौ गिरधारी॥ हरिचन्द हमारे राखौ मान दुलारे। छिनहूं मत मेरे होहु हगन तें न्यारे॥ ८८॥

बरवा ।

(धुन) [मोरि तो जीवन राधे इस चाल पर]

मोहन दरस दिखा जा व्याकुल अति प्रान प्यारे दरस दिखा जा । बिछुरी मैं जनम जनम की फिरी सब जग छान । अब की न छोड़ों प्यारे यही राखो है ठान । हरिचन्द बिलम न कीजै दीजै दरसनदान ॥ ८९ ॥

दरस मोहि दीजै हो पिय प्रान । दरस दीजै अधर पीजैं कीजै परस सुजान । तुम बिनु व्याकुल धीर न आवत लीजै अरज यह मान । हरीचन्द मोहि जानि आपनो करिये जीवन दान ॥ ९० ॥

पूरबी रेखता ।

हमैं दरसन दिखा जाओ हमारे प्रान के प्यारे । तेरे दरसन को ए प्यारे तरस रही आंख बरसों से इन्हैं आकर के समझाओ हमारे आंख के तारे । सिथिल भई हाय यह काया है जीवन ओठ पर आया भला

अब तो करो माया मेरे प्रानों के रखवारे। अरज हरीचन्द की मानो लड़कपन अब भी मत ठानों बचालो प्रान दरसन दो अजी ब्रजराज के बारे ॥ ९१ ॥

ठुमरी।

पियारे सैयां कौने देस रहे रूसि जोवना को सब रंग चूसि। हरीचन्द भए निठुर श्याम अब पहिले तो मन मूसि ॥ ९२ ॥

पियारे पिया कौन देस रहे छाय। कापर रहे बिलमाय। मेरी सुध बिसराय प्रेम सब जिय सों दूर भुलाय। हरीचन्द पिय निठुर बसे कित जोगिन हमहिं बनाय ॥ ९३ ॥

पिया प्यारे तोहि बिनु रह्यो नहिं जाय। कौन सो करों मैं उपाय। कहत चन्द्रिका आइ मिलो अब लेहु गरे लपटाय ॥ ९४ ॥

आओ पिया प्यारे गरे लगि जाओ। काहें जिअ तरसाओ कहत चन्द्रिका धाइ- मिलो अब जिय की जरनि जुड़ाओ ॥ ९५ ॥

खेमटा ।

अबना आओ पिया मोरी सेजरिया । जात बिदेस छोड़ि तुम हम कों हनि हनि हिय मैं बिरह कटरिया । कहत चन्द्रिका हरीचन्द्र पिय जाओ वहीं जहां लाए नजरिया ॥ ९६ ॥

रेखता ।

मोहन पिय प्यारे टुक मेरो ढिग आव । वारी गई सूरत के बदन तो दिखाव ॥ तरस गए अंग अंग गर मैं लपटाव । तेरी मैं चेरी मुझे मरत सो जिलाव ॥ वही रूप वही अदा दीने जिन घाव । प्यारे ! हरि-चन्दहि फिर आज भी दरसाव ॥ ९७ ॥

दिलदार यार प्यारे गलियों में मेरे आजा । आंखें तरस रही हैं सूरत इन्हे दिखा जा ॥ चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तो मत सतारे । लाखों ही दुख सहारे टुक अब तो रहम खाजा ॥ तेरे ही हेत मोहन छानी है खाक

बन बन। दुख झेले सरप अनगन अब तो गले लगा जा॥ मन को रहूं मैं मारे कब तक बता दे प्यारे। सूखे बिरह में तारे पानी इन्हे पिलाजा॥ सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई। जिस का कहीं न कोई उसका तो जी बचा जा॥ मुझ को न यों भुलाओ कुछ शर्म जी में लाओ। अपनों को मत सताओ ए प्रान प्यारे राजा॥ हरिचन्द नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारा। मरती है वह बिचारी आकर उसे जिला जा॥ ६८॥

गजल।

बंसी बजा के हम को बुलाना नहीं अच्छा। घर बार को यों हम से छुड़ाना नहीं अच्छा॥ घर बार छुड़ाते हो तो फिर हम को न छोड़ो। अपनों को यों दामन से छुड़ाना नहीं अच्छा॥ करना किसी पै रह्म इक अदना सी बात पर। मुतल किसी

प ध्यान न लाना नहीं अच्छा ॥ हम तो उसी में खुश हैं खुशी हो जा तुमारी। फिर हम से छिपा कर कहीं जाना नहीं अच्छा ॥ गाओ जो चाहो बंसी में हैं राग हजारों। रट नाम कीमेरे हो लगाना नहीं अच्छा ॥ मिल जायेंगे हम कुंज में मौका जो मिलैगा। गलियों मे हमारे सदा आना नहीं अच्छा ॥ हरिचन्द तुम्हारे ही हैं हम तो सभी तरह। यों अपने गुलामों को सताना नहीं अच्छा ॥ ९९ ॥

अथ बंगलागान।

प्रानप्रिये शशिमुखि विदाय दाओ आमारे। शून्य देह लो ए जावो प्रान दिए तोमारे ॥ करि हे विनय हइया सदय आमारे विदाय दाओ जाईं देशांतरे ॥ १ ॥ प्राननाथ निदय हए विदाय चेओना तोमा विना प्रान, नाहिं रबे प्रान। किसे पाब त्रान आमाय बलोना ॥ आमि हे अबला,

ताहा ते सरला । बिरह ज्वाला, प्राने सबेना ॥ २ ॥

जाई जाई करे नाथ दिओ नाहे जातना। तोमार विच्छेदे ए जीवन रबेना ॥ पुनः एनयन, ससांक बदन करिबे दर्शन कबेओहे बलोना ॥ तोमारे नाहेरे प्रान जेकी करे किकब तोमारे, तुमि किहे भावना ॥ ३ ॥

प्रान नाथ विदेशे ते जेते दिवना । जाबे जाओ कांत, किंतु हे नितांत । आमारे एकांत, आरकांत पाबेना ॥ तोमार विहन, एछार जीवन। ओ प्रान धन, आर रबेना॥४॥

आर जातना प्राने सहेना। सदा मन उचाटन, झरिछे दु नयन। कांत बुझि ए-जीवन, आमार आर रबेना ॥ हाए एमन समय, कोथा ओहे रसमय, हईया अति सदय, आछ प्रान बलोना ॥ ५ ॥

प्राननाथदखा दाओ आसि अबलाय। जे दुःख पेतेछि आमि, मन जाने आर आमि

जानि आर ईश जिनि कि मने आमि जानव तोमाय ॥ ६ ॥

अमार जे दशा नाथ आसिया हेदेखना। हरिश्चन्द्र नाथ जार, केन हेन दशा तार। बल ओहे गुन मनि, आमारे हे बलोना ॥ सदा मन उचाटन, दहि छे जीवन मन। असह्य चन्द्रिका जीवने सहेना यातना ॥ ७ ॥

कोथाय रहिल सहिल सखि से गुनमणि। विच्छेद यातना, आरजे सहेना। कि करि बल न, ओ प्रान सजनी॥ केमने एखन, धरिव जीवन। से कांत विहन वलो. धनी ॥८॥

हाय बिधि एत मोरे केन निरदय। अमूल्यरतन करिया अर्पन। केन गो हरन ताहारे करय ॥ मम प्रान धन, हृदय रतन रमनी मोहन कोथाय गो जाय ॥ ९ ॥

तुम कर के तोमार. कारे बलरे मन आपना। मिछा एसंसार माया जुड़े आछे

त्रीभुवन ॥ दारा सुत परिवारु संगे कि जावे तोमार । जखन तुमि मुदिवे दुनयन ॥ १० ॥

ओहे हरि दया मय! एभव जंचना, आरजे सहेना । करिया करुना, उधारो आमाय ॥ ११ ॥

ओहे नाथ करुनामय । प्रभु हरि दया-मय, दया करो एजनाय । नामे ना कलंक रय उद्धारो तराय ॥ अमि अति मुढ़ मति, न जानो भकति स्तुति । कि हवे आमार गति, वलगा आमाय ॥ १२॥

मन केन रेभाव एत । ओई जे दिवानि-शी भावछ वसी । जेन वुधि हए छे हत ॥ एतेक भावन, किसेर कारण, हवे बुझि पागलेर मत ॥१३॥

आमार नाथ बड़ दया मय । करुना आकर दयार सागर दयामय नाम सगत भीतर । एक मुखे गुन वर्णना जे भार । कहि छे चन्द्रिका भाविया हृदय ॥ १४ ॥

कालिगंड़ा एक ताला।

ओ प्रान नयन कोने चाइल परे ज्वति कि आछे। आमार के दे सोहाग जेंचे मान तोमार काछे॥ जथा इच्छा तथा जाबो, सदत हृदय रओ। तोमार विहन कओ, आमार कि आछे॥१५॥

सिन्धु धीमा तिताला।

ए सोहाग आर आमार काज नाई। सदत हृदय जे ज्वाला पाई॥ हृदय दहन जायगो जीवन। कि करि एखन बल गोसई॥ १६॥

प्रांननाथ कि वले छिले। ए दारुण ज्वाला हृदे केन गो दिले॥ हृदय माझेते राखिव तोमाय। सदत बलिते नाथ हे आमाय॥ से सब कथन रहिल कोथाय। भेवे देख प्रान कि करि ले॥ १७॥

कोथाय रहिले प्रान एमन वरखाते। देख घन घन, बरिषे नयन। अबलारे भिजाते। बल ओरे प्रान, तोमा कान जन, भिखाले एमन आमारे कादांतें। चन्द्रिका

जेवले नाथ कि करिले अवला वधिले वुझि हे प्रानेते ॥ १८ ॥

आदरे आदरे भालो तो छिले । जे तोमार अनुगत तार कि करिले ॥ नव जलधर तुमि, तृषित चातकि आमी ओहे प्रान नाथ कोथा वारी विन्दू बरषिले ॥ प्रानप्रिय प्रान धन, वल जातना एमन । चन्द्रिका हृदय केन गो दिले ॥ १९ ॥

ओहे हरि जगतेर पति । दया कर दया मय अमि दीन हीन अति ॥ लए छे शरण चरणे जे जन, रुष्ट कि कारण ताहार प्रति । नाम दयाकर जगत भीतर कि हवे आमार वलगो गति ॥ २० ॥

आशाय आशाय भालो जातना दिले । जाओ तथा गुनमनि जथा निशी पोहाइले ॥ से धनि तोमार धनि तुमि तार प्रेमे रिणी, वाधां आछ गुनमनी तबे हेथा केन आसिले ॥ २१ ॥

तोमाय भुलि वके मने। हृदय अंकित छवि अति यतने॥ दिवा निशी मुख देखि हृदय आदरे राखि, प्रान सदा एई वासना मने॥ २२॥

एकबार भाव ओरे मन। शेषेर से दिन तव निकट एखन॥ दिन दिन हीन बल मन हएछे दुर्बल, रोगेर अति प्रबल भए-भीत हएछे जीवन॥ २३॥

एतेक जीवने केन मरन वासनां। बुझि कपालेर दोषे बिधिर विड़म्बना॥ केन रे अबोध मन कर कामना एमन, से दुखि तव कारन बुझि ताहा जानना॥ २४॥

एखनि एमन हवे स्वपने छिलना ज्ञान। ना होते मिलने सुखि आगे ते जाइबे प्रान॥ जन्म जन्मान्तरे जेन पाई प्रान नाथ हेन। विधिर काछे एई मोर शेष अकिंचन॥२५॥

किछु सुख होलो जीवने। प्राननाथ भुलाएछे सेई नवीने॥ आमार अभाव काले

बिरह बेदन ज्वाले । आघात हबे ना तांर कोमल हृदय स्थाने एई भेबे सुख मने ॥२६॥

नव प्रेमे प्रेमि होते कर बासाना । बल बल ओरे प्रान मोरे बलना ॥ एई प्रेमे प्रमि होले मम चिन्ता जाबे चले । ईहातेई जाबे मोर हृदि बेदना ॥ तोमा पाव जन्मा-न्तरे एई आशा हृदे कोरे । प्रान जाबे आर जाबे हृदि जातना ॥ २७ ॥

सेई जे आमाय तोमाय छिल कथा मने आछे कि ना आछे बल । सेई जे छिल जत भाल वासा मने आछे कि ना आछे बल ॥ कत कत छिल मने आशा कत छिल हृदे भालो वासा । सेशे होलो आशाय नैराशा मने आछे कि ना आछे बल ॥ सेई जे प्रेम प्रेम करि कईते कथा से प्रेम रईल एखन कोथा । हृदये दिएछ कतेक व्यथा मने आछे कि ना आछे बल ॥ तुमि हेकि किछुई जानना मम मने आछे सब बेदना । आमि

हृदय पेएछि व्याथा नाना मने आछे कि ना आछे बल ॥ दिए छिल कत चन्द्रिका वाधा ओहे चन्द्र तव प्रेमे बाधा । आछे मन प्रान सब साधा मने आछे कि ना आछे बल ॥२८॥

हेरिब सतत सखी कालई वरन । मने पड़े जेन सदा से नील रतन ॥ मृगमद दिब सिरे कज्जल नयन तीरे । नित्य नील वर्ण चीरे आच्छादिव तन ॥ हरिश्चन्द्र सुख सदा कृष्ण नामे आछे साधा । से पेमे अंतर बांधा कृष्ण पदे आछे मन ॥ २९ ॥

जाओ ओहे गुनमनि ए कि काज करिले । आमार प्रानेर छबि काड़िते बसिले ॥ ममाधिक प्रानप्रिय के आछे तोमार प्रिय । आमार भाल वासा छवि कारे दिते निए छिले ॥ चंद्रिका बले बलना केन करहे छलना । रचित छबि ते मम तुमि केन हाथ दिले ॥ ३० ॥

राखो हे प्रानेश ए प्रेम करिया जतन ।

तोमाय करेछि समर्पन ॥ जत दिन रबे प्रान श्रीचरने दिओ स्थान। हरिश्चन्द्र प्रान धन एई आकिंचन ॥ चंद्रिका हृदय धन नाहिक तोमा बिहन। तब केरेते अपने करेछि जीवन मन ॥ ३१ ॥

थाकिते जीवन मम नाथ ए कि करिले। आमार आशार प्रेम कारे तुमि दान दिले ॥ चन्द्रिका हृदयमन तब करे समर्पन। तार हृदि हरिधन कारे प्राण दिते नीले ॥३२॥

आमाय भालो बेशे आर तोमार काज नाई। तुमि अन्य प्रानज्वले आमाय भालो बास बोले ॥ सदा भासि आंखि जले हृदे नाना दुःख पाई ॥ बिदाय दाबो गुनमनी सजब एबे सन्यासिनी। हब नाथ बिदेशिनी सुख पथे दिया छाई ॥ हरिश्चन्द्र प्रानधन चन्द्रिकार निवेदन। बासना एमन मन बिदेशेते प्रान जाई ॥ ३३ ॥

ए प्रेम राखिते केन करिछ जतनो रे।

सेई प्रेम राखा गिया जथा बान्धा मनोरे ॥
सेई बिनोदिनी धनि तुमि तार प्रेमेरिणी ।
बांधा आछो गुनमनि ताहारई प्रेमडोरे ॥
छाड़ो एई प्रेम आशा जानागेलभालोबासा ।
हृदय सब नैराशा चन्द्रिकार एखनोरे ॥३४॥
मिछा केन दिते आश प्रेमेर परिचय ।
सतीनेर छबि आंकि आपन हृदय ॥ प्रेम
कथा बलि प्रान कोरो ना आर जालातन ।
राखगिया प्रानधन तांहार जा आन्ना हय ॥
हरिश्चन्द्र प्रानपति तुमिरे निर्दय अति ।
चन्द्रिकार नाहि गति जानिनु निश्चय ॥३५॥
आज आमार होलो सुप्रभा । नवीन वत्सरे
पद दिल प्राननाथ ॥ ओ वत्सरे दिन हेन
बिधि पुनः देन जेन । धरे ए बासना मन
पुर्ण करे जगन्नाथ ॥ ३६ ॥
आज किबा सुखि होलो जीवन । बेंचे
छिले ताई जीवन पाईले दिन एमन ।
प्राननाथेर जन्म दिनं दिल दरसन ॥ देख

चन्द्रिकार आजकिबा सुख हृदि माझ ।
आनन्देर आज साज सेजेछे मन ॥ ३७ ॥

कि आनन्देर दिन आज हेरिनु नयने ।
ईहार समान दिन नहिक ए भुवने ॥ हरि-
श्चन्द्र प्रानपति आज तार जन्मतिथि । बिधि
सुख दिल अति आजि चन्द्रिका मने ॥३८॥

एई दिन पुनः हेरि मने बासना ॥ नबीन
वत्सरे आई पद दिले हृदिराज । तारे सुखे
राखुन प्रभु एई कामना ॥ पुनः एई दिन
हेरी एकांत बासना करी । चन्द्रिका हृदय
आज सुख उपजिल नाना ॥ ३९ ॥

शुनियाछि तब कृपा पतित गामिनी ।
पाइबे कोथाये तबे पतित आमार तुल्य पाप
मात्र कर्म जार दिवस जामिनी ॥ सर्बस्व
स्वरूप जार मिथ्याचार व्यवहार हिंसा छल
द्यूत मद्य मांस ओ कामिनी ॥ ४० ॥

निभृत निशीथे सई ओ बांशी बाजिल ।
पूरित करिया बन भेदिया गगन घन ।

জকাং পাইয়া সমীরন মধুর বনে গাজিল ।
স্তম্ভিত প্রবাহ নীর তাড়িত ময়ূর কীর ।
ঝংকারিয়াং তরুগণ এক তান সাজিল ॥
হরিশ্চন্দ্র শ্যাম বাঁশী স্বর কামদেব ফাঁসী ।
কূলবধু সুনিয়াই আর্যপথ ত্যাজিল ॥ ৪১ ॥

কোথায় আছ ওহে প্রিয় অবলা জীবন ।
প্রানধন শ্যাম ঘন ॥ নব নীল বর্ণ তন
পূর্ণচন্দ্রনিভানন । কূজিত বংশিকাস্বন
প্রসন্নবদন ॥ কর দুঃখবিনাশন ওহে
গোপিকারমন । আশিয়া শ্রীবৃন্দা দাও
দরশন ॥ হরিশ্চন্দ্র নিবেদন সুনদিয়া কিছু
মন। ওই পদে সমর্পণ আছে গো জীবন॥৪২॥

সই মজালে মজালে শ্যাম মজালে
আমায় । সতত বাঁশীর ধ্বনি করে মোরে
পাগলিনী । সই কাঁদালে কাঁদালে শ্যাম
কাঁদালে আমায় ॥ বাঁশীতে গহন বনে ডাকে
কালা ঘনে ঘনে । সই মতালে মতালে শ্যাম
মতালে আমায় ॥ ৪৩ ॥

केह जाओ गो जाओ मधुपूरिते। बुझाइए सेई प्रानेर श्यामे आनिते ॥ बलगिया प्रान-धने राधा जे बांचे ना प्राने। तोमार विच्छेद बान नाहि पारे सहिते ॥ ४४ ॥

मदन मोहन मधुसुदन दयामय ॥ बलि शुन गुनमनि सेथा राधा विनोदिनी। बिरहे व्याकुल धनि चल गो तराय ॥ ४५ ॥

ओहे श्याम आछे कि आर आमाय मने। सुन हे श्याम त्रिभंग दिया ए प्रनय भंग ॥ सेथाय कुबजा संग भूले ए दूःखिनी जने। सुन हरि प्रानधन आमार ए निवेदन। आर कि ओहे दर्शन दिबे नाए बृन्दाबने ॥ ४६ ॥

गजल।

तेरी सूरत सुझे भाई मेरा जी जानता है। जो झलक तूने दिखाई मेरा जी जानता है ॥ परि जालिम तेरे इस तीरे निगह से हमने। चोट जैसी कि है खाई मेरा जी जानता है ॥ खायँगे जहर नहीं